हज़रत ईसा और ईसाई धर्म

हज़रत ईसा और ईसाई धर्म

सुन्दरलाल

विश्ववाणी कार्यालय, इलाहाबाद
१९४५

प्रकाशक : विश्ववाणी कार्यालय, इलाहाबाद

मुद्रक : विश्वम्भरनाथ, विश्ववाणी प्रेस, इलाहाबाद

हज़रत ईसा और ईसाई धर्म

दो बातें

हज़रत ईसा दुनिया की उन महान से महान आत्माओ, उन बड़ी से बड़ी रूहों मे से थे जो सैकड़ो और कभी कभी हज़ारो बरस के बाद दुनिया के लोगों को धर्म, मज़हब, सचाई और अपनी असली और टिकाऊ भलाई का रास्ता दिखाने के लिये अलग अलग देशों मे जन्म लेते रहे हैं। राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, ज़रथुस्त्र, इब्राहीम, मूसा, कन्फ्यूसिअस, लाओत्ज़े, इखनातन, और मोहम्मद सब इसी तरह की महान आत्मा थे। अलग अलग देशों और अलग अलग ज़मानो के लोग इन्हें अपने अपने ढङ्ग से अवतार, पैग़म्बर, तीर्थङ्कर जैसे अलग अलग नामो से पुकारते रहे है।

इस तरह के बड़े लोग मोटे तौर पर दो तरह के होते हैं। जिस ज़माने मे जैसी ज़रूरत होती है वैसा ही रास्ता बताने वाले का ढङ्ग होता है। इनमें से एक की मिसाल ताड़ के पेड़ से दी जा सकती है और दूसरे की बड़ के पेड़ से। ताड़ के साये में बहुत ही कम लोग बैठ सकते हैं, लेकिन ताड़ मीलो दूर से मुसाफिर को ठीक रास्ता बता देता है, और बहुत

बार गलत रास्ते और बरबादी से बचा लेता है। बड़ का पेड़ इतनी ज्यादा दूर से तो दिखाई नही देता लेकिन फिर भी राह-गीर को बहुत बड़ी मदद देता है और सैकड़ो और हजारो थके मांदे उसके साये मे आराम पाते हैं। हज़रत ईसा इनमे से पहले ढङ्ग के रास्ता दिखाने वाले थे।

मोटे तौर पर हज़रत ईसा की तालीम का निचोड यूँ बयान किया जा सकता है—

ईश्वर अल्लाह एक है। वह हम सब का 'बाप' है। हम सब उसके बच्चे हैं। इस नाते से हम सब भाई बहिन हैं। हमे इसी तरह एक दूसरे से बरतना चाहिये। अपनी ख़ुदी को मिटाना, अपने आपे को जीतना, सब से प्रेम करना, दूसरो की सेवा मे अपना बड़प्पन समझना, किसी को अपने से छोटा न मानना, किसी से ज़रा सी भी नफरत न करना और अपने खयाल से, अपने बोल से या अपने किसी काम से किसी को ज़रा सी भी तक्लीफ़ न पहुँचाना यही हज़रत ईसा के उपदेशो का निचोड़ है। दूसरों के लिए यहाँ तक कि बुरे ज़ालिम और पापी समझे जाने वालों के लिए अपने ऊपर मुसीबतें झेल कर रित रित कर जान दे देना उनकी निगाह मे सब में बढ़कर, सब से ऊँची और सब से प्यारी मौत है। हज़रत ईसा का मशहूर उपदेश है कि 'अगर कोई तुम्हें एक मील जबरदस्ती ले जाना चाहे तो तुम उसके साथ दो मील जाओ, अगर कोई तुम्हारा कोट मांगे तो तुम उसे अपना कुरता भी दे दो, कोई तुम्हारे एक गाल पर चपत मारे

तो तुम प्रेम से दूसरा गाल भी उसके सामने कर दो।"

आज दुनिया मे लगभग साठ करोड़ आदमी अपने को ईसाई धर्म के मानने वाले कहते हैं। लेकिन इन साठ करोड़ मे शायद साठ भी हज़रत ईसा की इस नसीहत पर अमल करने वाले न मिल सकेंगे। पिछले दो हज़ार बरस के अन्दर ईसाई मठो और खानकाहों मे रहने वाले थोड़े से इनेगिने साधू महन्तो को छोड़ कर शायद बिरले ही ऐसे रहे होगे जिन्होने हज़रत ईसा के इन उपदेशों को जीवन मे अमल करने की चीज़ बनाया हो। यूरोप और अमरीका की आज करीब क़रीब सौ फी सदी आबादी ईसाई है। लेकिन वहां का एक एक देश आज हज़रत ईसा के उपदेशों के ठीक उलटा चल रहा है और इसी को ठीक समझता है। ज़ाहिर है कि हज़रत ईसा की तालीम दुनिया के ईसाइयों की निगाह मे अमल कर सकने की चीज़ नहीं है। दूसरे धर्म मज़हबों के सोचने समझने वाले लोग भी ज्यादातर इसी ख़याल के हैं।

दूसरी तरफ आज कल हीं की दुनिया को ध्यान से देखने पर हमे पता चलता है कि शायद हज़रत ईसा की दी हुई तालीम इतनी ग़लत या इतनी निकम्मी न थी। यह भी पता चलता है कि मानव जाति इन्सानी क़ौम के ऊपर वह तालीम 'जंगल में रोना' ही साबित नहीं हुई। आज से पचास साल पहिले लियो टाल्सटाय जैसे विद्वानों ने और अभी हाल मे रेडाल्फ हक्सले जैसे सोचने समझने वालों ने दुनिया को फिर वही

पुराना रास्ता दिखाने की कोशिश की है। सन् १९१४-१९१८ की जंग में यूरोप भर के अन्दर जंग के खिलाफ़ आवाज़ उठाकर जेल जाने वालों की तादाद लाखों तक पहुंची थी। अकेले इङ्गलैण्ड में इस तरह के लोगों की तादाद एक वक्त ४५,००० से ऊपर बताई जाती थी। यूरोप के अच्छे से अच्छे सोचने वाले इस बात को महसूस कर रहे हैं कि उनका आज कल का रास्ता गलत है और उन्हें किसी दूसरे रास्ते की तरफ चलना चाहिये। बड़ी से बड़ी फौजी ताकत के खिलाफ़ आत्मबल या रूहानी ताकत से काम लेने के तजरबे पिछले सौ डेढ़ सौ बरस के अन्दर यूरोप में भी हुए हैं। हिन्दुस्तान में महात्मा गान्धी ने राज काज जैसे टेढ़े मैदान के अन्दर अहिंसा यानी अदम तशद्दुद के उसूल को जारी करके एक बार दुनिया भर का ध्यान अपनी तरफ़ खींच लिया है। ज़ाहिर है कि इस वक्त की भटकी हुई दुनिया किसी नए रास्ते की खोज में है। बहुत मुमकिन है कि हज़रत ईसा के दो हज़ार बरस पुराने उपदेशों में जिन्हें इतने दिनों तक दुनिया के ज़्यादातर नेताओं ने निकम्मा समझ कर छोड़ रखा था अब दुनिया को नए और ठीक रास्ते का अता पता मिले।

अगर हम पिछले हज़ारों और लाखों बरस के अन्दर आदमी के विकास, उन्नति, तरक्की, उसके आगे बढ़ते रहने को ध्यान में देखें तो इसमें कुछ भी शक नहीं रह जाता कि आदमी पहले कुटुम्ब खानदान के अन्दर, फिर कबीले बिरादरी के अन्दर, फिर गांव कस्बे शहर के अन्दर, और अब धीरे धीरे

मुल्क और मुल्कों के आपसी बर्ताव के अन्दर पराये से अपने-पन की तरफ, नफरत से प्रेम की तरफ, जिस्मानी यानी शारीरिक ताक़त के इस्तेमाल से इख़लाकी नैतिक समझौते की तरफ और हिंसा तशद्दुद से अहिंसा अदमतशद्दुद की तरफ बढ़ता रहा है।

हम सिर्फ एक छोटी सी मिसाल देंगे। डेढ़ सौ दो सौ बरस पहिले तक यूरोप की बड़ी बड़ी कौन्सिलों, एसेम्बलियों और पार्लिमेण्टों मे जब कभी दो आदमी दो राय के होते थे तो किसकी राय ठीक है यह तय करने के लिए वे अकसर कुश्ती का तरीक़ा काम में लाते थे जिसे 'डुअेल' कहते थे। जो जीत जाता था उसी की राय ठीक मानली जाती थी। आज यह चीज़ हँसी की चीज़ समझी जाती है। एक एक देश के अन्दर हज़ारों और लाखो आपसी झगड़े जो पहिले इन्हीं ढङ्गों से तय किए जाते थे अब अमन के साथ अदालतों मे तय किये जाते हैं। कोई वजह मालूम नहीं होती कि आगे चलकर कौमो कौमो और मुल्को मुल्कों के बीच के झगड़े भी इसी तरह अमन के साथ तय न हो सकें। जिस तरह पिछले पाठ आदमी ने सैकड़ो बरस के कड़वे तजरबो से सीखे हैं उसी तरह आज दुनिया अपने अब तक के सब से कड़वे तजरबे से नया सबक सीखने की कोशिश कर रही है।

हमें नहीं मालूम कि इस दुखी धरती पर कभी वह दिन आयेगा या नहीं जिसे हज़रत ईसा ने 'गाड्स किंगडम आन

अर्थ', 'राम राज्य' या 'हकूमते इलाही' कह कर पुकारा है लेकिन इसमें शक नही कि आदमी ज्यू त्यू कर इस सबक को सीखता जा रहा है कि ख़ुदी, स्वार्थ की निस्बत सब के भले का रास्ता, नफ़रत के मुकाबले मे प्रेम का रास्ता, आपाधापी के मुकाबले मे एक दूसरे का हाथ बटाने का रास्ता और हिंसा तशद्दुद के मुकाबले मे अहिंसा अदम तशद्दुद का रास्ता उसके लिये ज़्यादा भलाई का रास्ता है।

हज़रत ईसा की प्रेम और अहिंसा की तालीम भी कोई नई या अनोखी तालीम नही है। थोड़े बहुत ऊपरी फरक के होते हुए भी दुनिया के सब धर्म मजहब और सब अवतार पैगम्बर, तीर्थङ्कर हमे एक ही तालीम देते रहे हैं। इन सब धर्म मज़हबो की ख़ास ख़ास किताबें भी बहुत दर्जे तक एक दूसरे की गूंज हैं और दुनिया को एक ही पाठ पढ़ाती हैं। हज़रत मूसा के मशहूर दस हुकुमो मे से, जो यहूदी धर्म की बुनियाद हैं, सब से पहिला हुकुम यह है—"किसी की जान न लेना"। इसमे किसी शर्त्त का सवाल नही है। महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी के उपदेश हज़रत ईसा के उपदेशो से इतने ज्यादा मिलते हुए हैं कि सारी दुनिया इन तीनो को एक बराबर अहिंसा का प्रचारक मानती है। महात्मा ज़रथुस्त्र के उपदेशों में भी इसी तरह की चीज़ें भरी हुई मिलेंगी। ऊपरी निगाह से देखने में दो मज़हबी किताबें हैं गीता और क़ुरान जो ख़ास हालतों मे हथियार उठाने की इजाज़त देती हैं। लेकिन यह निगाह सिर्फ ऊपरी निगाह है।

गीता के बारे मे बहुत से विद्वानो की राय है और हमेशा से चली आई है कि गीता मे लड़ाई का बयान सिर्फ एक रूपक या मिसाल के तौर पर है और उस किताब के अन्दर कौरवों और पाण्डवों की लड़ाई से मतलब आदमी के दिल के अन्दर की भलाई और बुराई की ताकतो की लड़ाई से है। इसे छोड़ कर भी गीता के अन्दर अहिंसा (१६-२) को सब से ऊँचा धर्म बता कर उसकी जगह जगह तारीफ की गई है। गीता बार बार कहती है कि आदमी को हमेशा 'सब का भला चाहना चाहिये' (३-२५), 'कभी किसी के साथ भी दुशमनी नहीं करनी चाहिये' (११-५५) और हमेशा 'सब के भले के काम मे लगे रहना चाहिये' (५-२५,१२-४)।

फ़िलिस्तीन मे उपदेश देने का हज़रत ईसा का कुल ज़माना ३ साल से ज्यादा नही गिना जाता। हज़रत मुहम्मद ने अपना उपदेश शुरू करने के १३ साल बाद तक कभी दूसरे के हमले के जवाब मे भी हथियार उठाने की किसी को इजाज़त नही दी। उनके उपदेशों मे इस तरह की चीज़ें भरी हुई है—

अहमद ने पूछा "ईमान क्या है?" पैग़म्बर ने जवाब दिया—"सब्र करना और दूसरो की भलाई करना।"

किसी ने पूछा "मोमिन यानी ईमान वाला कौन है?" जवाब मिला "मोमिन वह है जिसके हाथों मे सब आदमी अपनी जान और माल को सौंप कर बेखटके रहें।" (बुख़ारी)।

"अगर मोमिन होना चाहता है तो अपने पड़ोसी का भला कर

और अगर मुस्लिम होना चाहता है तो जो कुछ अपने लिए अच्छा समझता है वही सब के लिए अच्छा समझ।" [तिरमिज़ी]।

"ताक़तवर वह नहीं है जो दूसरों को नीचे गिरा दे, हममें ताक़तवर वह है जो अपने ग़ुस्से को क़ाबू में रखता है" (बुख़ारी)।

मुहम्मद साहब की तलवार की मूठ पर यह शब्द खुदे हुए थे—

"जो तेरे साथ बेइन्साफ़ी करे उसे तू माफ़ कर दे, जो तुझे अपने से अलग करदे उससे मेल कर, जो तेरे साथ बुराई करे उसके साथ तू भलाई कर..." (रज़ीन)।

यह एक मशहूर बात है कि मुहम्मद साहब ने अपनी जिन्दगी भर कभी भी किसी पर तलवार या कोई हथियार नहीं चलाया।

क़ुरान मे भी इस तरह की आयतें भरी हुई हैं—

"अगर तुम्हें कोई दुःख पहुँचावे तो तुम उसने उतना ही बदला ले सकते हो, यानी जो उसने तुम्हारे साथ किया उससे ज़्यादा तुम उसके साथ हरगिज़ न करो। लेकिन अगर तुम सब्र के साथ बरदाश्त कर जाओ तो सचमुच सब्र करने वालों को सब से अच्छा फल मिलेगा। इसलिए सब्र ही करो। अल्लाह की मदद से ही तुम सब्र कर सकोगे, दूसरों की फ़िक्र मत करो। तुम इस फ़िक्र में मत पड़ो कि दूसरे क्या सोच रहे हैं। सचमुच अल्लाह उन्हीं के साथ है जो बुराई से बचते हैं, और सब के साथ भलाई करते हैं।" (१६ १२६ से १२८)।

"बुराई और भलाई बराबर नहीं हो सकतीं, बुराई का बदला भलाई से दो, और तुम देखोगे कि जिसे तुमसे दुश्मनी थी वह भी तुम्हारा गहरा दोस्त हो जायगा"। (४१-३४)।

"बुराई का बदला भलाई से दो" (२३·९६)।

सच यह है कि दुनिया के सब बड़े बड़े धर्म मज़हबों और सब मज़हबी किताबो के बुनियादी उसूल एक है। फ़रक ज़्यादातर सिर्फ ऊपर के कर्म काण्डो और पूजा के तरीको मे है या उन छोटी छोटी बातो में है जो देश और काल, मुल्क और ज़माने के साथ साथ बदलती रही हैं। हिन्दुस्तान में या किसी भी देश मे मज़हब के नाम पर झगड़ों की वजह सिर्फ़ यह है कि हम अपने अपने मज़हबो के बुनियादी उसूलो पर इतना ज़ोर नही देते जितना ऊपर के रीत रिवाजो और दूसरी छोटी छोटी बातो पर। इसीलिए सब से ज़्यादा ज़रूरी यह है कि हम हमदर्दी के साथ एक दूसरे के मज़हबों को समझें और एक दूसरे के पैग़म्बरो, अवतारो और तीर्थङ्करो की दिल से क़द्र करना सीखें।

ख़ुश किस्मती से हमारे देश में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी वग़ैरह सब मज़हबो के लोग मौजूद हैं। यह मुल्क सब का एक बराबर मुल्क है। इसीलिए हमारे लिए एक दूसरे के मज़हबो और मज़हब के क़ायम करने वालो को ठीक ठीक समझना और भी ज़्यादा ज़रूरी है। अगर उस परमात्मा ने जो सब का ईश्वर, अल्लाह, गॉड है, चाहा तो इसी तरह हम

सब अलग अलग धर्मों को मिलाकर उस एक मानव धर्म, उस एक मज़हबे इन्सानियत की बुनियाद अपने देश में रख सकेंगे जिसकी दुनिया इस वक़्त बाट जोह रही है। फिर न हज़रत ईसा सिर्फ़ ईसाइयों के रह जायेंगे और न हज़रत मुहम्मद सिर्फ़ मुसलमानों के, और न श्री कृष्ण सिर्फ़ हिन्दुओं के। ये और इस तरह की सब महान आत्माएं उस दिन सचमुच दुनिया भर के सब आदमियों की बपौती और दुनिया भर के लिये बरकत दिखाई देंगी। उस शुभ घड़ी के आने की तय्यारी के तौर पर यह छोटी सी किताब पढ़ने वालों की भेंट की जाती है।

किताब का असली हिस्सा कई महीने से छपकर पड़ा हुआ था। भूमिका के न मिलने और लेखक के इलाहाबाद से बाहर रहने की वजह से इसके निकलने में देरी हुई।

५६ चक, इलाहाबाद
१०-२-४५

सुन्दरलाल
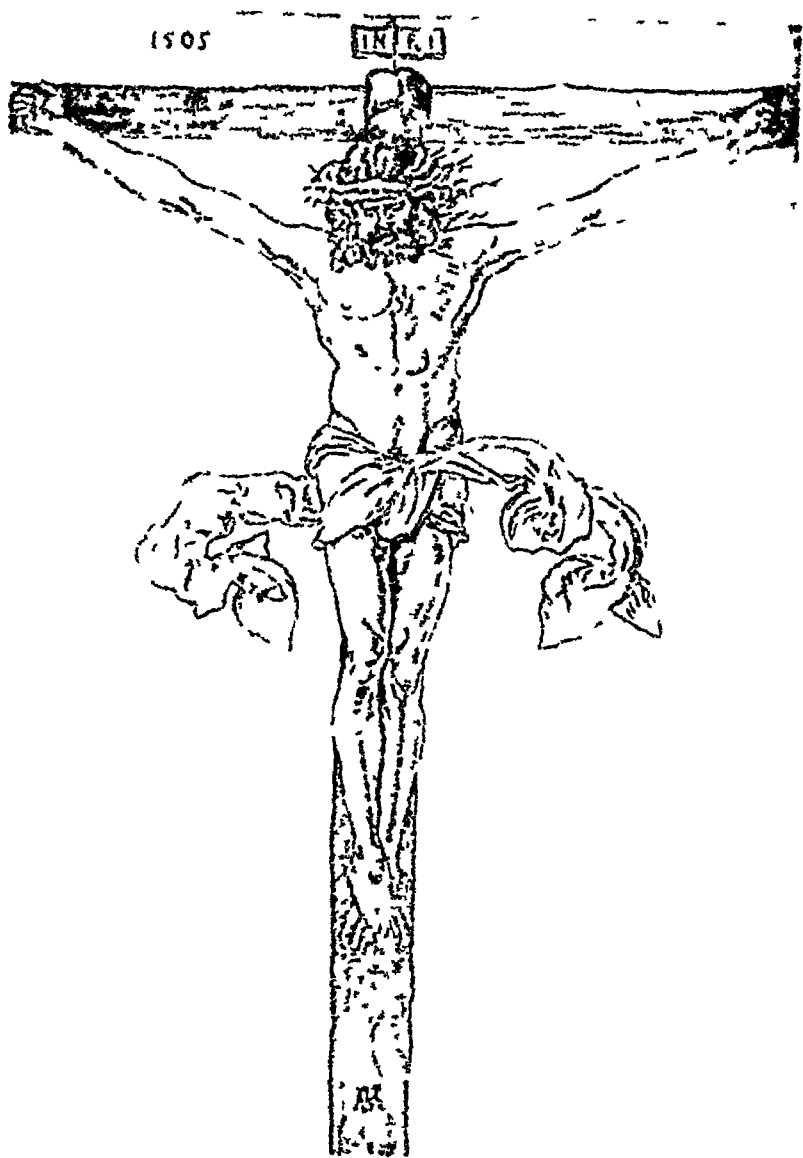
हज़रत ईसा से पहले

जब से आदमी के कामो का पता चलता है तब से आज तक धर्म और कलचर की बहुत सी जबरदस्त लहरें एशिया के कई देशो से उठकर यूरोप और बाकी पच्छिमी दुनिया को बार बार सर सब्ज करती रही है और वहाँ की करोड़ो आत्माओ को नया जीवन देती रही हैं।* ईसाई धर्म भी इन्हीं एशियाई लहरो मे से एक था। इस धर्म के कायम करने वाले हज़रत ईसा एशिया की उन महान आत्माओं में से थे जिनकी ज़िन्दगी और जिनके उपदेशो का बाद की दुनिया के ऊपर बहुत गहरा और टिकाऊ असर पड़ा।

ईसा फिलिस्तीन के रहने वाले थे। वे एक यहूदी घराने में पैदा हुए थे। ईसाई धर्म शुरू में यहूदी धर्म की ही एक शाख था। यहूदी कौम एशिया की एक पुरानी कौम है। यहूदियो के धर्म, उनके समाज और उनके राज काज का सारा इतिहास एशिया के एक दूसरे के बाद ज्यादह फैले हुए और ज्यादह

---

* S. A. C. in Encyclopedia Brittanica, Vol. II, P. 363.

महान आन्दोलनों के साथ गहरा सम्बन्ध रखता है और एशिया के ग्यारह बड़े इतिहास का सिर्फ एक हिस्सा या अध्याय है।

ईसा के कम से कम ढाई तीन हज़ार साल पहले से लेकर दुनिया के धर्म सिखाने, समाज को सुधारने और दुनिया की कलचर को ऊँचा ले जाने की गरज़ से इस तरह की बहुत सी लगातार लहरों का पता चलता है जो चीन, हिन्दुस्तान और ईरान से उठकर इराक, पच्छिम एशिया और मिस्र तक चलती रही और जो बीच में फिलिस्तीन के लोगों के रहन सहन, उनके चलन और उनके खयालों को भी रंग रूप देती रहीं।

मिस्र भी एक बहुत पुराना देश है। हिसाब यानी अंकगणित और ज्योमेट्री यानी रेखागणित जैसी विद्याएं, इमारत बनाने की कला, पुली, घिरनी और लिवर (Liver) का काम में लाना, तरह तरह की दस्तकारियां, यहां तक कि कागज़ और स्याही का बनाना और इस्तेमाल करना मिस्र ही ने यूनान को और यूनान ने सारे यूरोप को सिखलाया। शुरू ही से मिस्र की कल-चर का असर भी फिलिस्तीन पर बराबर पड़ता रहा। इन सब लहरों और फ़िलिस्तीन पर उनके असर का ज़िक्र लेखक की दूसरी किताबों में किया गया है।

ईसा के ज़माने में यहूदियों की हालत

यहूदियों की ज़िन्दगी, उनके राजकाज, उनके समाज उनके रहन सहन, उनके धर्म का पूरा पूरा हाल एक अलग किताब में दिया जा चुका है। यहूदियों की हालत उस वक्त खासी नाज़ुक

थी। राज के मामले मे वे दूसरो के ग़ुलाम थे और उस ग़ुलामी से छुटकारे की कोई उम्मीद दिखाई न देती थी। पढ़े लिखे यहूदियो का यकान ईरान और यूनान की ऊंची ऊंची किताबों को पढ़ने और वहां के विद्वानो से मिलने की वजह से अपने पुराने धर्म की रस्मो पर से हटता जा रहा था। आम जनता भद्दे से भद्दे वहमो और झूठे विश्वासो मे डूबी हुई थी। छुआछूत और खान पान के भेदो मे उस ज़माने के यहूदी आजकल के हिन्दुओ को भी मात करते थे। कोई इख़लाकी बुराई या बदचलनी उनमे उतना वड़ा पाप न समझी जाती थी जितना उनके देवता "याह्वे" की सेवा या पूजा मे किसी छोटी से छोटी रस्म का भी छूट जाना। खेतो की फसल का होना इस बात पर माना जाता था कि मन्दिर मे पूजा की सब रस्मे ठीक पूरी की गईं या नही। जादू टोने, गण्डे तावीज़ का खूब रिवाज था। सनीचर उनके धर्म का ख़ास पाक दिन था, इसलिए सनीचर को आग जलाने के लिए लकड़ियां जमा करना इतना बड़ा पाप था कि उसकी सज़ा मौत थी। दूसरी तरफ रोज़ सैकड़ों जानवरो को काट काट कर हवन कुण्ड में उनकी आहुति देना धर्म का एक ज़रूरी हिस्सा था। पुरोहितो का ज़ोर, उनका सगठन, उनकी धन दौलत, उनकी आराम तलबी, उनकी बदचलनी और उनका ढोग हद को पहुँचे हुए थे।

इस पर भी यहूदियों को यकीन था और बार बार यक़ीन दिलाया जाता था कि यहूदी ही ईश्वर की सब से प्यारी, सब से

बड़ी चढ़ी और सब से पाक कौम है अकेला यहूदी धर्म ही सच्चा धर्म है और राज के मामले मे कभी न कभी कोई न कोई नबी, पैगम्बर या महापुरुष पैदा होकर यहूदियो को विधर्मी ईरानवालो, मिस्रवालो या रोमवालो की हुकूमत से आज़ाद करेगा, दुनिया मे उन्हे सब से ऊँचा बनावेगा, और सारे संसार के लोगो को यहूदी धर्म के झण्डे के नीचे लाकर खड़ा करेगा और उस वक्त चारो तरफ के देशो से लोग नज़रें, चढ़ावे और सामान ले लेकर यरुसलम के यहूदी मन्दिर मे दर्शन और पूजा के लिये जमा हुआ करेंगे। यहूदियो को यह भी यकीन था कि बाकी दुनिया से अपनी अलहदगी को बनाए रख कर ही वे उस दिन को नजदीक ला सकते हैं।

दूसरे देशों की लहरें : (१) चीन में लाओत्जे

थोड़ा पीछे जाकर अब एशिया के दूसरे मुल्कों की उन खास खास धार्मिक और समाजी लहरो पर भी एक नज़र डालना ज़रूरी है, जो फिलिस्तीन पर अपना असर डाले बिना न रह सकती थी और जिन्होने यहूदियों के अन्दर बड़े सुधार की कोशिशों को जन्म दिया और आगे चलकर जिन्होंने ईसाई धर्म को कायम करने मे हिस्सा लिया।

ईसा से ६०४ साल पहले चीन मे मशहूर महात्मा लाओत्जे (Lao-tze) का जन्म हुआ। इसके सदियों पहले से चीन में दर्शन शास्त्र, फलसफे, हिकमत और रूहानियत का प्रचार था। बहुत से ऊँचे दरजे के हकीम और दार्शनिक पैदा हो चुके थे।

सोचने समझने वाले लोगों मे इस तरह की बातों पर काफी बहसें होती रहती थीं। लाओत्ज़े एक सच्चे सन्त और बहुत ऊँचे दरजे के हकीम यानी दार्शनिक थे। उनके उपदेश उनकी मशहूर किताब 'ताओ-ति-किङ्ग' (Tao-ti-king) मे दिये हुये हैं। करीब करीब उन्हीं के शब्दों मे उन उपदेशो का निचोड़ यह है—

"इस बाहर की दुनिया मे जो कुछ दिखाई देता है इस सब के पीछे इसे चलाने वाली एक ताक़त है जो सब जगह मौजूद है, उसका न कोई शुरू है न आख़ीर, उसका कोई रंग रूप नहीं, वह व्यक्तित्व यानी शख़्सीयत से परे है, उसमें ख़ुदी या आपा है। वह एक उसूल के मातहत, एक क़ुदरती यानी स्वाभाविक ढंग से सब जानदारों के ज़्यादह से ज़्यादह भले के लिये लगातार काम करती रहती है। इस ताक़त का नाम 'ताओ' है। इस 'ताओ' से 'यिन' और 'याङ्ग' यानी पुरुष और प्रकृति या नर और मादा दो तत्त्व पैदा हुए, जिनसे सारी दुनिया की रचना हुई। ताओ के मातहत और उसके हुक्म से दुनिया में जितनी बड़ी बड़ी चीजें निकलती, बढ़ती और काम करती हैं, उनमें से कोई एक शब्द भी मुंह से नहीं निकालतीं, किसी को अपने किये का न दावा है और न घमण्ड, न कोई किसी चीज को अपनी समझती है। उनके सब काम सीधे, सरल और क़ुदरती हैं। इसी तरह आदमी को चाहिये कि अपना सब काम ख़ुदी को अलग रखकर एक सरल स्वाभाविक और क़ुदरती ढङ्ग से करे। उसके किसी भी काम में ख़ुदी या अहंकार न हो, न घमंड हो, न अपने पराये, मेरी तेरी का

फ़रक़ हो। आदमी को फिर से "एक छोटा बालक" बनकर ख़ुद अपने ऊपर, अपने नफ़्स के ऊपर क़ाबू हासिल करना चाहिये। इस तरह चलकर आदमी दुनिया में अपने कर्तव्य यानी फ़र्ज़ को पूरा कर सकेगा, और अपनी शुरू की शान्ति, सरलता, भोलेपन और सुख को फिर से हासिल कर लेगा। यही आदमी का 'ताओ' यानी धर्म मार्ग या मज़हब है। सारे समाज को सुन्दर और सुखी बनाने का भी यही तरीक़ा है कि समाज की बाग डोर समाज की हुकूमत, देश का राज इस तरह के सोच समझ कर चलने वाले नेक दिल सन्तों के हाथों में हो जो इसी ख़याल को सामने रखकर अपने कर्तव्य को पूरा करें जिससे लोगों के दिल ख्वाहिशों और कामनाओं के जंजाल से आज़ाद रहें, उनके पेट भरे रहें, उनकी ज़रूरतें कम हों और उनकी हड्डियां मज़बूत हों। यह समाज का 'ताओ' है।"

अपने चलन को नेक और पाक और मन को शान्त रखने पर लाओत्से बहुत ज़ोर देते थे। वह कहते थे कि इन दो बातों से ही आदमी अपने आप सीधे रास्ते पर आ जाता है। दीनता और इनकसार के वह बड़े कायल थे। तीन गुणों को वह सब से बढ़कर मानते थे—(१) सब पर दया करना, (२) कम ख़र्च करना और (३) दूसरों से ऊपर चढ़कर बैठने की चाह न करना। एक जगह वह लिखते हैं—

"ताओ का रास्ता यह है कि आदमी काम करने में अपनी किसी निजी ख्वाहिश को बीच में न आने दे, बिना घबराहट या बेचैनी के एक क़ुदरती ढंग से सब काम करे, खाए लेकिन स्वाद का पता न

हो, बड़े कहलाने वालों को छोटा और छोटों को बड़ा समझे और जो कोई उसके साथ बुराई करे उसकी बुराई का बदला भलाई से दे।"

लाओत्ज़े ईश्वर अल्लाह को सारी दुनिया का चलाने वाला और ताओ' में ताओ' के ज़रिये 'ताओ' से ही कायम यानी जिसमें कभी कोई तब्दीली नहीं होती ख़ुद अपनी ही क़ुदरत में उसी कुदरत से कायम मानते थे। वह प्राणायाम, (हब्सेदम), ध्यान (ज़िक्र), समाधि (तग़रीक़) और रोज़े (व्रत) रखने को अच्छा मानते थे। लेकिन उनकी किताबों में कहीं किसी रूढ़ि पूजा, किसी तरह के रीति रिवाज पर ज़ोर या किसी वहम या अंधी मानता की गन्ध तक नहीं है।*

धरती से मिलकर रहने को यानी खेती करने और किसान की ज़िन्दगी बसर करने को और उसके सीधे सादे सुखों को वह आदमी के लिये सब से अच्छा समझते थे। राज काज में वह ऐसी हुकूमत के ख़िलाफ़ थे जिससे सब ताकत एक के हाथों में आ जावे। आम जनता को वह ज़्यादह से ज़्यादह आज़ादी देने के तरफ़दार थे। वह चाहते थे कि देश का हर गांव अपने भीतर के शासन में पूरी तरह आज़ाद हो, जहाँ तक हो सके अपना सब इन्तज़ाम ख़ुद करे, और सब गांव मिलकर एक दूसरे के साथ प्रेम से रहें। हर गांव एक छोटा सा आज़ाद राज हो। लाओत्ज़े हर तरह के कानूनी और दूसरे ज़बरदस्ती के बन्धनों

---

* J Le, A N. J. W in Encyclopedia Brittanica, Vol.13.

के खिलाफ थे। फौज रखने को वह बहुत बुरा मानते थे और आदमी आदमी के आपसी व्यवहार मे अहिंसा के उसूल पर अमल चाहते थे।

लाओत्जे एक तरह की मुक्ति या निजात मे भी यकीन रखते थे। वह मानते थे कि अपने अन्दर से हर तरह की ख़ुदी और अहंकार को मिटा कर आदमी ध्यान यानी ज़िक्र के ज़रिये अनन्त ईश्वर मे लीन होकर निजात हासिल कर सकता है। वह यह भी मानते थे कि प्राणायाम (हब्सेदम) से आदमी की उमर बेहद बढ़ सकती है। कहा जाता है कि लाओत्जे ख़ुद १६० वर्ष तक जिये। लेकिन उन्होंने कोई अलग धर्म नहीं चलाया। उनके कुछ सदियो बाद उनके उसूल, 'ताओ धर्म' के नाम से, चीन मे एक अलग धर्म बन गये। ईरान, इराक, शाम और यूनान तक एक बार लाओत्जे के विचार ख़ूब फैले और उन्होंने चारों तरफ अपना असर डाला। कुछ लोगों ने दूसरी सदी ईसवी में लाओत्जे के उसूलो पर चीन में एक अलग छोटा सा आज़ाद प्रजातन्त्र राज भी कायम कर लिया। आज तक करोड़ो चीनी अपने देश के महापुरुषों मे लाओत्जे को ऊँची से ऊँची जगह देते हैं।

दूसरे देशों की लहरें : (२) चीन में कुंग-फू-त्जे

सन ५५१ ई० पू० में चीन के अन्दर एक दूसरे महात्मा कुङ्ग-फू-त्ज़े (Kung Fu-tze or Confucious) का जन्म हुआ।

आज तक चीनियो के सोच विचार और उनकी ज़िन्दगी पर जितना टिकाऊ, सुन्दर और अच्छा असर लाओत्ज़े और कुङ्ग-फू-त्ज़े का पड़ा है उतना किसी तीसरे महा पुरुष का नहीं पड़ा। महात्मा बुद्ध और उनके कीमती उपदेशो का असर भी इन दोनो चीनी महात्माओ के असर से उतर कर ही मालूम होता है।

लाओत्ज़े जब बूढ़े हो गए थे तो नौजवान कुङ्ग-फू-त्ज़े के साथ उनकी कई बार भेंट हुई। कुङ्ग-फू-त्ज़े को फ़लसफे या दर्शन शास्त्र से ज्यादह प्रेम न था। वह सिर्फ सदाचार यानी सचाई और नेकी पर ज़ोर देते थे और इसको ही धर्म मानते थे। उनका ख़ास उपदेश यह था—

"समाज को यानी सब लोगों को मिला कर सभाले रखना ही ईश्वर अल्लाह के हुकुम को मानना है। यही ईश्वर का हुकुम है। समाज पांच ख़ास रिश्तो पर क़ायम है। १-राजा और प्रजा का रिश्ता, २-ख़ाविन्द और बीवी का रिश्ता, ३ बाप और बेटे का रिश्ता, ४-बड़े भाई और छोटे भाई का रिश्ता और ५-दोस्त और दोस्त का रिश्ता। पहले चार मे एक का काम शासन करना और दूसरे का काम हुकुम मानना है। लेकिन यह शासन न्याय और धर्म को निगाह मे रखकर और दूसरे की भलाई की नज़र से ही होना चाहिये। दूसरी तरफ से हुकुम मानना भी न्याय और धर्म को सामने रखकर और सच्चे दिल के साथ होना चाहिये। दोस्तों में दोनों की कोशिश हमेशा यही होनी चाहिये कि एक दूसरे को ज़्यादह नेक बनावें।"

कुङ्ग-फ़ू-त्जे का खास उसूल यह है कि हर आदमी की अन्तरात्मा, उसकी जमीर यानी उसका अन्दर का असली स्वभाव पूरी तरह नेकी ही की तरफ़ जाता है, इसलिये हर आदमी अपने अन्दर से ही अपना रास्ता बताने वाला ढूंढ सकता है। जहाँ तक पता चलता है कुङ्ग-फ़ू-त्जे दुनिया मे पहला आदमी था जिसने आपसी व्यवहार के इस सुनहरे उसूल को दुनिया के सामने रखा—"जो बात तुम अपने साथ किया जाना पसन्द नही करते वह कभी किसी दूसरे के साथ भी न करो।" चीनी कौम हमेशा से मछली और चिड़ियां मारती और खाती रही है। लेकिन लिखा है कि कुङ्ग फ़ू-त्जे ने सारी उमर न कभी डाल पर बैठी हुई किसी चिडिया को मारा और न मछली पकड़ने के लिये जाल डाला।

कुङ्ग-फ़ू-त्जे कहता है—"आदमी की आत्मा ईश्वर परमात्मा का ही एक हिस्सा है। इसलिये बेरोक टोक अपनी अन्तरात्मा की आवाज़ पर चलना ही ईश्वर अल्लाह का हुकुम मानना है।" एक बार उससे पूछा गया समझदारी क्या है? उसने जवाब दिया—"पूरे दिल के साथ सब लोगो की तरफ़ अपने फ़र्ज़ को पूरा करने में अपने को लगाए रखना, और देवताओं और पितरो की मन में इज्ज़त करते हुए उनसे अलग और बेलाग रहना इसी का नाम समझदारी हो सकता है।"

फिर पूछा गया देवताओं और पितरों की सेवा कैसे की जावे? जवाब मिला "जब तक तुम आदमियो की सेवा पूरी

नहीं कर सकते, देवो और पितरो की सेवा कैसे कर सकते हो ?"

पूछा गया मौत क्या है ? जवाब मिला—"जब तक तुम यह नही जानते ज़िन्दगी क्या है, तुम मौत को कैसे जान सकते हो ?"

कुङ्ग-फू-त्ज़े कहता था—"मैंने कोई नई सचाई नहीं गढ़ी, मै सिर्फ पुरानी सचाइयो की तरफ़ फिर से तुम्हारा ध्यान दिला रहा हूँ।"

कुङ्ग-फू-त्ज़े ईश्वर अल्लाह को मानता था, लेकिन मरते वक़्त भी उसने किसी तरह की दुआ प्रार्थना नहीं की और न चेहरे पर उस वक़्त किसी तरह का शक या डर दिखाई दिया। चीनी जनता को आज तक कुङ्ग फू-त्ज़े की सैकड़ो कहावतें उसी तरह याद हैं जिस तरह बहुत से हिन्दुस्तानियो को कबीर की। और उनके जीवन पर उन कहावतो का बहुत ही अच्छा असर पड़ता रहा है।

लाओत्ज़े की तरह कुङ्ग-फू-त्ज़े का असर भी कम से कम यूनान तक पहुँचा। कुङ्ग-फू-त्ज़े और यूनान का मशहूर फिलासफर पिथागोर (पाइथेगोरस) दोनों का एक ही ज़माना था। पिथागोर ने मिस्र का और एशिया के बहुत से देशो का सफर किया था। दर्शन शास्त्र यानी फिलासफी पर पिथागोर की एक मशहूर किताब "दी एलीमेण्ट्स आफ नम्बर्स ऐण्ड दी एलीमेण्ट्स आफ़ रिआलिटी" के कई हिस्से ऐसे है कि

जिनका एक एक शब्द पुरानी चीनी किताब 'ची-किंग' से मिलता है। चीनी किताब 'ची किंग' ईसा से तीन हज़ार साल पहले की लिखी है। कुङ्ग-फू-त्ज़े उस किताब को सब किताबों से ज़्यादा प्यार करता था। कुङ्ग फू-त्ज़े ने ही उस इतनी पुरानी चीनी किताब की तरफ़ पिथागोर का ध्यान दिलाया और उसमें उसका प्रेम पैदा कराया।

दूसरे देशों की लहरें : (३) हिन्दुस्तान में बुद्ध

हिन्दुस्तान के पुराने इतिहास की तारीखें अभी तक ठीक ठीक तय नहीं हैं। महात्मा बुद्ध का ज़माना आम तौर पर चीनी महात्मा लाओत्ज़े का ज़माना और उनका जन्म ६२३ ई० पू० यानी लाओत्ज़े के जन्म से १९ साल पहले का माना जाता है। कुछ विद्वानों की राय है कि बुद्ध का ज़माना इससे भी एक हज़ार साल या कुछ और पहले का था। जो हो, लेकिन जिस तेज़ी के साथ बौद्ध धर्म दक्खिनी एशिया, पूर्वी एशिया और एशिया के बीच के हिस्से को जीतकर शान्ति के साथ पच्छिम की तरफ़ बढ़कर एक बार सारे रोमी साम्राज्य में फैल गया उस तेज़ी के साथ और उतनी दूर तक दुनिया के किसी दूसरे धर्म के इस तरह फैलने की मिसाल नहीं मिलती। हिन्दुस्तान, चीन और जापान के बीच में उन दिनों काफ़ी आना जाना था। इसलिये यह नामुमकिन है कि हिन्दुस्तानी बौद्ध उपदेशकों के चीन पहुँचने से सदियों पहले महात्मा बुद्ध ही के ज़माने में उनके उपदेशों की खबर चीन तक न पहुँची

हो। थोड़े दिनो के अन्दर लाओ-त्ज़े और कुङ्ग फू-त्ज़े के उपदेश और उसूल भी बौद्ध धर्म के विचारों, उसूलों और रीति रिवाजो मे रग गए। ये तीनो धर्म एक दूसरे मे इतने ज़्यादह मिल जुल गए कि आज तक हर चीनी अपने को बौद्ध धर्म और ताओ धर्म दोनो का मानने वाला और कुङ्ग-फू-त्ज़े का चेला, तीनो एक साथ समझता और कहता है।

महात्मा बुद्ध से सदियो पहले वैदिक धर्म मे उपनिषद लिखे जा चुके थे। उपनिषद दुनिया को बता चुके थे कि सब देवी देवता एक ईश्वर अल्लाह ही के अलग अलग गुनो के फ़रज़ी रूप हैं। ईश्वर एक है, वही सब के घट मे मौजूद है, और मुक्ति या निजात का रास्ता किसी तरह के यज्ञ हवन, कर्म काण्ड या रीति रिवाज को पूरा करना नही है। अपनी इन्द्रियो को, अपने नफ़्स को जीतकर ख़ुदी, अहंकार और दुई को मिटाकर सब के अन्दर एक ही आत्मा को देखते हुए, सब का भला चाहते हुए, सब को अपनी तरह समझते हुए आख़ीर में उस घट घट व्यापी बेअन्त ईश्वर मे अपनी आत्मा को लीन यानी फ़ना कर देना ही मुक्ति है। महात्मा बुद्ध के वक़्त तक हिन्दुस्तानी फिर सच्चाई को भूल चुके थे। जाति पाँति, ऊँच नीच, छुआ छूत, बेमाइने रस्म रिवाज और जानवरों की बलि का ज़ोर था और सचाई, नेकी और ईमानदारी को इनके मुक़ाबले मे कम ज़रूरी समझा जाता था। महात्मा बुद्ध ने उपदेश दिया—

सच्चे सुख, ज्ञान और निर्वाण या निजात का रास्ता न इन्द्रियों या ख्वाहिशों के पीछे दौड़ना है और न शरीर को फ़िजूल सुखाना या तकलीफ़ देना है। सच्चा रास्ता इन दोनों के बीच से है। इस रास्ते पर चलने के लिये नीचे लिखी सच्चाइयों को समझ लेना चाहिये। पैदा होना, बूढ़ा होना, बीमार होना, मरना, प्यारी चीज़ों से बिछुड़ना और जो चीज़ें हमें प्यारी नहीं लगतीं उनका मिलना, इन सब से आदमी को दुख होता है। इस दुख की जड़ तृष्णा यानी ख्वाहिश है। इसी से जीव (रूह) को फिर फिर जन्म लेना पड़ता है। इसमें भोगों की ख्वाहिश, स्वर्ग (जन्नत) की ख्वाहिश और ख़ुद अपनी हत्या कर दुनिया से गुम हो जाने की ख्वाहिश, इन तीन ख्वाहिशों में सब ख्वाहिशें आ जाती हैं। ये ख्वाहिशें जीव के लिये रोग की तरह हैं, या ये जीव के रोगी होजाने की वजह से पैदा होती हैं। तृष्णा या ख्वाहिश को पूरी तरह जीत लेना सब दुखों से बच जाना है। तृष्णा को जीतने का तरीका है अष्टांगिक मार्ग पर चलना यानी आठ बातों का करना। यही असली धर्म है। ये आठ बातें ये हैं—

(१) सम्यक दृष्टि (ठीक समझ)—यानी दुख, उसके असली सबब और उसे दूर करने के तरीकों को ठीक ठीक समझ लेना।

(२) सम्यक सङ्कल्प (ठीक इरादा)—यानी इस बात का इरादा करना कि मैं अपने सब काम अनासक्त भाव से यानी मोह, लाग या ख़ुदी को अलग रखकर किसी की हिंसा न करते

हुए यानी किसी को ईज़ा न पहुँचाते हुए और किसी से बैर न रखते हुए करूँगा।

(३) सम्यक वचन (ठीक बात)--यानी झूठ न बोलना, किसी की बुराई न करना, कड़वी बात न कहना और फिज़ूल न बोलना।

(४) सम्यक कर्मन्त (ठीक काम) -यानी किसी जानदार को न मारना, बिना दी हुई चीज़ न लेना और बदचलनी न करना।

(५) सम्यक आजीव (ठीक रोज़ी)—यानी रोज़ी कमाने के बेइन्साफी के तरीक़ो को छोड़कर सच्ची और ईमानदारी की कमाई से गुज़ारा करना।

(६) सम्यक व्यायाम (ठीक मेहनत)—यानी बुरे कामों के न करने और अच्छे कामो के करने का फैसला करना, मेहनत करना, अभ्यास (मश्क) करना और उसके लिये मन को क़ाबू मे करना।

(७) सम्यक स्मृति (ठीक याद)—यानी इस बात को ध्यान मे रखना कि पाख़ाना, पेशाब, बुढ़ापा और मौत शरीर के धर्म है, इसलिये मोह और घबराहट को छोड़कर, लेकिन हमेशा मेहनत करते हुये दुनिया मे रहना।

और (८) सम्यक समाधि—यानी ध्यान करना और चित्त या मन को एकाग्र और यकसू करना जिसमे पहले वितर्क (ग़ौर), विचार (ख़याल), प्रीति (प्रेम), सुख और एकाग्रता (यकसू होना),

ये पांचो बातें रहती हैं। धीरे धीरे वितर्क और विचार गुम हो जाता है। फिर प्रीति भी गुम हो जाती है, आखीर मे सुख भी जाता रहता है और सिर्फ उपेक्षा (बेताल्लुकी) और एकाग्रता रह जाती है।

यह अष्टांगिक मार्ग ही महात्मा बुद्ध के उपदेशो का निचोड़ है।

इस तरह के सवालो का जवाब देने से बुद्ध आम तौर पर इनकार करते थे, जैसे—(१) दुनिया का कोई शुरू था या नही और इसका कोई अन्त होगा या नहीं ? (२) दुनिया का कोई ओर छोर है या नहीं ? (३) जीव (रूह) और शरीर एक है या दो ? और (४) 'तथागत' यानी निजात पाए हुए जीव का मौत के बाद अलग वजूद बना रहता है या नहीं ?

सबके साथ अहिंसा (गैर ईजा रसानी), अपने दुशमनो तक को माफ करना और सब की तरफ मित्र भाव रखना, सब का भला चाहना बौद्ध धर्म के खास उसूल हैं। भलाई बुराई के इन उसूलो का किसी तरह के धार्मिक कर्म काण्ड या रीति रिवाज से कोई लेना देना नहीं है। काम करने में आदमी की नीयत ही धर्म अधर्म की कसौटी है। नीयत ही के मुताबिक सब को अपने अपने काम का नतीजा भोगना होगा। योग यानी सलूक के रास्ते में बुद्ध भगवान को यकीन था। बुद्ध के हुकुम मामूली गृहस्थों के लिये कुछ आसान थे और दूसरों को धर्म का उपदेश देने वाले त्यागी 'भिक्खुओं'

और 'भिक्खुनियों' के लिये ज्यादह कड़े थे। औरत और मर्द दोनों को वह मुक्ति का हकदार मानते थे और दोनो ही को घर बार से अलग रहकर बिना शादी किये दूसरो को धर्म का उपदेश देने का भी हकदार मानते थे। वेदों या किसी भी किताब को वह ईश्वर की बनाई और हमेशा के लिये प्रमाण (सनद) न मानते थे। मूर्ति पूजा, देवी देवताओ की पूजा, जात पाँत, छुआ छूत और ऊँच नीच के वह बिल्कुल खिलाफ़ थे। वह सब आदमियो की बराबरी मे यकीन रखते थे। उनका कहना था कि आदमी अपने जीवन के बारे मे कम से कम इतनी बात समझ ले कि इस दुनिया की ज़िन्दगी और उसके सुखो का बहुत ज्यादह मूल्य न करे और इस तरह से ज़िन्दगी बसर करे कि जिसमे बहुत से बहुत आदमियो को ज्यादह से ज्यादह सुख और कम से कम दुख मिले।* वह कहते थे कि हर तरह की दुई, दुनिया के सुखो की ख्वाहिश और अहंकार इन तीनों से पूरी तरह ऊपर उठकर ही सच्ची शान्ति और उसूली ज्ञान हासिल हो सकता है। बुद्ध इसी को निर्वाण कहते थे। बुद्ध के उपदेशो का निचोड़ उनकी यही गाथा है—

सब्ब पापस्स अकरनम्
कुसलस्स उपसम्पदा
सचित्त परियोदपनम्
एतम् बुद्धानुसासनम्

---

* Alcott's Catachism, p. 30.

यानी कोई पाप न करना, सब की भलाई करना और अपने दिल को साफ़ रखना यही बुद्धो की आज्ञा है। सब बौद्ध गृहस्थो को अहिंसा, सत्य, अस्तेय, सदाचार और मादक द्रव्यो का उपयोग न करना, यानी किसी को तकलीफ़ न देना, सच बोलना, चोरी न करना, बदचलनी न करना और नशे की कोई चीज़ काम मे न लाना इन पाँच बातो की प्रतिज्ञा करनी पडती थी। भिक्खुओ और भिक्खुनियो को यानी उन मर्दों और औरतो को जो दूसरो को धर्म का उपदेश देना चाहते थे इन बातो के अलावा शादी न करने और ज्यादह कड़ी ज़िन्दगी गुजारने का भी वादा करना पडता था। धम्मपद में लिखा है—

"अगर कोई आदमी नासमझी से मेरी बुराई करे तो मैं बदले में अपने बेरोक प्रेम से उसका बचाव ही करूँगा। जितना जितना ही वह मेरी ज्यादह बुराई करेगा उतना ही मैं उसकी ज्यादह भलाई करूंगा।"

चीन से यूनान तक एक सी धार्मिक लहरें

हिन्दुस्तान, चीन और ईरान के ये सब और इसी तरह के दूसरे ख़याल उस वक़्त पूरब से पच्छिम तक तमाम सभ्य दुनिया मे फैलते जा रहे थे।

"सबब चाहे कुछ भी रहा हो आठवीं सदी ई० पू० और उसके बाद की सदियों में चीन से लेकर यूनान तक एक सी ऊँची से ऊँची धार्मिक लहरें उठ रही थीं और ठीक उसी तरह एक साथ उभरती

थीं और एक साथ दबती थीं जिस तरह ज़मीन की सतह के नीचे बार बार एक तरफ से दूसरी तरफ तक वे ज़बरदस्त लहरें उठती और दबती रहती हैं जो ज़मीन के अन्दर की चीज़ों को बनाती और बदलती रहती हैं* ।"

इस मेल जोल की एक बड़ी सुन्दर मिसाल पुराने यूनान का 'ओरफी' मत है। यह मत ईसा से ५०० वर्ष पहले यूनान में मौजूद था और कहा जाता है मिस्र से यूनान आया था। औरफियस नाम का एक फ़र्ज़ी आदमी, जिसका तारीख़ मे पता नही चलता, इस मत का चलाने वाला माना जाता है। यूनानियो का कहना है कि औरफियस एक बहुत बड़ा बहादुर योद्धा था। इसके साथ ही साथ वह इतना अच्छा गवइया भी था कि जानवर, दरख्त और नदियां तक उसका गाना सुनकर मस्त हो जाते थे। वह हकीम, फिलासफर और योगी भी था। ज्ञान की खोज मे उसने बहुत से देशो की यात्रा की। इस धरती पर तह-ज़ीब या सभ्यता का वह एक बहुत बड़ा फैलाने वाला था। पेशे से वह गड़रिया था और भेड़ें चराया करता था। कहा जाता है उसने बहुत सी किताबें लिखीं। औरफियस के बारे मे बहुत सी फ़र्ज़ी कहानियां और गीत दो हज़ार साल से ऊपर तक यूरोप के सब देशो और सब ज़बानो में कहे और गाए जाते रहे, और बहुत से आज तक सुनने मे आते हैं।

'औरफी' मत का उसूल है कि हर आदमी के अन्दर स्वार्थ

* Encyclopedia Brittanica Vol XI, p. 371

और परमार्थ, ख़ुदी और ख़ुदा, नेकी और बदी दोनो पहलू मौजूद हैं। आदमी का फर्ज़ बदी के पहलू को दबाना और नेकी को बढ़ाना है। इसके लिये उसे एक दूसरे के बाद बहुत से जन्म लेने पड़ते हैं। इन जन्मो के बाद धीरे धीरे जब जीव पूरी तरह पाक साफ़ हो जाता है तब इस पैदा होने और मरने यानी आवागमन के चक्कर से छूट जाता है। इस सफाई के लिये कुछ उसूलों पर अमल करना जरूरी है जिनमे एक खास यह है कि किसी तरह का भी मास न खाया जाय। इस मत के मानने वाले सफ़ेद कपडे पहनते थे और पाकीजगी और आत्मसंयम (नफ़्सकुशी) पर जोर देते थे। इनके बहुत से गुरु या पीर होते थे जो अपने चेलो को कई तरह की योग की तालीम देते थे। कहते हैं पिथागोर, अफ़लातून, सुक़रात जैसो के ख़यालों और उसूलों पर ओरफ़ी मत का बहुत असर पडा।

ओरफ़ी मत के उसूलो और उनकी किताबो पर ज़रथुस्त्री धर्म, बौद्ध धर्म वेदान्त और भगवद् गीता इन सब की गहरी छाप नजर आती है। ख़ुद ओरफ़ियस की फ़र्ज़ी जिन्दगी कृष्ण जी के चरित्र की यूनानी या मिस्री नक़ल दिखाई देती है।

इसी तरह के और भी बहुत से मजहबी, फ़लसफ़ियाना और तरह तरह के ख़याल उन दिनो चीन और हिन्दुस्तान से बराबर यूनान और मिस्र तक पहुँच रहे थे। बौद्ध धर्म के सब से बड़े प्रचारक सम्राट अशोक के शिला लेखो (कुतबों) से पता चलता है कि कम से कम पाच यूनानी बादशाहों के साथ अशोक की

दोस्ती थी और पाटलीपुत्र (पटना) और यूनान के दरबारो मे चिट्ठी पत्री, विद्वानो, पण्डितो, और धर्म के उपदेशको का आना जाना बराबर जारी था। उन पांच बादशाहो के नाम ये थे— शाम यानी फ़िलिस्तीन का यूनानी बादशाह अन्तिओकस (Antiochus of Syria), मिस्र का बादशाह टालेमी (Ptolemy), मैसिडोन का बादशाह अन्तिगोनस (Antigonus), साइरीन का बादशाह मारगस (Morgos of Cyrane) और एपिरो का बादशाह सिकन्दर (Alexander of Epiros)। अशोक के भेजे हुए बौद्ध धर्म प्रचारक उन दिनो पच्छिमी एशिया को पार कर मिस्र से कम से कम एक हज़ार मील आगे उत्तर अफरीका के साइरीज़ नगर तक फैले हुए थे।

हज़रत ईसा के जन्म से पहले सैकड़ो बौद्ध भिक्खु अपने ऊँचे चलन से उन लोगो के दिलो और दिमाग़ो पर भी असर डालते हुए, जो उनकी बोली तक न समझते थे, सारे इराक, शाम और फ़िलिस्तीन मे फैले हुए थे। इराक मे उन दिनो बौद्ध मज़हब का बहुत बड़ा ज़ोर था। 'साबी' मज़हब कायम करने वाला चैल्डिया का मशहूर सन्त बोदास्य बोधिसत्त्व ही का अवतार माना जाता था। साबी शब्द के माइने पानी मे डुबकी लगाना है, क्यों कि दीक्षा से यानी उस मज़हब मे दाखिल होने से पहले नहाना ज़रूरी था। शाम का सारा इलाक़ा उन दिनो बौद्ध मठो से भरा हुआ था। कई नए नए मज़हब उन तमाम देशो मे इस तरह के कायम हो रहे थे जो बौद्ध उसूलो मे रंगे

हुए थे। इस तरह के कई मत इराक में भी मौजूद थे।

उस जमाने की तारीख से पता चलता है कि पच्छिमी एशिया, यूनान, मिस्र और इथियोपिया के पहाड़ों और जंगलों में उन दिनों हजारों जैन, बौद्ध और दूसरे सन्त महात्मा हिन्दुस्तान से जा जाकर जगह जगह बसे हुए थे। ये लोग वहां बिलकुल साधुओं की तरह रहते थे और अपने त्याग और अपनी विद्या के लिए मशहूर थे।

इन त्यागी महात्माओं की छोटी छोटी बस्तियां बौद्ध धर्म के भी प्रचार से पहले तमाम पच्छिमी दुनिया में फैली हुई थीं। खासकर मिस्र उन दिनों पच्छिमी दुनिया का सब से बड़ा मानसिक और सांस्कृतिक, दिमागी और कल्चरल संगम बना हुआ था।

यहूदियों पर असर

फिलिस्तीन का इलाक़ा इस बड़े इलाके का सिर्फ़ एक बीच का छोटा सा हिस्सा था।

"फिलिस्तीन में जब जब कोई दिमाग़ी इनक़लाब या कोई ज़बरदस्त मज़हबी सुधार हुआ तब तब वह इनक़लाब या सुधार उस ज्यादह बड़े इनक़लाब का एक हिस्सा था जिसके दायरे मे फिलिस्तीन भी शामिल था। आठवीं सदी ईसा पूर्व और उसके बाद की सदियों में दक्खिन-पच्छिमी एशिया के अन्दर जो ज़बरदस्त तब्दीलियाँ हुईं उनके साथ साथ फिलिस्तीन मे एक नए ढंग के मजहबी ख़यालों ने घर किया, जिससे अपने अपने गिरोहों के अलग अलग मजहबों और जड़ प्रकृति यानी क़ुदरती ताक़तों की पूजा के रिवाज टूटने लगे।"*

दुनियाँ उन दिनो तेज़ी के साथ बदल रही थी। पुराने साम्राज्य उलट रहे थे, क़ौमे, एक के बाद एक, मिट रही थीं और नई नई सल्तनतें बन रही थीं। समझदार यहूदियों के दिलों पर भी इस सब का गहरा असर पड़ा। एक वाहिद अल्लाह, एक

---

*History of Religion by G F Moore, Vol I, pp VI-IX

परमेश्वर का जितना अच्छा, जितना सुन्दर, जितना ऊँचा, जितना व्यापक या आलमगीर और सब को पसन्द आने वाला बयान उन दिनों की एक यहूदी किताब इसायाह नबी की किताब * मे मिलता है इतना और किसी यहूदी किताब मे नहीं मिलता। दुनिया के भले के लिये अनन्त कष्ट सहने वाले एक भक्त, यानी 'याह्वे' (ख़ुदा) के एक सच्चे 'सेवक' का भी एक बड़ा सुन्दर बयान इस किताब मे मौजूद है।

बुद्ध और महावीर, लाओत्से और कुङ्-फू-त्से के ख़याल छन छन कर फ़िलिस्तीन तक पहुँच रहे थे। एक नई तरह का साहित्य (अदब) यहूदियों मे तय्यार हुआ जिसे इबरानी ज़बान मे "हुकमह" [Hokmah—Wisdom] यानी हिकमत या ज्ञान कहा जाता है। इसमे बताया गया कि सारी दुनिया एक ईश्वरीय नियम (क़ानूने इलाही) के मुताबिक चलती है। इसमे जड़ और चेतन, (माद्दा और रूह) दोनों शामिल हैं। कर्म काण्ड आदि रस्मरिवाजों से सदाचार यानी नेक काम बेहतर हैं। ज़ुल्म से धन कमाकर अमीर बनने की निस्बत ग़रीब रहना अच्छा है। जो आदमी ग़रीबों पर दया करता है ईश्वर उसका भला करता है। आदमी की असली दौलत 'याह्वे' (ईश्वर) का आशीर्वाद है। हर आदमी जैसा करता है वैसा ही भरता है। किसी को दूसरे के बुरे कामों की सज़ा भोगनी नहीं पड़ती। आदमी को इन्साफ़ और समझ के साथ दूसरों की तरफ़ अपने

---

* Is. XL Sq

फ़र्ज़ को समझना और उसे पूरा करना चाहिये। दुनिया से अलग रह कर अपनी आत्मा को शुद्ध करने की कोशिश करना उस वक्त तक फिज़ूल है जब तक आदमी दूसरों की तरफ सच्चाई, इन्साफ और ईमानदारी के साथ अपने फ़र्ज़ को पूरा न करे।

ये सब ख़याल उस ज़माने के चीनी और हिन्दुस्तानी ख़यालों से मिलते हुए थे। हमारे कर्मयोग के उसूल पर भी इनमें काफी ज़ोर था।

दूसरे यहूदी विद्वानों का कहना था कि आख़ीर में आदमी आदमी और क़ौम क़ौम के बीच ज़रूर इन्साफ होगा। ईश्वर के इन्साफ करने के ढङ्ग अनोखे लेकिन पक्के हैं। आदमियों को वह अपने काम के लिये उसी तरह ज़रिया या बहाना बना लेता है जिस तरह यहूदियों के भले के लिये उसने ईरान के सम्राट कुरु को बना लिया था।* आत्मा या रूह इस जन्म के पहले से मौजूद थी। वह ईश्वर से निकली है और आख़ीर में लौटकर उसी में लीन हो जायगी।

फिलिस्तीन के अन्दर और आस पास मिस्र तक में उन दिनों त्यागी यहूदियों की एक ख़ास जमात थी जो 'ऐस्सिनी' (Esscres) कहलाती थी। इस सुन्दर और अजीब जमात और उसके मठों और ख़ानक़ाहों का ज़्यादह हाल लेखक की एक दूसरी किताब में दिया गया है। ये लोग यहूदी धर्म के

* Is XLIV, 24

सब छोटे छोटे रीति रिवाजो से ऊपर उठ चुके थे। इनकी तादाद कई हज़ार थी। ये आबादी से दूर जगलो या पहाडो में कुटी बनाकर रहते थे। बौद्ध साधुओ की तरह अहिंसा को अपना खास धर्म मानते थे। गोश्त खाने से परहेज़ करते थे। बड़ी सख्त और संयमी यानी नफ्सकुशी की ज़िन्दगी बसर करते थे। पैसे या धन को छूने तक से इनकार करते थे। आस पास के रोगियो और कमज़ोरो की सेवा को अपनी रोज़मर्रा की साधना का ज़रूरी हिस्सा समझते थे। पुनर्जन्म (तनासुख) और कर्मों के फल में यकीन रखते थे। प्रेम और सेवा को पूजा पाठ से बढ़कर मानते थे। लकीर की फकीरी और खास कर जानवरो की बलि को मना करते थे। अपनी बस्ती के गुज़ारे के लिये अपने हाथ पैर की मेहनत से खाने और पहरने का सामान पैदा करते थे। जो कुछ सामान होता था सब सब्की की मिल्कीयत मानी जाती थी, और इस सब मे बचा हुआ वक्त रोज़ ध्यान और योगाभ्यास (सलूक) मे खर्च करते थे। मिस्र मे ये ही तपस्वी 'थेरापूते' [Therapeutae] कहलाते थे। थेरापूत यूनानी शब्द है जिसके माइने वही है जो एस्सिनी के हैं यानी "मौनी" या "वानप्रस्थ"।

हजरत ईसा से पहले सुधार की कोशिशें

एस्सिनी खुद एक नेक और ऊँची जिन्दगी बसर करने की कोशिश करते थे, लेकिन वे आम लोगो मे प्रचार के लिये न जाते

थे। दूसरी तरफ इसी चारो तरफ फैली हुई दिमाग़ी और रूहानी रोशनी मे आम यहूदी जनता के बिगड़े हुए आचार विचार और रीत्ति रिवाजो को सुधारने की भी कोशिशे जगह जगह शुरू हो गई थी। हज़रत ईसा से पहले की सदियो मे और ठीक जिस सदी मे वे पैदा हुए उसमे फ़िलिस्तीन और मिस्र मे दोनो जगह जहाँ जहाँ यहूदियो की आबादी थी, बहुत से नेक दिल रिफारमर इस तरह के पैदा हुए जिन्होने घूम घूम कर नए खयालो का प्रचार किया।

इन यहूदी रिफ़ारमरो मे सब से पहला नाम हज़रत ईसा से दो या ढाई सौ साल पहले महात्मा ईसा ही के हमनाम सिरा या सिराक के बेटे ईसू [Jesus son of Sirach] का मिलता है। सिरा के बेटे ईसू ने अपने ज़माने के बहुत से ग़लत मज़हवी रिवाजो और मानताओ पर खुले हमले किये। 'याहवे यानी ईश्वर को उसने बजाय यहूदियो के खास और अलग ईश्वर के "एक, अकेला, सब के घट घट मे रमा हुआ, जिसका न कोई शुरू न आखीर और सब जानदारो पर दया करने वाला" बताया, सदाचार यानी नेक कामो पर ज़ोर दिया; "सब का भला चाहना और सब का भला करना" ही असली धर्म बताया; आदमी को "काम करने मे आज़ाद" क़रार दिया, यहूदी मन्दिरो के पुरोहितो और पुजारियो की हालत को देखते हुए उसने कहा कि "ईश्वर ने किसी आदमी को पाप करने की इजाज़त नही दे रखी है।"

उसके उपदेशों के कुछ नमूने ये हैं—

"जो आदमी दूसरे आदमी पर ग़ुस्सा करता है वह ईश्वर से कैसे उम्मीद कर सकता है कि ईश्वर उसे चंगा कर देगा।"

"वक्त निकल जाने से पहले दूसरों की तरफ अपना फर्ज पूरा करो और ईश्वर अपने वक्त पर तुम्हें उसका नतीजा देगा।"

"मजदूर के लिये अपना काम ठीक ठीक करना ही ईश्वर की पूजा करना है।"

"ख़रीदने और बेचने के बीच में पाप घुस जाता है।"

"दूसरों के साथ न्याय करना और सदाचार यानी नेकी की जिन्दगी बसर करना यही सच्चा धर्म है।"

"दूसरों के साथ नेकी करना ही ईश्वर की पूजा करना है।"

ईसाई धर्म के कायम करने वाले हज़रत ईसा के उपदेश सिरा के बेटे ईसू के उपदेशों से इतने मिलते हुए हैं कि कोई कोई विद्वान इस ईसू को हज़रत ईसा का "सच्चा पूर्वज यानी मूरिस"* कहते हैं।

ईसू के बाद शायद उससे भी बढ़कर दूसरा नाम हज़रत ईसा के ठीक पहले एक और यहूदी महात्मा हिल्लेल [Hillel] (७० ई० पू० से १० ई० तक) का आता है। हिल्लेल इराक़ का रहने वाला था। वह पहला यहूदी था जिसने चीनी महात्मा कुन्फ़्यूत्ज़े के इस क़ीमती उपदेश "जो बात तुम अपने साथ

* A true ancestor of Jesus"—*Life of Jesus* by Renan.

किया जाना पसन्द नही करते, वह कभी किसी दूसरे के साथ न करो," को थोड़ा बढ़ाकर उपदेश दिया—"जो बात अगर तुम्हारे साथ की जावे तो तुम्हे अच्छी न लगे वह तुम भी अपने पड़ौसी के साथ कभी न करो। यही पूरा धर्म है और जो कुछ भी है सब इसी का बखान और फैलाव है।" हिल्लेल अकसर अपने उपदेशो मे ऊपर के ही इन शब्दो को दोहराया करता था। हिल्लेल के कुछ और ज़्यादा मशहूर वचन ये हैं—

"मेरी दीनता यानी (इनकसार) मे ही मेरा बड़प्पन है"।*

"अगर मै ख़ुद अपना धर्म पूरा न करूंगा तो मेरा धर्म दूसरा कौन पूरा करेगा ?"

"मेरा काम अगर सिर्फ़ अपनी ही फ़िक्र करना है तो मै किस काम का हूँ ?"

"अब नहीं तो कब ?"

"अपने को औरों (संघ) से अलग मत करो।"

"अपने पड़ौसी पर उस वक्त तक राय क़ायम मत करो जब तक कि तुम ख़ुद उसकी सी हालत मे न हो।"

"जो अपने लिये नाम करना चाहता है वह अपना नाम खो देता है, जो अपने ज्ञान को बढाता नहीं वह उसे घटाता है, जो नई बात सीखने से इन्कार करता है वह मरने के क़ाबिल है, जो अपने लिए नतीजा या इनाम हासिल करने के लिये काम करता है वह नष्ट हो

---

* My abasement is my exaltation.

चुका, जिसे इस सच्चे धर्म का उपदेश मिल गया उसे परलोक (दूसरी दुनिया) की जिन्दगी मिल गयी।"

हिल्लेल पुरोहितो के और उन सब लोगो के खिलाफ था जो यहूदी धर्म के पुराने रीति रिवाजो पर ज़ोर देते थे और उन्हें कायम रखना चाहते थे। वह बडे दिल का और आज़ाद खयाल था। उसका दिल सब आदमियो के लिये प्रेम से भरा हुआ था। वह बहुत दीन, अपने को सब से छोटा समझने वाला, धीर, नरम स्वभाव और नेक चलन था। उसकी मौत के सैकडो वर्ष बाद तक लोग बड़ी भक्ति के साथ उसे बडा महात्मा, सच्चे धर्म का उपदेशक और दया, धीरज और दीनता यानी इनकसार का अवतार मानते रहे।

हिल्लेल जिन्दगी भर बड़ा गरीब रहा, और इस गरीबी को अपने लिए बडे फख्र यानी गर्व की चीज़ समझता रहा। हिल्लेल और हज़रत ईसा दोनो की जिन्दगी काफी मिलती जुलती थी। हज़रत ईसा के उपदेशो मे हिल्लेल के बहुत से फिक़रे और वचन ज्यो के त्यो मिलते हैं। इसी लिए बहुत से इतिहास लिखने वाले हिल्लेल को हज़रत ईसा का "सच्चा गुरू" मानते हैं।

"अपनी ग़रीबी के सबब और उस दीनता के सबब जिस दीनता के साथ उसने उस ग़रीबी को अपनाया, अपने प्रेमी और मीठे स्वभाव के सबब, और पुरोहितो और पारिसियो के खिलाफ़

प्रचार करने के सबब हिल्लेल को हज़रत ईसा का सच्चा गुरू कहा जा सकता है।"*

मिस्र मे भी हज़रत ईसा के करीब दो सौ साल पहले से बहुत से विद्वान यहूदी चीन, हिन्दुस्तान, ईरान और यूनान के ऊँचे से ऊँचे खयालो को मथकर उनकी मदद से पुराने यहूदी धर्म को सुधारने की कोशिशो मे लगे हुए थे। इनमे सब से बड़ा नाम सिकन्दरिया के उस यहूदी सन्त-फिलासफर फाइलो (Philo) का है, जो हज़रत ईसा के ज़माने मे मौजूद था। सिकन्दरिया का शहर कई सदी पहले से हिन्दुस्तानी और यूनानी खयालों का एक खास संगम रह चुका था। फ़ाइलो ख़ुद हिन्दुस्तानी दर्शन शास्त्र और यूनानी फलसफे दोनो का पूरा पंडित था। उसने बहुत सी किताबें लिखी। उसके ख़याल बहुत गहरे और ऊँचे थे। उसका दिल बड़ा था। फ़ाइलो की बहुत सी किताबें ख़ासकर एक किताब जिसका नाम "सोच विचार या ध्यान की ज़िन्दगी" [Of the Contemplative Life] है। सदाचार (इख़लाक़) के ऊँचे और व्यापक (आलमगीर) उसूलो और गहरे अध्यात्म या रूहानियत के

*"By his poverty so meekly endured, by the sweetness of his character, by his opposition to priests and hypocrites Hillel was the true master of Jesus"—Pirke Aboth, Ch I, II, Talmud etc., Renan—Life of Jesus, p. 56.

लिये शौक और इज्जत से पढ़ी जाती है। हज़रत ईसा को सूली दिये जाने के वक्त फाइलो ६२ वर्ष का था और इसके कम से कम दस साल बाद तक ज़िन्दा रहा। फाइलो के खयाल हज़रत ईसा के उपदेशों से इतने मिलते हैं कि उसे "ईसा का यकीनी बड़ा भाई"* कहा जाता है।

ईश्वर के बारे में फाइलो का ख़याल अपने ज़माने के आम यहूदी ख़याल से बहुत ऊँचा था। वह कहता था कि—

"ईश्वर यहूदी क़ौम या किसी दूसरी क़ौम का ख़ास ईश्वर नहीं है, वह सब का एक बराबर ईश्वर है। कोई क़ौम उसे ख़ासतौर पर दूसरी क़ौमों से ज़्यादह प्यारी नहीं है। वह सब का बाप है। सब उसके बच्चे हैं। वह हर वक्त हमारे साथ है। वह हर एक के दिल के अन्दर मौजूद है। हमें उस पर पूरा भरोसा रखना चाहिये। उससे प्रेम करना चाहिये। सब आदमी भाई भाई हैं, इसलिये सब को एक दूसरे के साथ प्रेम और दया का व्यवहार करना चाहिये।"

इन सब चीज़ों पर हज़रत ईसा ने बाद में जो खयाल ज़ाहिर किये और जिन शब्दों में किये वह जगह जगह फाइलो के ख़यालों और शब्दों की साफ़ साफ़ गूँज मालूम होते हैं। हज़रत ईसा ईश्वर को आम तौर पर 'अब्बा' यानी बाप कहकर पुकारा करते थे। फ़ाइलो भी ईश्वर को 'अब्बा' कहता था। 'अब्बा' इबरानी ज़बान का शब्द है। फ़ाइलो सब पुरानी

---

*Philo is truely the elder brother of Jesus—Renan's Life of Jesus.

यहूदी रूढ़ियो, यज्ञो, जानवरो की क़ुरबानियों और दूसरे रीति रिवाजो को ग़लत बताता था और सिर्फ पाक ज़िन्दगी बसर करने और दूसरो के साथ नेकी पर ज़ोर देता था। फाइलो का ज़्यादह हाल और उसके विचार यहूदी धर्म के सिलसिले मे एक दूसरी किताब मे दिये जा चुके हैं।

इसी तरह के और कई छोटे बड़े यहूदी सुधारक ईसवी सम्वत् के शुरू मे या उसके आस पास अपने धर्म के सुधार की कोशिशो मे लगे हुए थे। इनमे शेमाइया और अबतालियन दोनो उपदेश दे चुके थे कि धर्म अधर्म की कसौटी पुरानी किताबें नही है, बल्कि आदमी की अपनी समझ और उसकी अन्तरात्मा या ज़मीर है। रब्बी योहानन (Johanan) का उपदेश था कि धार्मिक किताबों को पढ़ने की निस्बत दूसरो पर दया करने मे ज्यादह फ़ायदा है। इसी तरह और भी थे। थोड़े बहुत भक्त या कद्र करने वाले भी इनमे से हर एक के आस पास जमा हो जाते थे। यरुसलम का शहर और उसके आस पास का इलाका पुरानी कट्टरता का गढ़ था। लेकिन समरिया, गैलिली जैसे उत्तरी इलाको के लोग कुछ ज्यादह आज़ाद और दिल वाले थे। ख़ास कर गैलिली का इलाका यूनानी संस्कृति, यूनानी कलचर, के उन दस मशहूर शहरों से मिला हुआ था जो "दस पुरियो" (Decapolis) के नाम से मशहूर थे। इसी लिए यह इलाका क़ौमों की गैलिली' (Galilee of the nations) कहलाता था। कट्टर यहूदी इलाके वाले गैलिली वालो को धर्म भ्रष्ट और अपने

मुकाबले में नीच मानते थे। हज़रत ईसा के जन्म से पहले गैलिली मे और और ज्यादह उत्तर मे दमश्क नगर मे कई छोटी मोटी तहरीकें यहूदी धर्म को सुधारने की चल चुकी थी।

पर इनमे से किसी सुधारक या किसी तहरीक को भी जनता मे ज्यादह कामयाबी न मिल सकी। कट्टर पुरोहितों के हाथों मे ताक़त थी। सुधारको की आवाज बीच मे ही बन्द कर दी जाती थी। वह न दूर तक पहुँच पाती थी और न देर तक सुनाई दे सकती थी। हिल्लेल के जमाने के एक विद्वान पुरोहित शम्माइ (Shammai) ने हिल्लेल की बातों को काटा। शम्माइ ने प्रचार किया कि तमाम पुराने रीति रिवाज और कर्म काण्ड ही यहूदी धर्म का सब से जरूरी हिस्सा हैं। हिल्लेल की आवाज़ शम्माइ की आवाज के सामने दब गई। शम्माइ का ही उन दिनो फिलिस्तीन मे बोल बाला था। तालमुद मे लिखा है कि सिरा के बेटे ईसू जैसे महात्माओं की किताबों का मन्दिरों या सिनेगॉग मे पढ़ा जाना जुर्म करार दे दिया गया। इस जुर्म की सजा थी यहूदी कौम से जाति बाहर कर दिया जाना और मुजरिम की तमाम जायदाद का ज़ब्त कर लिया जाना। इसी तरह का सलूक दूसरे रिफ़ार्मरों की किताबों और उनके उपदेशों के साथ किया गया।

रोम के ख़िलाफ बग़ावतें

फिलिस्तीन पर रोम वालो की हकूमत थी। एक तरफ फिलिस्तीन वाले अपने सुधारको के साथ यह सलूक कर रहे थे और दूसरी तरफ़ रोम वालो के .ज़ुल्मो के ख़िलाफ़ बग़ावतो की आग देश मे बराबर सुलग रही थी और कभी कभी भड़कती रहती थी। एक अजीब बात यह थी कि इन पोलिटिकल बग़ावतो का मज़हबी कट्टरता के साथ एक अजीब मेल पैदा हो गया था। जितना जितना यहूदियों पर विदेशी रोम वालों के .ज़ुल्म बढ़ते थे उतना उतना ही विदेशी चीज़ो और विदेशी ख़यालों से नफ़रत लोगो मे बढ़ती जाती थी, चाहे वे ख़याल रोम से आए हो, चाहे यूनान से, चाहे चीन से और चाहे हिन्दुस्तान से। और ज़्यादहतर कट्टर खयालो के लोग ही धर्म युद्ध या एक तरह का जेहाद मान कर विदेशी हुकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावतें करते थे। बहुत स बाग़ी लीडर ईमानदारी के साथ पुराने ख़याल के थे। यह भी मुमकिन है कि उनमे से कुछ लोगो मे इस कट्टरता को भड़का कर उससे अपने पोलिटिकल आन्दोलन को मज़बूत करना चाहते हो। दूसरी कौम वालों से नफ़रत और

हिंसा यानी मार काट को वे अपने लिये फ़ायदे की चीज़ें समझते थे।

बहुत से जोशीले यहूदी रोमी झण्डे को गिरा देना या फाड डालना या रोमी देवताओ की उन मूर्तियों या रोमी धर्म की उन अलामतो को तोड़ डालना जो रोमियो ने यहूदियो की मरज़ी के ख़िलाफ़ ज़बरदस्ती जगह जगह पब्लिक जगहो मे गाड रखे थे, अपना मज़हबी फ़र्ज़ समझते थे। राज की तरफ़ से इस तरह के जुर्मों की सजा मौत थी और सैकडो यहूदी इन छोटी छोटी बातो के लिये धर्म के नाम पर हंसते हंसते मौत का सामना करते थे।

यहूदा मे सारीफिया (Sariphea) का बेटा यूदा (Judas) और मारगालौथ (Margaloth) का बेटा मत्थिया (Motthias) दो विद्वान यहूदी धर्म गुरु थे, जिन्होने विधर्मियो को देश से निकालने के लिये एक बहुत बडा दल खड़ा किया। यूदा और मत्थिया दोनो को सूली पर चढ़ा दिया गया। इस पर भी बरसों बाद तक उनका दल अपना काम करता रहा। इसी तरह की तहरीकें समरिया इलाके मे भी जारी थीं। ईसवी सम्वत के शुरू मे ये तहरीकें पूरे ज़ोर पर थीं। जोशीले लोगों का एक दल का दल देश भर मे पैदा हो गया था जो स्वदेशी या विदेशी, रोमी या यहूदी हर ऐसे आदमी को मार डालना अपना धर्म समझता था जो उनकी राय में पुराने यहूदी धर्म के रिवाजों को न मानता हो। ये लोग 'जेनाड्म'

(Kenaim) और 'सिकारी' (Sicarii) कहलाते थे। केनाईम् का मतलब 'मज़हबी जोश वाले' और सिक़ारी के माइने 'मज़हब के लिये हत्या करने वाले' हैं।

गैलिली इलाके मे एक नई तहरीक चली। यहूदी प्रजा के ऊपर टैक्सो का बोझ बहुत बढ़ गया था। ये टैक्स मर्दुम शुमारी के हिसाब से लगाए जाते थे। सन् ६ ईसवी में रोमी गवरनर क्विरिनस (Quirinus) ने नई मर्दुम शुमारी का हुक्म दिया। उत्तर के प्रान्तों मे बग़ावत खड़ी हो गयी।

टाइबीरिआ (Tiberias) झील के पूरब के किनारे पर गमाला (Gamala) नगर के रहने वाले एक आदमी यूदा (Judas the Ganlomita) और उसके साथी सादुक (Sadoc) ने मिलकर ऐलान किया कि सिवाय एक 'याहवे' (ईश्वर) के किसी दूसरे को अपना 'मालिक' या राजा मानना पाप है, रोम वालो के लगाये सब टैक्स धर्म के ख़िलाफ़ हैं, उनका देना पाप है, और आज़ादी ज़िन्दगी से ज़्यादा क़ीमती है। यह यूदा अपने ज़माने का मशहूर विद्वान था। उसका बड़ा असर था। एक बहुत बड़ा दल उसके साथ खड़ा होगया। लोगो को उम्मीद और जोश दिलाने के लिये उसने यह भी प्रचार किया कि यहूदी किताबों मे लिखा है कि बहुत जल्दी एक बहुत बड़ा आदमी, एक 'मसीहा' फ़िलिस्तीन मे पैदा होगा जो विधर्मी ज़ालिमों का नाश करके यहूदियों को आज़ाद करेगा और सारी दुनिया मे फिर से धर्म राज क़ायम करेगा। यूदा को सूली दे

दी गई, लेकिन उसकी चलाई हुई जमात कायम रही। उसके खयाल फैलते और अपना काम करते रहे। गैलिली इलाके की हालत उस वक्त एक धधकती हुई भट्टी की सी थी जिसमे चारो तरफ बदअमनी फैल रही थी और लोगो के दिलो मे बड़ी बडी उम्मीदें बध रही थी।

मसीहा की पेशीनगोइयाँ

एक खास तरह के महापुरुषों, ईश्वर के भेजे हुए दूतों या अवतारो के ज़रिये इस दुनिया मे अन्याय के नाश और न्याय के फिर से कायम होने की उम्मीद बहुत पुराने ज़माने से चली आती है। हिन्दुस्तान मे धर्म की ग्लानि यानी गिरावट और अधर्म के अभ्युत्थान यानी बढ़ने के वक्त साधुओं की मदद, दुष्टो के विनाश और धर्म के फिर से क़ायम करने के लिये जब तब ईश्वर के अवतार लेने का ख़याल भगवद् गीता से हज़ारों साल पहले से मौजूद था। यही यकीन और यही खयाल तरह तरह की शक्लो मे उस ज़माने की तमाम दुनिया मे फैला हुआ था।

ईरान की मज़हबी किताबों मे लिखा था कि* हर हज़ार साल के बाद एक बड़ा महापुरुष पैदा होता है जो अपने ज़माने में अधर्म का नाश कर धर्म को फिर से कायम करता है और

---

* Zend Avasta I, 2nd part, p 46, Jamesp Naruah quoted in Avasta by Spiegal 1, p. 34, yacna XII, 24, Minokhired 1, 263—see also Vendidad XIX, 8, 19.

हज़ार साल तक उसका दौर कायम रहता है। इसी तरह के बहुत से दौरों के बाद आख़ीर में अहुरमज़्द (ईश्वर) का राज या राम राज ज़मीन पर कायम होगा, उस वक्त सारी ज़मीन फ़िरदौस (स्वर्ग) हो जायगी। फ़िरदौस शब्द ईरानी पिरदौस का अरबी रूप है। पिरदौस (संस्कृत प्रदेश्य) शहर के बाहर के हिस्से को कहते थे। इससे ईरान में बादशाहों के बागों को 'पिरदौस' कहने लगे, क्यों कि वे शहर से बाहर होते थे। होते होते पिरदौस, फ़िरदौस या अंगरेज़ी पैरेडाइज़, स्वर्ग यानी बहिश्त का नाम पड़ गया। अहुरमज़्द के राज में सारी ज़मीन एक सर सब्ज़ मैदान की तरह होगी। एक राज, एक बोली, एक कानून होगा और सब सुखी होंगे। लेकिन उस सुनहरे ज़माने के आने से ठीक पहले दुनिया के ऊपर एक बार बड़ी बड़ी आफ़तें आवेंगी, दहक यानी शैतान (संस्कृत-दहक) जो इस वक्त आसमान में ज़ंजीरों से जकड़ा हुआ है अपनी ज़ंजीरों को तोड़कर दुनिया के ऊपर आ टूटेगा और तरह तरह की मुसीबतें पैदा करेगा। उन मुसीबतों के वक्त दो पैग़म्बर पैदा होंगे जो सारी इन्सानी क़ौम को समझा देंगे और आने वाले सतयुग या सुनहरे ज़माने के लिये सब को तय्यार करेंगे।

इस तरह के ख़याल हिन्दुस्तान और ईरान से होते हुए उन दिनों सारी पच्छिमी दुनिया में फैल रहे थे। रोम में इन्हीं के सहारे बहुत से बड़े बड़े काव्य (नज़्में) रचे गए, जिनमें दुनिया के इतिहास को अलग अलग युगों या टुकड़ों में बाँटा गया, हर

युग का एक अलग देवता माना गया, और आखीर मे दुनिया का नए सिरे से इतज़ाम किये जाने और नए सुनहरे ज़माने के आने की तरह तरह से खबर दी गई।*

यहूदी धर्म की किताबो मे † इसी खबर की यहूदी शकल दिखाई देती है। सदियो से यहूदी इस तरह के स्वप्न देख रहे थे। उनके बहुत से 'नबी' अपनी क़ौम की आए दिन की मुसीबतो और जिल्लतो मे बार बार इस तरह की पेशीनगोइयाँ करते रहते थे। ईसवी सम्वत् के शुरू के दिनों मे ये उम्मीदें इतने ज़ोरो पर थी कि लोग सुबह शाम उनके पूरा होने का इतज़ार कर रहे थे।

जिस तरह की पेशीनगोइयाँ जिन शब्दों में ईरानी किताबों मे पहले से मौजूद थी ठीक उसी तरह की उन्हीं शब्दो मे यहूदी नबियो होशिया (Hosea) और इसाइयाह (Isaiah) के लेखो मे मिलती है। ईरान से ही यह खयाल फिलिस्तीन तक पहुँचा। लेकिन 'मसीहा' शब्द इबरानी है। इसका मतलब है 'जिस पर तेल मला गया हो।' पुराने मिस्र के मन्दिरो मे रोज़ पुरोहित लोग मूर्ति को नमस्कार करके, स्नान कराकर, रंगीन कपड़े पहनाकर उस पर तेल लगाते थे। यही रिवाज इराक मे भी

---

* Virg, Ecl. IV, Servius, at V. 4 of this Eclogue, V. 10.

† The Book of Daniel & the Book of Enoch etc.

था। दोनों जगह इस तेल की मालिश की ख़ास महिमा थी। मिस्र इराक और शाम तीनों में बड़ा पुरोहित हर नए बादशाह के राज तिलक के वक्त उसके सर पर तेल लगाता था। इन सब देशों में बादशाह को भी देवता का ख़ास पुरोहित या पुजारी समझा जाता था। यहूदी अपने ख़ास ख़ास बादशाहों को यहां तक कि ईरानी सम्राट कुरु (Cyrus) को जिसने यहूदियों के साथ बड़े प्रेम का व्यवहार किया "याह्वे (ईश्वर) का मसीहा" कहकर पुकारते थे।* 'माशीआह' या मसीहा का यह ख़याल नए विचारों के साथ बड़ी अच्छी तरह मिल गया। उस ज़माने की तमाम यहूदी धर्म की किताबों में यह ख़याल फैला हुआ था और हज़रत ईसा के जन्म से पहले नए माशीआह के आने की उम्मीद हजारों की ज़बान पर थी।

यरूसलम शहर के अन्दर यह उम्मीद लोगों को इतनी जबरदस्त थी कि हज़रत ईसा के बचपन के दिनों में बहुत से धर्मात्मा लोग रात दिन मन्दिर में रहकर व्रत और पूजा पाठ में अपना वक्त ख़र्च करते थे और प्रार्थना करते रहते थे कि हमारी मौत यहूदी क़ौम के मसीहा के पैदा होने के बाद एक बार उसके दर्शन कर लेने पर हो। इन्जील में इस तरह के एक बूढ़े साधु शीमियन और एक बूढ़ी औरत अन्ना के नाम भी आते हैं।

नासरह नगर में सुधारकों का एक गिरोह था जो बहुत से

* Isaiah chapters 44 and 45.

पुराने रीति रिवाजो को ग़लत मानता था। नेकी यानी सदाचार पर ज़ोर देता था और यह प्रचार करता था कि जल्दी ही पहले एक नया धर्म गुरु पैदा होगा जो यहूदियो को सच्चे धर्म का उपदेश देगा और उसके बाद एक मसीहा पैदा होगा जो दाऊद की नसल से न होगा पर यहूदयो को आज़ाद करेगा। इस दूसरी पेशीनगोई का सबब शायद यह था कि यहूदा इलाके के कट्टर लोगो मे नसल का ग़रूर भरा हुआ था और दूसरे प्रान्तो के समझदार लोग उस ग़रूर को थोथा समझते थे और उसे तोड़ना चाहते थे। दमश्क का यह गिरोह सचमुच दूसरे आज़ादी चाहने वाले यहूदियों से ज्यादह समझदार था।

महात्मा यहूना

इसी हवा में ईसा से ठीक पहले यहूदा प्रान्त के अन्दर यरुसलम से दक्खिन के पहाड़ी इलाके में एक महात्मा यहूना (John the Baptist) का जन्म हुआ। यहूना शुरू से ईश्वर भक्त और खोजी थे। अपने देश वालों के दुखों का असली सबब वह जानना चाहते थे। इस सचाई की खोज में वह बहुत दिनों इधर उधर घूमते रहे। उनके जन्म की जगह अरब के लम्बे चौड़े रेगिस्तान से सिर्फ चन्द घण्टे की दूरी पर थी, इसीलिए उन्हें रेगिस्तान से बड़ा प्रेम था।

यहूना को यहूदियों के तमाम पुराने नबियों में से एक इलियास (Elias) खास तौर पर अच्छे या प्यारे मालूम हुए थे। इलियास सुनसान पहाड़ों की कन्दराओं में जंगली जानवरों के साथ रहा करते थे और सख्त तपस्या की जिन्दगी बसर करते थे। अपने उपदेशों में यहूदी कौम को सचाई के रास्ते पर लाने की उन्होंने पूरी कोशिश की। बहुत से यहूदी इलियास को अमर समझते थे। कुछ का खयाल था कि इलियास मर चुके लेकिन फिर जल्दी ही यहूदी कौम के छुटकारे और अमन के लिये जन्म [illegible]।

यहूना को भी जगल मे अकेले रहने, सोचने विचारने और मनन करने, सख्त ज़िन्दगी बसर करने और योग करने का शौक था। उनके जन्म स्थान के पास मुरदा सागर (डेडसी) के पूरब के किनारे पर ऐस्सिनी जमात के कई मठ थे। बहुत दिनों तक यहूना ऐस्सिनी साधुओ के साथ रहे और उनसे तालीम लेते रहे। उसके बाद उन्होंने बिलकुल अकेले रहना शुरू कर दिया।

"उनके चारों तरफ जंगल था। जंगल से उन्हें प्रेम था। वहाँ रहकर वह एक हिन्दुस्तानी योगी की तरह ज़िन्दगी बिताते थे'। मृगछाला या ऊँट के बालों का कम्बल ओढकर रहते थे। बहुत पहले से उन्होने मास, शराब और और सब नशे की चीज़ों को छोड़ रखा था। उनका खाना सिर्फ जगली दरख्तों की फलिया और थोड़ा सा शहद था।

"होते होते कुछ चेले उनके आस पास रहने लगे। वे सब उन्हीं की तरह रहते थे और बहुत सख्त ज़िन्दगी बिताते थे। बैरागी यहूना मे अगर थोड़ी सी ख़ास बातें ऐसी दिखाई न देतीं, जिनसे ज़ाहिर होता था कि वह अपने से पहले के यहूदी नबियों जैसे ही एक नबी हैं, तो उन्हें देख कर हमे बिलकुल ऐसा मालूम होता कि हम हिन्दुस्तान में गङ्गा के किनारे खड़े हैं।"*

इसमे शक नही कि एस्सीनियों, यहूना और उस ज़माने के और बहुत से यहूदी गुरुओ के रहन सहन और आचार

*Life of Jesus by Renan, pp. 93-94.

विचार पर हिन्दुस्तान का काफी असर था।*

थोड़े दिनों बाद यहूना ने उस जंगल से निकलकर और घूम घूमकर आम जनता को धर्म का उपदेश देना शुरू किया। अब तक उनके चेले सिर्फ त्यागी (तारिकुद्दुनिया) होते थे, जिन्हें वह आत्म संयम यानी नफ्सकुशी और योग (सलूक) सिखाते थे। अब उन्होंने मामूली गृहस्थों को भी उन्हीं की जरूरतों के मुताबिक उपदेश देना और समझाना शुरू कर दिया।

सन् २८ ईसवी के करीब यहूना का नाम सारे फिलिस्तीन में फैल गया। यहूदा प्रान्त की कट्टर हवा में लोगों को उनके आजाद खयाल ज्यादह पसन्द न आ सके। वह यहूदा छोड़ कर उत्तर की तरफ समरिया प्रान्त में जार्डन नदी के किनारे जंगल में एक जगह जाकर रहने लगे। कभी कभी आस पास के इलाके में वह आते जाते भी थे। जो लोग उनकी बात मान लेते उन्हें वह पहले जार्डन नदी में नहलाते और फिर कायदे से दीक्षा यानी उपदेश देते थे। इस तरह के उपदेश से पहले नहाने का रिवाज भी इराक और शाम दोनों में हिन्दुस्तान ही के असर से हाल में जोर पकड़ चुका था। एस्सिनी लोग भी नहाने पर बहुत जोर देते थे। इसीलिये यहूना की दीक्षा 'यहूना के बपतिस्मे' के नाम से मशहूर है। 'बपतिस्मा' शब्द के माइने हैं 'पानी में डुबकी देना'। इसी से महात्मा यहूना का नाम 'बपतिस्मा देने वाला यहूना, (John the Baptist) पड़ गया।

---

* Ibid p, 99.

आम ज़नता के लिये महात्मा यहूना के उपदेशों का निचोड़ यह था—

"अपने अब तक के बुरे कामो को काटने और आगे को बुराई से वचने के लिये सच्चे दिल से पछतावा करना ज़रूरी है, और अब ऐसे ऐसे काम करो जिनसे मालूम हो कि तुम्हारा पछताना सच्चा है। इस बात का घमण्ड करना छोड़ दो कि हम हज़रत इबराहीम की औलाद है। जिस पेड़ पर अच्छे फल नही लगते वह चाहे कितना भी पुराना क्यो न हो काट डाला जाता है और आग जलाने के काम आता है।" लोगो ने पूछा हमारा धर्म क्या है? यहूना ने जवाब दिया—"जिसके पास दो कुरते हो वह अपना एक कुरता उसे दे दे जिसके पास एक भी नहीं है। जिसके पास रोटी है वह भी ऐसा ही करे।" रोम की तरफ़ से टैक्स जमा करने वाले सरकारी नौकरों को उन्होने उपदेश दिया—"इन्साफ़ से जितना ठीक है उससे एक पैसा ज्यादह किसी से मत लो। यही तुम्हारा धर्म है।" सिपाहियों को उन्होने उपदेश दिया "किसी पर किसी तरह का ज़ुल्म न करो, किसी पर कोई झूठा इलज़ाम न लगाओ और अपनी तनख्वाह मे ही गुज़ारा करो, यही तुम्हारा धर्म है।"*

यहूदी किताबों मे जो जगह जगह इस बात की पेशीनगोई (भविष्यवाणी) आती थी कि एक न एक दिन सब अन्यायों और अन्याय करने वालो का खात्मा होगा और सारी धरती

* Luke 1 & II

पर फिर से ईश्वरीय राज (अल्लाह की हुकूमत) [Kingdom of God] कायम होगा, इस पेशीनगोई के बारे में महात्मा यहूना ने कहा कि—

"जिस 'ईश्वरीय राज' का यहूदी किताबों में वादा किया गया है वह तुम्हारे अन्दर है, बाहर नहीं। अपने अन्दर के पापों, जैसे ऊँच नीच और छूआ छूत के फरक़ों को छोड़ो। अपनी जिन्दगी और अपने दिलों को उसी तरह पाक करो जिस तरह इस नदी का पानी तुम्हारे बदन को पाक साफ करता है। सब के साथ प्रेम और न्याय से बरतो—इस बात को दिल में बैठालो। यही 'ईश्वरीय राज्य' क़ायम करना है। जब तक तुम इस तरह अपने अन्दर ईश्वरीय राज्य क़ायम न करोगे तब तक तुम्हें दुख भोगना ही पड़ेगा।"

यहूना के उपदेशों में पुरानी यहूदी किताबों के ऊँचे से ऊँचे ख़यालों के अलावा बुद्ध, लाओत्से और कुङ्ग-फ़ूत्ज़े के विचारों की काफी झलक दिखाई देती थी। यहूदी मन्दिरों के कर्मकाण्ड और पूजा पाठ को वह निकम्मा और पुरोहितों को फिज़ूल बताते थे। इन्साफ़, नेकी या सदाचार और दिल की सफ़ाई को ही असली धर्म कहते थे, नेकी को मज़हबी रस्म रिवाजों की जगह देते थे और अपने अपने अलग अलग मज़हबों के ही ठीक होने के घमण्ड को झूठा कहते थे। दिल की सफ़ाई के लिये वह उपवास यानी रोज़े रखने और ईश्वर प्रार्थना (दुआ) करने का उपदेश देते थे। वह इन्द्रिय संयम यानी नफ़्सकुशी पर ज़ोर देते थे। यहूना को गरीबों से बहुत ज़्यादह प्रेम था। अपने अमीर चेलों

को वह उपदेश देते थे कि अपनी सारी दौलत ग़रीबों में बांट दो।

यहूना का नाम चारों तरफ़ फैलने लगा। उनका असर बढ़ने लगा। यहूदी, ग़ैर यहूदी, अमीर और ग़रीब, आम प्रजा और सरकारी नौकर, धर्मात्मा और पापी सब को वह एक सी प्रेम की निगाह से देखते थे, सब को अपने सुधार और तरक्की का रास्ता बताते थे और सब को एक बराबर मुक्ति (निजात) का यक़ीन दिलाते थे। सब तरह के लोग उनके पास आ आकर जमा होने लगे और नए धर्म की तालीम लेने लगे। बहुत से लोग उन्हें 'नबी' समझने लगे। बहुत से कहते थे कि 'इलियास' ने ही यहूना के रूप में फिर से जन्म लिया है। लेकिन कट्टर ख़याल के यहूदी पुरोहितों और फ़िलिस्तीन के कुछ सरकारी लोगों को यहूना का बढ़ता हुआ असर पसन्द न आ सका।

हज़रत ईसा का जन्म

इसी ज़माने मे गैलिली प्रान्त के एक छोटे से पहाड़ी क़स्बे नाज़रथ में एक बहुत ग़रीब घर के अन्दर हज़रत ईसा का जन्म हुआ। ईसा का जन्म सन् १ ईसवी से तीन चार साल पहले का माना जाता है। आजकल का ईसवी सन् छठवीं सदी ईसवी मे डायोनीसियस नाम के एक ईसाई महन्त ने शुरू किया था। आठवीं सदी ईसवी से यूरोप मे उसका प्रचार शुरू हुआ। बाद मे मालूम हुआ कि गलती मे सन् १ ईसवी ईसा के जन्म से कम से कम तीन चार साल बाद रख लिया गया। आठवीं सदी ईसवी तक रोम का जूलियन सन् और कई एशियाई सन् यूरोप मे चलते थे।

नाज़रथ की आबादी तीन चार हज़ार थी। छोटे छोटे पत्थर के घर, घरों के आगे पीछे अंगूर की टट्टियाँ और इन्जीर के दरख्त, सुन्दर आब हवा, चारों तरफ सब्ज़ी, उत्तर मे सफ़ेद पहाड़ नाम का ऊँचा पहाड़। यरुसलम की कट्टर सनातनी हवा से काफ़ी दूर।

उन दिनों फ़िलिस्तान में आम तौर पर लड़कों का नाम ईसू होता था। यही इस बालक का नाम था। उनका पिता यूसुफ़ बढ़ई का काम करता था। अपने बाल बच्चों को पालने के लिये यूसुफ़ को सुबह से लेकर शाम तक कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी।

माँ मरियम (मेरी) घर का सारा काम करती थी। दोनों वक्त रोटी पकाती, घर की सफाई करती, गाँव के कुएं से पानी भर कर लाती, बच्चों की देख रेख करती और जो वक्त इन सब बातों से बचता उसमे सब घर वालों के कपड़ो के लिये बैठकर सूत कातती।

फिलिस्तीन का रहन सहन एशिया के दूसरो देशो के रहन सहन से मिलता हुआ था। दूसरे और ग़रीब कारीगरो के घरो की तरह यूसुफ का सारा घर एक कोठरी थी जिसमे सिर्फ सामने के दरवाज़े से रोशनी आ सकती थी। वही उसकी दूकान थी, वही काम करने की जगह और वही रसोई। उसी मे वह और उसके बाल बच्चे रहते थे। उसी मे सब खाते थे, उसी मे पढ़ते और उसी मे सोते थे। घर मे न कोई मेज़ थी न कुरसी। दूसरे ग़रीब फिलिस्तीन वालो की तरह ये लोग खड़ाऊं या चप्पलें पहनते, या नंगे पैर रहते थे। चप्पलें घर के बाहर उतार दी जाती थीं। घर के अन्दर फर्श पर बैठने के लिये चटाई के कुछ टुकड़े पड़े रहते थे, जिन पर लोग उसी तरह पालथी मारकर बैठते थे जैसे हिन्दुस्तान मे। दीवाल मे एक टांड़ होता था जिस पर पकाने और खाने के मिट्टी के बर्तन रहते थे। बिछौने रात को बिछा लिये जाते थे और दिन मे लपेटकर उसी टांड़ पर रख दिये जाते थे। एक कोने मे लकड़ी के एक रंगीन सन्दूक के अन्दर किताबें और ख़ास खास चीजें रखी रहती थीं। खाने के लिये एक छोटी सी रंगीन लकड़ी की चौकी थी जिस पर खाना रखा जाता था। खाने मे आम तौर पर चावल मांस और

तरकारियाँ होती थीं। दिया रखने की दीवट छत के बीच से लटकी रहती थी। यह दीवट ही कमरे की सब से सुन्दर चीज़ होती थी। दरवाज़े के पास पानी के लिये मिट्टी के बड़े बड़े लाल लाल घड़े रखे रहते थे। अमीरो के घर इससे कही बड़े और शानदार होते थे।

बालक ईसा का पहनावा था—नीचे एक छोटी सी धोती या तहबन्द, ऊपर सामने से खुला हुआ एक लम्बा लाल रंग का चोगा, जिसके दोनो पल्लो को एक दूसरे से मिलाए रखने के लिये एक कमरपट्टा बंधा रहता था।

पहले उसे मा बाप ने लिखना पढ़ना सिखाया और देश का जैसा रिवाज था यहूदी धर्म की किताबो से बहुत सी कहानियाँ सुनाईं। कुछ बडा हुआ तो गांव की यहूदी धर्मशाला (सिनेगॉग) की पाठशाला मे भेजा गया। इन पाठशालाओ मे ख़ास तालीम मजहबी किताबो ही की दी जाती थी जिनके बहुत से हिस्से बच्चों को ज़बानी याद करा दिये जाते थे। ईसा अपनी मॉ का जेठा बेटा था। पाठशाला से आने के बाद, जब माँ घर का काम करती तो ईसा अपने छोटे भाई बहनो को रखता और घर के कामों मे माँ का हाथ बॅटाता। बालक ईसा पहले ही से नरम दिल का और दयावान था। दूसरों की मदद करने के लिये वह सदा उतावला रहता। शुरू से ही उसे सोचने समझने की भी आदत थी। यहूदियो मे जैसा रिवाज चला आता था ईसा का बचपन में ही ख़तना करा दिया गया था।

यरुसलम में पहली बार

यहूदी धर्म का सब से बड़ा मन्दिर यरुसलम मे था। यरुसलम का शहर ईसा के गांव के करीब पचास मील दक्खिन मे था। ईसा के बाप हर साल बसन्त के मौके पर और गांव वालों के साथ साथ यरुसलम की यात्रा को जाया करते थे। बालक ईसा के दिल मे भी अपने मज़हब के उस पुराने और सब से बड़े तीर्थ स्थान को देखने की चाह बढ़ती गई। जब वह बारह वर्ष का हुआ उसके माँ बाप उसे अपने साथ यरुसलम ले गए। अरब की तरह फिलिस्तीन में भी गधे की सवारी का आम रिवाज था। वहां के गधे मज़बूत और सुन्दर होते हैं। लोग दूर दूर से ज़्यादहतर पैदल यरुसलम आते थे। लेकिन हर गिरोह के साथ कुछ गधे होते थे। जिन पर औरतें, बच्चे और कमज़ोर बारी बारी बैठ लेते थे।

कई दिन चलकर ये लोग यरुसलम पहुँचे। बालक ईसा ने जो कुछ वहां देखा उसका उस पर गहरा असर पड़ा। उसनें कुछ अच्छी अच्छी चीजें भी देखीं। पर दूसरी तरफ बलि चढ़ाए जाने के लिये बिकते हुए हज़ारो जानवरो, चढ़ावे के लिये सिक्के और खेरजा बेचने वालो और जानवरों की बड़ी बड़ी

कुरबानियां (यज्ञो) और हर तरह के पूजा पाठ को देखा। उसके छोटे से दिल मे तरह तरह के शक पैदा होने लगे।

यरुसलम के मन्दिर मे मजहबी किताबो की तालीम का एक बहुत बड़ा मदरसा था, जो अपने जमाने की एक युनिवर्सिटी कहला सकता था। बड़े बड़े आलिम पण्डित वहाँ दूर दूर से आने वाले यहूदी विद्यार्थियो को तालीम देते थे। ईसा के दिल में धर्म को जानने की लगन थी, उसका ध्यान इन पढ़ाने वालो की तरफ गया। उसके गरीब माँ बाप उसे यरुसलम मे रखकर तालीम न दे सकते थे। लेकिन अब जब कभी उसके माँ बाप पूजा पाठ मे लगे होते थे ईसा एक गुरू जी के सामने बैठकर उपदेश सुनता रहता था। कई दिन गुजर गए। एक दिन उसके साथी अपने गांव वापस जाने के लिये तय्यार हो गए। वे सब चल भी दिये। ईसा उसी मदरसे में रुक गया और उपदेश सुनता रहा। कुछ दूर निकल जाने के बाद उसके माँ बाप ने देखा कि ईसा साथ में नही है। उन्होंने यरुसलम लौटकर बेटे को शहर मे ढूँढ़ना शुरू किया। तीन दिन की तलाश के बाद उन्हे ईसा किसी मदरसे मे एक गुरू जी के सामने जमीन पर बैठा हुआ दिखाई दिया। वह वहां उपदेश सुन रहा था और अपनी शंकाएं, अपने शक गुरू जी के सामने पेश कर रहा था। शुरू से ही बालक ईसा के दिल मे सचाई को और धर्म को जानने की जो लगन थी उसका इससे खासा पता चलता है। ईसा माँ बाप के साथ अपने गांव लौट आया।

सचाई की खोज

इसके बाद तीस वर्ष की उमर तक हज़रत ईसा की ज़िन्दगी का बहुत कम हाल मिलता है। इतना पता चलता है कि उन दिनो वह कई बार यरुसलम भी गए। इसी बीच उनके बाप मर गए। बड़ी मेहनत के साथ उसी गांव में रहकर और शायद कुछ दिनो के लिये अपनी ननिहाल के पास एक दूसरे गाव 'काना' मे रह-कर बढ़ई का काम करके वह अपनी बूढ़ी माँ और अपने छोटे भाई बहनो सब का गुज़ारा चलाते रहे। जो वक़्त बचता उसे वह आस पास के कमज़ोरों, बूढ़ो और बीमारो की सेवा मे खर्च करते। बच्चों से उन्हे ख़ास प्रेम था। गांव के बच्चे उनसे खूब हिले हुए थे। अपने आस पास के लोगो की बातों, उनके दुखो और उनकी हालत को वह ध्यान से देखते सुनते रहे। यरुसलम के अन्दर इन चीज़ो को देखने और समझने का उन्हें और भी अच्छा मौका मिला। उन्होने देखा कि उनके देश वाले एक तरफ़ तो रोमी हाकिमो के ज़ुल्मो से पिस रहे थे और दूसरी तरफ़ पुरोहितो के जाल, तरह तरह के पाखण्डो, झूठे मज़हबी खयालो, सड़े गले रीति रिवाजो, जानवरों की कुरबानियो, और छुआछूत

के जंजाल मे फंसे हुए थे। नौजवान ईसा बहुत बार सोच विचार मे डूबा हुआ दिखाई देता। लोगो के दुःखो को दूर करने के लिये बेचैनी उसके दिल मे उतनी ही जोर की थी जितनी सच्चाई को जानने की लगन। ईसा ने व्याह करने से इनकार कर दिया।

उस छोटी उमर में ही हज़रत ईसा ने अपने आस पास के लोगो के खयालो की गहरी छान बीन शुरू कर दी। फिलिस्तीन की हवा मे लोगो के खयालो को बदलने और सच्चे मजहब को कायम करने के लिये काफ़ी मैदान तय्यार हो चुका था। सिरा के बेटे ईसू और हिल्लेल जैसे सुधार करने वालो की बताई हुई बातों को ईसा ने लोगों से बहुत ध्यान देकर सुना और उन पर गौर किया। इन बातों या उपदेशों का जिक्र आगे आ चुका है। यहूदी धर्म की पुरानी किताबों मे भी जहा सैकडों अनहोनी बातें और हजारों बरस के पुराने गलत खयाल भरे हुए हैं वहां बीच बीच में पुराने नबियों और महात्माओं के मुँह से निकली हुई बहुत सी कीमती और सुन्दर सचाइयाँ भी मौजूद थीं। फिलिस्तीन की उन दिनों की बोली 'अरामी' (Aramean) कहलाती थी। 'अराम' सुरिया या शाम का एक पुराना नाम है। अरामी में और पुरानी मज़-हबी किताबों की जबान इबरी या इबरानी (Hebrew) में करीब करीब वैसा ही फ़रक़ था जैसा हिन्दी और सस्कृत में। ईसा इबरानी न जानते थे। लेकिन इबरानी किताबों के कुछ अरामी

तरजुमे (Targums-अनुवाद) और 'मिद्राशिम' (Midrashim) शरह या टीकाएं उन्होंने नाज़रथ की धर्मशाला (Synagogue) के स्कूल मे पढ़ीं थीं। इस सब पुराने ढेर मे से उन्होंने अब बड़ी मेहनत के साथ सचाई के दाने बीनने शुरू किये।

यहूदी धर्म की किताबों मे ईसा को दाऊद के भजन सब से ज्यादह पसन्द आए। दूसरी चीज़ों के पढ़ने का भी उन्हे शौक़ था। इनमे जगह जगह उन्हे वे सचाइयाँ मिलीं जिनका उनके बाद के जीवन पर खासा गहरा असर पड़ा। 'तौरेत' (इबरानी शब्द 'थोरा' या 'धर्म') मे जब कि एक तरफ यह लिखा था कि 'याह्वे' की पूजा छोड़कर दूसरे की पूजा करने वाले को मार डालना जायज़ है और मज़हबी रीति रिवाजों के मामले मे छोटे मोटे क़सूरों की सज़ा भी मौत बताई गई थी, वहां दूसरी तरफ मूसा की वे मशहूर दस आज्ञाएं भी मौजूद थी जिनमे सब आदमियो को बराबर बताया गया है, और नेकी यानी सदाचार के मोटे मोटे उसूलों को ही असली धर्म बताया गया है।

बाइबिल मे जहाँ, जगह जगह धर्म के नाम पर जानवरों की बलि दिये जाने का ज़िक्र था, वहां इस तरह के उपदेश भी मौजूद थे—

"मैं दया चाहता था, क़ुरबानी (बलि) नहीं चाहता था। यज्ञ में आहुतियों* की निस्बत मैं ईश्वर का ध्यान करना ज़्यादा पसन्द करता

* हवन की आग में जो चीज़ें डाली जाती हैं उन्हें आहुतिया कहते है।

था पर लोगों ने आदम की तरह ईश्वर की आज्ञाओं को तोड़ा। उन्होंने मेरे साथ दग़ा की।"*

नबी इसाया की किताब मे लिखा था—

"ईश्वर कहता है तुम मेरे नाम पर जो धड़ाधड़ जानवरों की क़ुरबानियाँ करते हो इनसे क्या फ़ायदा? हवन की आग में जो तुम भेड़ों को काट काटकर डालते हो और जानवरों को खिला खिलाकर मोटा करके उनकी चरबी की आहुतियाँ देते हो, इस सब से मैं उकता गया हूं। साडों, मेंमनों या बकरों की हत्या से मुझे ख़ुशी नहीं होती... जब तुम मेरे सामने आते हो तो मेरे मन्दिर के अन्दर तुमसे यह सब करने को किसने कहा? ये फ़िज़ूल के चढ़ावे लाना बन्द करो। तुम्हारे हवन की गन्ध से मुझे नफरत है। तुम्हारे अमावस के त्योहार, तुम्हारे सब्बथ, (सनीचर) तुम्हारी धर्म सभाएं मैं नहीं सह सकता। यह सब पाप है।......मेरी आत्मा तुम्हारी अमावसों और तुम्हारे आजकल के त्योहारों से नफरत करती है। मुझे उन्हें देखकर दुख होता है।.:....जब तुम अपने हाथ फैलाओगे मैं अपनी आखें बन्द कर लूंगा। जब तुम लम्बी लम्बी प्रार्थनाएं करोगे, मैं नहीं सुनूंगा, क्यों कि तुम्हारे हाथ ख़ून से सने हुए हैं। अपने हाथों को धोओ। अपने बदन को पाक करो। अपने बुरे कामों को मेरी आखों से दूर रखो। बुराई करना बन्द करो। भलाई करना सीखो। समझ और तमीज़ से काम लो। दुखियों का दुख दूर करो। यतीमों, अनाथों को पालो। बेवाओं को सहारा दो। फिर आओ और मुझसे बात करो........

---

* Hosea 6, 6-7.

यरुसलम का शहर जो एक सती औरत की तरह पाक था अब बाज़ारू औरत की तरह हो गया है। जहा समझ राज करती थी, जहां धर्म निवास करता था वहा अब हत्यारे भरे हुए हैं।*

"देखो व्रत यानी रोज़े के दिन भी तुम ख़ुद तो सुख भोगते हो और दूसरों को तकलीफ देते हो। तुम झगड़े और तक़रार के लिये व्रत करते हो। तुम सब तरह की बुराई करते रहते हो।......क्या मैंने ऐसे ही व्रत का हुकुम दिया था......क्या तुम इसे व्रत कहोगे? क्या यह ईश्वर को मंज़ूर हो सकता है? जिस व्रत का मैंने हुकुम दिया है वह यह है—जिन बुराइयों ने तुम्हे बांध रखा है उनके बन्धन तोड़ डालो, दूसरों के ऊपर जो तुमने बोझ लाद रखे हैं उन्हें हलका कर दो, दुखियों को आज़ाद करो और दूसरों के कन्धों से जुए हटा लो। जिस व्रत या रोज़े की मैंने आज्ञा दी है वह यह है कि भूखों को अपनी रोटी में से रोटी दो। जो ग़रीब हैं और बेघरबार के हैं उन्हें अपने घर में जगह दो। जो नंगे हैं उन्हें कपड़े पहनाओ, और दुखी लोगों से अपने को न छिपाओ। तब तुम्हारे अन्दर की रोशनी सुबह के सूरज की तरह चमक उठेगी। जब तुम सब्बथ (सनीचर) के पाक दिन बजाय अपनी मनमानी करने के इस तरह मेरी ख़ुशी की बातें करोगे तब तुम्हें अपने ईश्वर से सच्चा सुख हासिल होगा।"†

तौरेत मे जहाँ दाँत के बदले दाँत और आँख के बदले आँख लेने की इजाज़त थी वहाँ इस तरह की बातें भी थीं—

* Isaiah I, 11-21

† Isaiah, ch. 58

"किसी से बदला न लो……अपने पड़ौसी से वैसा ही प्रेम करो जैसा ख़ुद अपने से करते हो। तुम सब का एक ईश्वर अल्लाह है।"*

"उसे (सच्चे ईश्वर भक्त को) अगर कोई मारता है तो वह अपना गाल उसके सामने कर देता है।" †

"जिन्होंने मुझे मारा उनके सामने मैंने अपनी पीठ कर दी, और जिन्होंने मेरे बाल उखाड़े उनके सामने मैंने अपने गाल कर दिये।" ×

तौरेत में आता है—

"तुम लोग इसी तरह पाक और साफ बनो जिस तरह पाक और साफ़ ईश्वर है।" +

इसी तरह मिस्र के यहूदी फाइलो ने एक ऐसे पाक धर्म की तरफ लोगों का ध्यान दिलाया था, जिसमें न पुरोहितों की ज़रूरत थी और न बाहर के कर्मकाण्ड यानी रीति रिवाजों की जिसका काम सिर्फ़ दिल की सफ़ाई से था, जिसमें सब के पैदा करने वाले एक ईश्वर के साथ अपनी आत्मा का नाता जोड़कर सिर्फ़ उस जैसे बनने की कोशिश करना ही आदमी का असली फर्ज़ और धर्म था।

---

* Leviticus 19,18.

† Ibid 3, 30

× Isaiah 50,6.

+ Leviticus 19,2.

पुरानी किताबों मे यहूदी और ग़ैर यहूदी के फरक और यहूदी होने के घमण्ड को झूठा बताते हुए कई जगह ग़ैर यहूदियों को धर्मात्मा और यहूदियों को धर्म से गिरा हुआ कहा गया है।*

यह खयाल कि ईश्वर ग़रीबों और कमज़ोरों की तरफ से अमीरो और ताकतवरो से बदला लेगा यहूदी बाइबिल (तौरेत) मे शुरू से आख़ीर तक भरा हुआ है। अमीरों और मालदारों की जगह जगह बहुत बुराई की गई है, और ग़रीबों की उतने ही ज़ोरो के साथ तरफ़दारी की गई है।

"अफसोस है तुम लोगों पर जो अपने पुरखों की असली दौलत यानी ग़रीबो की झोपड़ियों को नफरत की निगाह से देखते हो। अफसोस है तुम पर जो दूसरों के पसीने से अपने लिये महल खड़े करवाते हो। इनका एक एक पत्थर और इनकी एक एक ईंट पाप है।" †

पुराना रिवाज चला आता था कि हर सिनेगॉग में सात दिन में एक बार ग़रीबों की मदद के लिये चन्दा जमा किया जाता था, और कोई कोई धर्मात्मा यहूदी इस तरह के दान में बड़ी बड़ी रकमे भी दे देते थे।

हर नए रिफ़ारमर के लिए सच्चे रास्ते को खोज निकालने का काफी सामान चारों तरफ मौजूद था। आदमी की ज़िन्दगी की बुनियादी सचाई शुरू ज़माने से सब जगह उसके दिल

---

* Malachi i, 11-12.
† Enoch XCIX, 13-14.

में पैदा होती और खिलती रही है। हजारों वर्ष का तजरुबा आदमी को यह भी बता चुका है कि इन अटल बुनियादी सच्चाइयों पर चलना ही आदमी की तरक्की और उसके भले का रास्ता है। जब जब आदमी ने इन सच्चाइयों पर चलने की कोशिश की है उसके पैर सब के सुख और सब की बढ़ौती की तरफ़ बढ़े हैं और जब जब आदमी उनसे भटका है ठोकरें खाता रहा है। इसी लिये हजारों वर्षों से दुनिया के अवतारों, पैगम्बरों, तीर्थंकरों, महात्माओं और ऋषियों का काम किसी नई सचाई का पता लगाना नहीं रहा है, बल्कि उसी पुरानी सचाई के ऊपर से अपने जमाने के ढकनों और गर्द ग़ुबार को हटाकर उसका नए सिर से ऐलान करना, प्रचार करना और तसदीक करना रहा है। इसके लिये दो ख़ास बातों की जरूरत होती है। एक सच को झूठ से अलग कर सकने की ताक़त और दूसरे अपने ऊपर क़ाबू हासिल करके उस सच को अपने अन्दर क़ायम या साक्षात कर लेने की क़ाबलीयत। ठीक यही काम उस वक्त हजरत ईसा के सामने था।

गुरू की तलाश

हज़रत ईसा को एक जिन्दा गुरु की भी ज़रूरत महसूस हुई। उन्होने सुना कि यहूना नाम का एक महात्मा जार्डन नदी के किनारे सच्चे खोजियों को धर्म का उपदेश देता है। ज्यों ही उनके दूसरे भाई मेहनत करने और माँ और छोटे भाई बहनों के लिए कमाई करने के क़ाबिल होगए, एक दिन हज़रत ईसा अपनी बूढ़ी माता, भाई बहनो और गांव वालों को नमस्कार करके जार्डन नदी के किनारे जंगल में महात्मा यहूना से उपदेश लेने के लिये चल दिये।

हज़रत ईसा ने यहूना के उपदेशों को सुना। उन्हें कुछ शान्ति मिली। उन्होने यहूना को अपना गुरु बनाने की इच्छा की। यहूना ने अपने कायदे के मुताबिक ईसा का हाथ पकड़कर पहले नदी में ग़ोता लगवाया और फिर दीक्षा दी यानी चेला बना लिया। यहूना की इस दीक्षा के बाद कहते हैं हज़रत ईसा को यह आकाशवाणी (आसमानी आवाज़) सुनाई दी—"आज से तू मेरा प्यारा बेटा और मैं तेरा बाप हुआ।"❀ हज़रत ईसा की

❀ Luke 3-23.

उमर इस समय करीब तीस वर्ष की थी।

इसके बाद वह एक ऐसे सुनसान जंगल मे चले गए 'जहां पेड़ों और जानवरो के सिवा कोई साथी न था।' यह वही जंगल था जिसमें रहकर यहूना ने उपदेश देना शुरू करने से पहले तपस्या की थी। इस जंगल मे ऐस्सिनी जमात के साधुओ की एक पुरानी और मशहूर बस्ती थी। यहूना और ईसा दोनों ने इन महात्माओं से बहुत कुछ सीखा। यहां से यरुसलम को जाते हुए रास्ते मे वह "जैतूनों का पहाड़" आता था जिस पर बाद मे हजरत ईसा ने कई बार उपदेश दिया। कुछ दिनों यहां रहकर हजरत ईसा ध्यान, सोच विचार और ईश्वर प्रार्थना करते रहे। उन दिनों एक बार उन्होने चालीस दिन का लम्बा रोजा भी रखा।

हजरत ईसा के इस लम्बे उपवास के बारे मे इंजील मे बहुत सी बातें लिखी हैं। लिखा है कि इन चालीस दिन के अन्दर शैतान ने उन्हे तरह तरह से बहकाने की कोशिश की और कई तरह के लोभ दिये और फरिश्तो ने आकर उन्हे खाना पहुँचाया और तसल्ली दी। ये किस्से जरथुस्त्री (पारसी) और बौद्ध किताबों के इसी तरह के किस्सो से बिलकुल मिलते हैं और मुमकिन है इन्हीं से लिये गए हो। अगर इनका कोई मतलब समझ मे आ सकता है तो वह अलंकार यानी किस्से के रूप मे एक उसूल समझाना हो सकता है।

कहते हैं इस उपवास मे महात्मा ईसा को बहुत बड़ी शान्ति

मिली। उनकी भीतर की (ज्ञान की) आँख खुल गई। उन्हे अब महसूस होने लगा कि अपने दुखी और ग़रीब देश वालों मे सच्चे धर्म का प्रचार करना ही मेरी ज़िन्दगी का मकसद है और यही मुझे ईश्वर का हुकुम है। इसके बाद भी कभी कभी किसी पहाड़ पर या बयावान जंगल मे जाकर हज़रत ईसा बराबर कई कई दिन तक सोच विचार और ध्यान मे रहा करते थे।

यहूना का क़त्ल

इतने में एक और बात हुई जिससे हजरत ईसा की रही सही झिझक भी जाती रही। रोमन हाकिमों के जुल्म बढ़ रहे थे। गैलिली प्रान्त की हुकूमत जालिम हैरॉड के बेटे हैरॉड अन्तिपास (Herod Antipos) के हाथों में थी। हैरॉड की बहुत सी बुराइयों में से एक यह थी कि अपने भाई फिलिप की बीवी के साथ उसका बेजा सम्बन्ध था। हैरॉड का विवाह एक अरब सरदार हरीस की लड़की के साथ हो चुका था। हैरॉड ने उसे छोड़कर फिलिप की बीवी के साथ विवाह करना चाहा। यहूना ने हैरॉड से कहला भेजा कि ऐसा करना पाप है और तुम्हें इससे बचना चाहिये। इस तरह का सम्बन्ध यहूदी धर्म के भी खिलाफ था। नाराज होकर हैरॉड ने यहूना को पकड़वाकर कैद कर दिया।

हजरत ईसा अब चुप न बैठ सके। वह बाहर निकले। यह बात शायद सन् २६ ईसवी की गरमियों की है। इस बार अपने जन्म स्थान नाजरथ जाने के बजाय वह और उत्तर में कैपरनाम पहुँचे और वहाँ के गरीब किसानों और मछुओं को

सच्चे धर्म का उपदेश देने लगे।

हज़रत ईसा यहूना को अपना गुरू मानते थे। उन्हीं के कहने पर चलने की कोशिश करते थे। यहाँ तक कि जब हज़रत ईसा ने उपदेश देना शुरू किया तो सब से पहले शब्द जो उनके मुँह से निकले वह वही थे जो यहूना अकसर कहा करते थे—"अपनी बुराइयों के लिए पछताओ, ईश्वर का राज नज़दीक है।"* ऐसे ही हज़रत ईसा के उपदेशो मे और भी वहुत से फ़िक़रे ज्यो के त्यो यहूना के आते है।

हज़रत ईसा ने इस मौके पर उपदेश दिया कि—

सब आदमी भाई भाई हैं, ईश्वर सब पर दया करने वाला, सब का बाप है। वह सबसे प्रेम करता है। ईश्वर की सच्ची पूजा जानवरों की बलि चढ़ाना या लम्बी लम्बी रटी हुई प्रार्थनाएँ, दुआएँ करना नहीं है, बल्कि अपने आपे को भूलकर (ख़ुदी को मिटाकर) सब तरह के पापों से बचते हुए† बिना फ़रक़ किये सब की प्रेम के साथ सेवा करना है।"

यहूना को जेल मे ही अपने चेले के कामो का पता लग गया। यहूना बहुत ख़ुश हुए। अपने मानने वालो को उन्होंने अब हज़रत ईसा के पास भेजना शुरू कर दिया। हज़रत ईसा यहूना को कितना मानते थे यह इंजील के नीचे लिखे शब्दो से ज़ाहिर है। कुछ लोग जो जंगल मे यहूना के उपदेश सुन चुके

---

*Math III, 2, IV-17

† बौद्ध गाथा—"सब्ब पापस्स अकरनम् कुसलस्स उपसम्पदा"

थे हज़रत ईसा के पास पहुँचे। हज़रत ईसा ने उनसे कहा—

"आप लोग जंगल में किसकी खोज में गए थे? क्या किसी नबी की? बेशक मैं आपसे कहता हूं वह नबी से बढ़कर है। मैं आपसे कहता हूँ कि जितने लोग भी आज तक किसी औरत के पेट से पैदा हुए हैं उनमें बपतिस्मा देने वाले यहूना से ज्यादह बड़ा आज तक कोई पैदा नहीं हुआ।"*

जेल में हैरॉड ने यहूना से कई बार अपने बारे में सवाल किये। यहूना ने बार बार वही जवाब दिया। इस पर हैरॉड ने महात्मा यहूना का सर कटवाकर एक ताश में रखकर अपने भाई फिलिप की बीबी के पास उसे ख़ुश करने के लिये भेज दिया। यहूना के कुछ चेले यह ख़बर लेकर हजरत ईसा के पास पहुँचे।

हज़रत ईसा ने ख़बर सुनते ही यहूना के बारे में कहा— "वह एक जलता हुआ रोशन चिराग था।"† ख़बर सुनकर वह थोड़ी देर के लिये एक सुनसान जंगल में चले गये। उसके बाद घूम घूमकर रास्तों पर, खेतों में, नदियों के किनारे और बाजारों में लोगों को उपदेश देना शुरू किया। बाद में भी जब जब मौका मिल सका हज़रत ईसा ने यहूना, उनके उपदेश और उनकी दीक्षा का बड़ी इज्जत के साथ ज़िक्र किया है।

उस ज़माने के लोग यहूना को 'नबी' कहते थे। बहुत से

---

*Math., ch II, 9-II.

† John, V 35.

ईसाई यहूना को सबसे पहला ईसाई शहीद मानते हैं। यहूना की जमात कुछ दिनों तक अलग चलती रही। बाद में यहूना के मानने वाले हज़रत ईसा के मानने वालों मे मिलकर एक हो गये। यही यहूना का मरते वक़्त का हुकुम था।

यहूना की सादा और तपस्वी ज़िन्दगी का तरीका बहुत दिनो तक फ़िलिस्तीन में चलता रहा। सन् ५० ईसवी के करीब बानू (Banou) नामक एक मशहूर सन्त उसी तरह जंगल मे रहता था, सिर्फ पत्तो से अपने बदन को ढकता था, जंगली पत्ते और फल फूल खाकर रहता था और रात दिन मे कई बार ठण्डे पानी मे नहाता था। हज़रत ईसा की मौसी का लड़का जेम्स भी इसी तरह का तपस्वी साधु था।

हज़रत ईसा का स्वभाव और रहन सहन

हज़रत ईसा के स्वभाव मे सब से बडी बात यह थी कि उनका दिल प्रेम और दया से इतना भरा हुआ था कि उसमे किसी दूसरी चीज के लिये जगह ही न थी। इस एक बात मे हजरत ईसा दुनिया के और सब महापुरुषो से अलग चमकते हुए दिखाई देते हैं। उन्हे कमजोरों, गरीबो और दुखियो के साथ प्रेम था। गिरे हुए, बदचलन और बुरे लोगो के साथ भी उन्हे वैसा ही गहरा प्रेम था। बुराई से नफरत करते हुए भी बुरे आदमी से प्रेम करना, इस ऊँचे उसूल की वह जिन्दा मूर्ति थे। दीनता और इनकसार उनमें कूट कूट कर भरे थे। ये ही बातें उनके वचनो मे और उनके चेहरे पर चमकती रहती थी। किसी को जरा सा भी नुकसान पहुँचाना या जानबूझ कर किसी का दिल दुखाना उनके लिये नामुमकिन था। इसीलिए वह अकसर बेवाओ, गरीबो यहां तक कि गिरी हुई समझी जाने वाली बाजारी औरतो के यहां भी ठहरते थे। यहूदी उन दिनों रोमी सरकार के अफ़सरों और खास कर टैक्स जमा करने वालों को बडी नफरत की निगाह से देखते थे और उनके साथ किसी

तरह का मेल जोल न रखते थे। हज़रत ईसा इन लोगों के यहां भी उसी तरह ठहरते थे, उनके साथ खाते पीते, उनसे प्रेम करते और उन्हें उपदेश देते जिस तरह दूसरो के यहाँ। उनका दिल इस बारे मे इतना नरम हो गया था कि शराव और गोश्त दोनो से परहेज़ करने वाले सन्त यहूना के चेले और खुद अहिंसा के उपदेशक होते हुए भी जब कभी कोई उन्हे प्रेम के साथ गोश्त या शराब देता तो वह उससे भी इनकार न करते। वह गिरे हुओं के साथ अपने को एक कर लेना चाहते थे। अपने को उनसे किसी तरह बड़ा ऊँचा या ज्यादह पाक पवित्र दिखाना उन्हे प्रेम के खिलाफ मालूम होता था।

शायद इसी तरह के खयाल से अहिंसा के सब से बड़े हामी और प्रचारक महात्मा बुद्ध ने अपने भिक्खुओ (उपदेशक साधुओं) तक को इस बात की इजाज़त दी थी कि अगर कोई मामूली आदमी प्रेम के साथ भोले स्वभाव से तुम्हे भिक्षा मे मांस दे दे तो तुम उसे भी लेकर प्रेम से खा लेना। लिखा है कि खुद महात्मा बुद्ध की मौत अस्सी वर्ष की उमर मे एक लम्बे उपवास के बाद किसी ग़रीब चाण्डाल के यहां से भिक्षा मे सुअर का माँस खाकर हुई थी।

हज़रत ईसा की ज़िन्दगी की तारीखो का कुछ ठीक पता नहीं चलता। पर ज्यादहतर विद्वानो की राय है कि उनका फ़िलिस्तीन में उपदेश देने का सारा ज़माना यहूना की गिरिफ़्तारी से लेकर हज़रत ईसा के सूली पर चढ़ाए जाने तक अट्ठारह

महीने से ऊपर न था।*

उनका उपदेश देने का तरीका वही था जो उस ज़माने के दूसरे मशहूर यहूदी महापुरुषों और सुधारकों, जैसे शेमाइया, अन्तालियन, हिलेल, शम्माइ, यूदा और गमालिएल का तरीका था। ये लोग आम तौर पर किताबें नही लिखते थे। जगह जगह थोड़े से लोगो को इकट्ठा करके छोटे छोटे फिकरो या कहावतो मे उपदेश देते थे, जिससे उनके उपदेश एक से दूसरे को पहुँचकर लोगो को ज़बानी याद रह सके। थोडे बहुत चेले या मानने वाले इनमे से हर एक के आस पास जमा हो जाते थे। लोग इन्हे 'रब्बी' (मेरे स्वामी या मेरे मौला !) कहकर पुकारते थे। बाद मे हरेक के कुछ चेले इनके उपदेशो को जमा करके लिख डालते थे। यही ढग हज़रत ईसा का था। इनमे से कोई कोई एक जगह जमकर एक गिरोह या सतसंग अपने आस पास खडा कर लेते थे और कोई कोई हज़रत ईसा की तरह एक बेघरबार के बटोही की तरह घूम घूम कर ही प्रचार करते रहते थे।

फिलिस्तीन मे इस तरह के बडे बड़े महात्मा अकसर उपदेश देने के साथ साथ अपने गुजारे के लिये कोई छोटी मोटी दस्तकारी भी करते रहते थे जो आम तौर पर उनका खानदानी धन्धा होती थी। मशहूर रब्बी युहानन हमेशा मोची का काम करते रहे। रब्बी इसाक लोहार थे और बराबर उन्होंने अपना

*Encyclopedia Brittanica, 14th edition.

काम जारी रक्खा। वैसे ही जैसे हिन्दुस्तान मे कबीर बराबर जुलाहे का काम करते रहे और रैदास चमार का। इस तरह के काम छोटे या बेइज्जती के न समझे जाते थे। कुछ दिनों बाद ईसाइ महात्मा सेएट पाल, बहुत बड़े विद्वान होते हुए भी अपने गुज़ारे के लिये तम्बू, खेमे सीने का काम करते रहे। हज़रत ईसा यहूना के चेले बनने से पहले वढ़ई का काम किया करते थे। लेकिन इसके बाद उन्होने अपने गुज़ारे के लिये कभी कोई काम नही किया। उनकी ज़िन्दगी विलकुल एक सच्चे हिन्दू साधु या बौद्ध भिक्खु की सी ज़िन्दगी थी।

कभी कभी ज़रा दूर के शहरो या ग़ैर यहूदी आवादियों मे भी हज़रत ईसा के जाने का ज़िक्र आता है, लेकिन उनके काम का ख़ास मैदान इस सारे अरसे मे केपरनाम का क़स्बा और टाइवीरियास झील के किनारे किनारे या उसके आस पास के चार पांच गांव ही थे। यह वही जगह थी जहाँ कुछ साल पहले, जब कि ईसा अभी वालक थे, यूदा की बाग़ी जमात काम कर चुकी थी और जहां यूदा ने लोगो को उपदेश दिया था कि रोमी हाकिमों को टैक्स न दो और तुम्हे आज़ाद कराने के लिए एक मसीहा जल्दी ही आने वाला है।

दो बार हज़रत ईसा ने अपने जन्म स्थान नाज़रथ जाकर उपदेश देने की कोशिश की। पर उनके नातेदारों और नाज़रथ के उन लोगो को जो उन्हे बचपन से जानते थे उनकी बातों पर यक़ीन न आया, लोगो ने उनकी हंसी उड़ाई और उन्हें निराश

होकर केपरनाम लौट आना पड़ा।

केपरनाम अनपढ़ मछली पकड़ने वालों का गांव था। इनमे कोई कोई ख़ास ख़ुशहाल भी थे। हज़रत ईसा अब इस गांव को अपना गांव कहने लगे। मछली पकड़ने वालो ही के दो घराने इस गांव मे ऐसे थे जो हजरत ईसा के वड़े भक्त होगए। वे उनसे वड़ा प्रेम करते थे और अकसर उनके यहाँ ही ठहरते थे। इनमे से एक घर मे दो सगे भाई साइमन और एण्ड्रू रहते थे।

साइमन वाद मे पीटर के नाम से मशहूर हुआ और एण्ड्रू हज़रत ईसा के गुरू यहूना से उपदेश ले चुका था। ये दोनो भाई आख़ीर तक अपना पुराना पेशा करते रहे। हजरत ईसा कभी कभी प्रेम के साथ उनसे कहा करते थे—

"मै तुम्हें मछलिया पकड़ने की जगह आदमी पकड़ने वाला वना दूँगा।" हज़रत ईसा को ज़िन्दगी भर इन दोनो से ज्यादह वफ़ादार चेले नही मिले।

दूसरे घर मे ऐसे ही और मछली पकड़ने वाले जॅवेदी और उसके वेटे जेम्स और यहूना रहते थे। ये दोनो भाई भी ईसाई धर्म के शुरू के दिनो मे वहुत मशहूर हुए है। जेम्स और यहूना की माँ सालोम और उनके आस पास की कई और औरतें हज़रत ईसा की वडी भक्त थी। ये अकसर हज़रत ईसा के साथ रहती और उनकी सेवा करना अपना वड़ा भाग्य समझती।

हज़रत ईसा के चेलो मे शायद सब से ज्यादह पढ़ा लिखा

मैथ्यू था जो पहले किसी टैक्स के दफ़्तर मे मुन्शी था और 'क़लम' चलाना जानता था। मैथ्यू ही ने सब से पहले हज़रत ईसा के कुछ उपदेशो को जमा किया। ये उपदेश मैथ्यू के मरने के शायद सौ वर्ष बाद बढ़ा घटा कर 'मैथ्यू की इञ्जील' के नाम से दुनिया के सामने आए। बाकी करीब करीब सब चेले अनपढ़, ग़रीब और ज्यादातर मछुए थे। कुछ इने गिने अमीर और बड़े लोगो पर भी बाद मे हज़रत ईसा का असर पड़ा।

हज़रत ईसा बहुत करके खुले मैदानो मे या खेतो मे या पहाड़ो पर या बाज़ारो मे उपदेश दिया करते थे। कभी कभी वह नाव मे बैठकर किनारे के लोगो को उपदेश देते थे और कभी कभी उन यहूदी धर्मशालाओ मे खड़े होकर भी उपदेश देते थे जो सिनेगाग कहलाती थीं, जो वहां के हर बड़े क़स्बे मे मौजूद थीं और जहां हर सनीचर को लोग जमा होकर पुरानी मज़हबी किताबो की कथाएं सुना करते थे। ऐसे मौको पर जैसा रिवाज था, हज़रत ईसा अकसर पुरानी किताबो के किसी एक अच्छे से फ़िकरे को लेकर उसी पर उपदेश देने लगते थे। कभी कभी लोग उनसे सवाल भी करते थे और शास्त्रार्थ या बहस भी होने लगती थी।

कहते हैं कि साइमन (पीटर) को और जेबेदी के दोनो लड़को जेम्स और यहूना को हज़रत ईसा ने कुछ योग (सलूक) या रूहानी अभ्यास (मश्क) करने का भी उपदेश दिया था।*

*'Life of Jesus', by Renan, p. 129.

हज़रत ईसा के सब चेले एक दूसरे को 'भाई' कहकर पुकारते थे। साइमन बारजोना को हज़रत ईसा सब से ज्यादह चाहते थे, अकसर उसकी किश्ती मे बैठकर उपदेश देते थे, उसे अपने मजहब का 'केफा' (पत्थर) यानी बुनियादी पत्थर कहा करते थे, इसी से बाद मे उसका यूनानी नाम "पीतर" (पीटर) (संस्कृत-प्रस्तर; हिन्दुस्तानी-पत्थर) मशहूर हुआ। पीटर ईसा को 'मसीहा' मानता था। ईसा और उनके बाकी ग़रीब साथियो का सरकारी टैक्स पीटर ही दिया करता था।

हज़रत ईसा का रहन सहन बहुत ही सादा, सख्त और संयमी था। उन्हें अपने ऊपर गज़ब का काबू था। वह ज्यादह-तर एक छोटी सी धोती या लंगोटी लगाकर रहते थे। पैदल सफ़र करते थे। रास्ते मे खुले आसमान के नीचे नंगी जमीन पर बिना तकिया लगाए सो जाते थे। जहां रहते ढूढ़ ढूढ़कर रोगियो यहां तक कि कोढ़ियो की सेवा करने और बच्चो से प्यार करने का उन्हे ख़ास शौक था। महलो और दरबारो की शान और उनके अन्दर के भोग विलास, ऐश आराम से उन्हें नफरत थी। गांव वालो से और गांव की सादा ज़िन्दगी से उन्हे प्रेम था। बीच बीच मे कभी कभी वह बड़े उदास दिखाई देने लगते थे। ऐसे मौको पर आम तौर पर वह कुछ देर के लिये और कभी कभी कई दिन के लिये किसी सुनसान जंगल मे या अकेले पहाडी पर चले जाते थे। इस बार बार के अकेले रहने का उनके दिल पर गहरा असर पड़ता था। दूसरो के साथ रहते

हुए भी वह कभी कभी रात रात भर अपने ईश्वर अल्लाह से दुआ मांगते और रोते रहते थे। उनका दिल शीशे की तरह साफ़ था। उनके शब्द सब के साथ बराबर प्रेम में सने होते थे और उनके दिल की गहरी से गहरी गहराई से निकलते थे। इसी लिये खासकर आम लोगो के दिलो मे उनके उपदेश जमकर घर कर लेते थे।

ग़रीबी को वे उसी तरह ऊँची और इज़्ज़त की चीज़ मानते थे जिस तरह ऐस्सिनी। मुमकिन है उन्होने यह बात ऐस्सिनियो से ही सीखी हो। लोभ करने या सामान जमा करने को वे सब से बड़ा पाप समझते थे। अपरिग्रह को यानी किसी चीज़ को अपना न समझने को वह सब से बड़ा गुण मानते थे। इसी लिए बहुत दिनो तक शुरू के ईसाइयो मे यह बराबर रिवाज रहा कि हर एक की चीज़ सारी जमात की चीज़ समझी जाती थी।

हज़रत ईसा के डेढ़ हज़ार साल बाद भी बहुत से ईसाई फ़िरक़ो मे ग़रीबी गौरव यानी फ़ख़्र की चीज़ समझी जाती थी, अपरिग्रह ईसाई धर्म का सब से ऊँचा उसूल माना जाता था और भीख मांगकर रहना एक इज़्ज़त की ज़िन्दगी गिनी जाती थी। कई फ़िरक़ों मे जो कुछ माल असबाब होता था वह सब की मिली हुई मिलकीयत समझा जाता था।

उपदेशों का .खुलासा

हजरत ईसा के उपदेशों का सब से अच्छा .खुलासा उनके मशहूर "पहाड़ी पर के उपदेश" (Sermon on the Mount) मे मौजूद है। दुनिया के धार्मिक उपदेशो मे यह 'उपदेश' बड़े ही ऊँचे दरजे का है। उसके कुछ टुकड़े ये हैं—

मुबारिक हैं वे जो ग़रीब हैं, स्वर्ग (बहिश्त) का राज उन्हीं के लिये है।

मुबारिक हैं वे जो ग़म मे डूबे हैं, उनकी ज़रूर तसल्ली की जावेगी।

मुबारिक हैं वे जो दीनता बरतते हैं, यह धरती उन्हीं को विरसे में मिलेगी।

मुबारिक हैं वे जो दूसरों की भलाई करने के लिये भूख प्यास सहते हैं, उन्हें जरूर भरपेट खाने को मिलेगा।

मुबारिक हैं वे जो दयावान हैं, उनके साथ भी दया की जावेगी।

मुबारिक हैं वे जिनका दिल साफ है, उन्हे परमात्मा के दर्शन मिलेंगे।

मुबारिक हैं वे जो लोगों में सुलह कराते हैं, वे परमात्मा के ख़ास बच्चे गिने जावेंगे।

मुबारिक हैं वे जिन्हें नेकी करने के क़सूर में तकलीफे दी जाती हैं, स्वर्ग का राज उन्हीं का है।

मत समझो कि मै पहले के धर्म को या पहले नबियों के हुकुमों को रद्द करने के लिये आया हूं। रद्द करने के लिये नहीं, बल्कि मैं उनकी कमी पूरी करने के लिये आया हूँ।

× × ×

तुमने सुना है पुराने धर्म की आज्ञा है 'किसी की जान न लो, और जो किसी की जान लेगा उसे ईश्वर सज़ा देंगे।'

लेकिन मै तुम से कहता हूँ जो कोई भी अपने किसी भाई पर गुस्सा करता है उसे ईश्वर की तरफ से सज़ा भोगनी होगी, और जो कोई अपने किसी भाई को कोई हलके से हलका बुरा शब्द भी कहेगा उसे 'जहन्न' (नरक) मे पड़ना होगा।

इसलिये अगर तुम पूजा का सामान लेकर मन्दिर में पूजा को जा रहे हो और तुम्हे याद आ जावे कि तुम्हारे किसी भाई को तुमसे कुछ भी दुख पहुँचा है तो उस सामान को वहीं छोड़कर लौट जाओ, पहले जाकर अपने भाई से सुलह करो और फिर आकर ईश्वर की पूजा करो।

× × ×

तुमने सुना है पहले के धर्म की आज्ञा है 'बदचलनी न करो।'

पर मै तुमसे कहता हूँ कि जो कोई किसी औरत की तरफ बुरी निगाह से देखता है वह अपने दिल मे बदचलनी के पाप का दोषी हो चुका।

अगर तुम्हारी दाहिनी आँख पाप कर बैठे तो उसे निकाल कर फेंक दो क्योंकि तुम्हारे लिये ज़्यादा अच्छा है कि तुम्हारा एक अंग नष्ट हो जाय बजाय इसके कि तुम्हारा सारा शरीर नरक में झोंका जावे।

और अगर तुम्हारा दाहिना हाथ पाप कर बैठे तो उसे काट कर फेंक दो क्योंकि ज़्यादा अच्छा है कि तुम्हारा एक अंग नष्ट हो जाय बजाय इसके कि तुम्हारा सारा शरीर नरक में फेंका जावे।

तुमने सुना है पुरानी किताबों में कहा गया है कि 'कभी झूठी क़सम न खाना और ईश्वर को गवाह ठहराकर जो वादा करो उसे पूरा करना।'

पर मै तुमसे कहता हूँ कभी किसी तरह की भी क़सम न खाओ। न आसमान की क़सम खाओ और न ज़मीन की, क्योंकि आसमान ईश्वर का तख़्त है और ज़मीन उसके पैरों की चौकी है।

न यरुसलम की क़सम खाओ, क्योंकि वह सब बादशाहों के बादशाह ईश्वर अल्लाह का शहर है।

न कभी अपने सर की क़सम खाओ क्योंकि तुम एक भी बाल काला या सफेद नहीं बना सकते।

पर जो कुछ कहो बस 'हा' या 'नहीं', इससे ज्यादा शब्द जो भी दूसरों को भरोसा दिलाने के लिये तुम्हारे मुँह से निकलेंगे वे अन्दर के किसी पाप की वजह से ही निकलेंगे।

तुमने सुना है पुरानी आज्ञा है कि 'जो तुम्हारी आँख निकाल ले उसके बदले में तुम उसकी आँख निकाल लो और दाँत के बदले में

दाँत' (यानी जितनी बुराई उसने तुम्हारी की है उससे ज़्यादा बदला न लो)।

पर मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम दूसरे की बुराई का मुक़ाबला ही न करो (Resist not evil) । बल्कि जो कोई तुम्हारे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे तुम दूसरा गाल भी उसके सामने कर दो ।

और अगर कोई तुम्हारा कुरता छीनना चाहे तो तुम अपना कोट भी उसे उतार कर दे दो ।

और जो कोई एक मील तुम्हें ज़बरदस्ती ले जाना चाहे, तुम दो मील उसके साथ चले जाओ ।

जो तुमसे मांगे उसे दो और जो तुमसे उधार लेना चाहे उससे मुंह मत फेरो, और न दी हुई चीज़ वापिस मांगो और न इसकी उम्मीद करो ।

पुरानी किताबों मे कहा गया है 'अपने पड़ोसी के साथ प्रेम करो और अपने दुशमन से नफरत करो ।'

पर मै तुमसे कहता हूं अपने दुशमनो के साथ प्रेम करो, जो तुम्हे कोसे तुम उन्हें दुआ दो, जो तुमसे नफ़रत करें तुम उनके साथ नेकी करो, और जो तुमसे दुशमनी करे और तुम्हें तकलीफ़ें पहुंचाए, तुम उनकी भलाई के लिये ईश्वर से प्रार्थना करो ।*

ताकि तुम अपने उस बाप ईश्वर के बच्चे कहला सको जो आसमान पर है, क्यो कि वह अपने सूरज की रोशनी भले और बुरे दोनों

---

* Compare Talmud of Babylon, Shabbath 88b, Joana 23 a.

तरह के लोगों पर एक सी भेजता है, और न्याय करने वाले और अन्याय करने वाले दोनों के लिये एक सा पानी बरसाता है। तुम उसी तरह भरपूर या कामिल (Perfect) बनो जिस तरह तुम्हारा आसमानी बाप (परमेश्वर) भरपूर है।

तुम जो कुछ ख़ैरात (दान) करो वह लोगों के सामने उन्हें दिखाने के लिए न करो।

जब कभी ख़ैरात करो तो तुम्हारा दाहिना हाथ जो कुछ दे उसका तुम्हारे बाँए हाथ को भी पता न होने पावे।

जो कुछ ख़ैरात करो छिपाकर करो और तुम्हारा बाप जो छिपी चीज़ों को देखता है खुले तुम्हें उसका फल देगा।

तुम जब ईश्वर से कुछ प्रार्थना करो तो मन्दिरों में या चौरस्तों पर खड़े होकर न करो बल्कि अपने घर के अन्दर जाकर दरवाज़ा बन्द करके उस सब के बाप से प्रार्थना करो जो दिलों के अन्दर के अन्दर में मौजूद है।

जब प्रार्थना करो तो रटे हुए फिक़रे (मन्त्र या आयत) मत दोहराओ। मत समझो कि तुम जितना ज़्यादह बोलोगे उतना ही ईश्वर ज्यादह सुनेगा।

ऐसा मत करो। तुम्हारे कहने से भी पहले तुम्हारा वह बाप जानता है कि तुम्हें किन चीज़ों की जरूरत है।

आम तौर पर इस तरह के शब्दों में प्रार्थना करो—

ऐ हमारे आसमानी बाप, तेरा नाम महान हो !

तेरा राज क़ायम हो, जिस तरह आसमान या स्वर्ग में उसी तरह ज़मीन पर तेरी इच्छा पूरी हो।

आज की हमारी रोज़ी हमें दो।

हमारे क़ुसूरों को माफ़ कर हमने अपने साथ क़ुसूर करने वालों को माफ कर दिया है।

हमे लोभ लालच मे मत डाल, हमें बुराई से बचा। असली राज हमेशा के लिए तेरा ही है। तेरा ही बल है, तेरी ही शान है। आमीन (शान्ति)!

अगर तुम लोगों के क़ुसूर माफ कर दोगे तो तुम्हारा स्वर्ग का बाप भी तुम्हारे क़ुसूर माफ कर देगा। पर जो तुम लोगों को माफ न करोगे तो तुम्हारा बाप तुम्हे भी माफ न करेगा।

जब तुम उपवास (रोज़ा) रखो तो लोगों को दिखाने के लिए सोग का सा चेहरा न बना लो, बल्कि सर पर तेल लगाओ और मुँह धोओ। जिससे लोगों को यह पता न चले कि तुमने उपवास रखा है, बल्कि तुम्हारे उस बाप को मालूम हो जो दिलों के अन्दर मौजूद है। और तुम्हारा बाप जो सब छिपी चीज़ों को देखता है तुम्हें खुले उसका फल देगा।

अपने लिये इस धरती पर ख़जाने जमा न करो जहाँ कीड़े और ज़ंग उसे खा जाते हैं और जहाँ चोर घुस कर चुरा ले जाते हैं।

बल्कि अपने लिए स्वर्ग में ख़ज़ाने जमा करो जहाँ न कीड़े या ज़ंग उसे खा सकते हैं और न चोर घुसकर चुरा सकते हैं।

क्यों कि जहाँ कहीं तुम्हारा ख़ज़ाना होगा वहीं तुम्हारा दिल भी रहेगा।

आदमी की आंख उसके बदन का दिया यानी चिराग़ है इसलिये अगर तुम्हारी आख रोशन होगी तो तुम्हारा सारा बदन चमक उठेगा।

पर जो तुम्हारी आख ख़राब (जिसमे खुदी हो) होगी तो तुम्हारे सारे बदन में अँधेरा होगा। इसलिए अगर तुम्हारा चिराग़ ही अधा (मलिन) हो गया तो वह अँधेरा कैसा डरावना होगा।

कोई आदमी एक साथ दो मालिकों की नौकरी नहीं कर सकता। या तो एक से नफ़रत करेगा और दूसरे से प्रेम और या एक की सेवा करेगा और दूसरे से बेपरवाही। तुम परमात्मा और 'मैमन' (यानी धन के देवता कुबेर) दोनों की सेवा एक साथ नहीं कर सकते।

इसलिये मै तुमसे कहता हूँ कि तुम इस बात की बिलकुल चिन्ता न करो कि तुम क्या खाओगे और क्या पिओगे और न इस बात की कि तुम क्या पहनोगे। खाना पीना जीवन नहीं है और न कपड़े बदन हैं।

आसमान की चिड़ियों को देखो, न वे बोती हैं और न काटती हैं, और न खलियानों में नाज जमा करती हैं, फिर भी तुम्हारा स्वर्ग का बाप उन्हे खाना देता है। क्या तुम्हारा मोल उन चिड़ियो से ज्यादा नहीं है?

तुम कपड़ों की फ़िक्र क्यों करते हो? जङ्गल के फूलों को देखो वे कैसे उगते हैं, वे न मेहनत करते हैं और न कातते हैं।

और इस पर भी मैं तुमसे कहता हूँ कि सुलेमान जैसे बादशाह के कपड़े भी उसकी तमाम शान और शौकत के होते हुए इनमे से एक फूल जितने ख़ूबसूरत न थे।

अगर परमात्मा जङ्गल की उस घास को, जो आज उगती है और कल जब सूख जाती है तो मट्टी मे डाल दी जाती है, इस तरह के कपड़े पहनाता है तो क्या वह तुम्हे इससे बढ़कर कपड़े न पहनाएगा? पर तुम में भरोसे की कमी है!

इसलिये इस बात की बिलकुल फिक्र न करो कि हम क्या खाएगे, क्या पिएगे या क्या पहनेंगे?

तुम्हारे आसमानी बाप को मालूम है कि तुम्हे किन किन चीजों की ज़रूरत है।

तुम सब से पहले अपने अन्दर ईश्वर का राज क़ायम करने और ईश्वर का धर्म, उसकी नेकी खोजने की चिन्ता करो और ये सब चीज़े अपने आप तुम्हारे पास आ जावेंगी।

तुम कल की बिलकुल चिन्ता न करो। कल अपनी बातों की आप चिन्ता कर लेगा। हर दिन के लिये उसी एक दिन की बुराई बस है।

तुम हर घड़ी कमर कसे, दिया जलाए तय्यार रहो, न जाने इस घर का मालिक किस घडी आ पहुँचे।

दूसरों को परखने में मत पड़ो जिससे तुम्हारी भी परख न की जावे। क्योंकि जिस तरह तुम दूसरों को परखोगे ठीक उसी तरह तुम्हारी परख ली जावेगी और जिस माप से तुम दूसरों को भरकर

दोगे उसी से तुम्हे दिया जायगा। और तुम अपने भाई की आँख का तिल क्यों देखते हो और अपनी आँख का लट्ठा क्यों नहीं देखते ?

तुम अपने भाई से यह कैसे कहोगे 'आओ तुम्हारी आँख में से मै तिल निकाल कर फेंक दूँ', जब कि तुम्हारी अपनी आँख में लट्ठा मौजूद है ? पहले ख़ुद अपनी आँख मे से लट्ठा निकाल कर फेंक दो तब तुम्हें साफ साफ दिखाई देगा कि तुम अपने भाई की आँख से किस तरह तिल निकाल सकते हो।

× × ×

तुम मे अगर चाह है तो मागो और तुम्हें मिलेगा। खोजो और तुम पाओगे। खटखटाओ और तुम्हारे लिये दरवाज़ा खुलेगा।

क्योंकि जो मागता है उसे मिलता है, उसके लिये दरवाजा खुलता है।

तुम में कौन ऐसा है जिससे अगर उसका वेटा रोटी मागे तो वह उसे रोटी की जगह पत्थर दे दे ? या अगर उसका वेटा मछली मागे तो वह उसे साँप पकडा दे ?

फिर जब तुम अपने अन्दर बुराई रखते हुए भी अपने बच्चों को अच्छी चीजे देना जानते हो तो तुम्हारा बाप जो स्वर्ग में है उन्हें जो उससे मागे गे, उनकी जरूरत पुरता आध्यात्मिक यानी रूहानी खाना क्यों न देगा ?

इसीलिये जो जो बाते तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें

वे सब बातें तुम लोगों के साथ करो, यही धर्म है और यही सब नबियों की तालीम का निचोड़ है।*

तुम छोटे और तंग दरवाज़े से अन्दर आओ क्योंकि जो रास्ता बरबादी की तरफ ले जाता है वह खूब चौड़ा है और उस पर दरवाज़ा भी बड़ा है। ज्यादहतर लोग उसी दरवाज़े से जाते हैं।

पर जो रास्ता सच्चे जीवन की तरफ ले जाता है वह बहुत तंग है, उसका दरवाज़ा छोटा है, और बहुत कम लोग हैं जो उसे पाते हैं।

उन झूठे नबियों से बचे रहो जो तुम्हारे सामने भेड़ की खाल ओढ़कर आते हैं जब कि उनके अन्दर खौफनाक भेड़िया छिपा रहता है।

हर आदमी जो "ईश्वर! ईश्वर!" करता आयगा ईश्वर के राज में न घुस पाएगा, सिर्फ वह ही उसमे घुस सकेगा जो उस सब के बाप की इच्छा पर चलेगा।

उस दिन बहुत से लोग यह कहेंगे—

'हे ईश्वर! हे ईश्वर! क्या हमने तेरे नाम पर लोगों को यह नहीं बताया कि आगे क्या होने वाला है? और तेरे नाम पर बहुत सी करामातें (चमत्कार) नहीं दिखलाईं?'

और तब ईश्वर उनसे कहेगा—

'मै तुम्हें कभी नहीं जानता था, हट जाओ मेरे पास से क्योंकि तुम बुरे काम करते हो।'

* कुङ्ग-फू-त्ज़े और हिल्लेल के वचन।

जो कोई मेरी इन बातों को ध्यान से सुनकर उन पर चलेगा, वह समझदार आदमी की तरह होगा जिसने ज़मीन को गहरा खोदकर पक्की चट्टान के ऊपर अपने घर की नींव रक्खी और उसके ऊपर घर बनाया।

बारिश होगी, आंधियाँ चलेंगी और उस घर से टकराएंगी पर वह घर न गिरेगा क्योंकि उसकी बुनियाद पक्की चट्टान के ऊपर है।

और कोई मेरी इन बातों को सुनेगा पर उन पर अमल न करेगा वह उस बेसमझ आदमी की तरह होगा जिसने बिना बुनियाद खोदे रेत के ऊपर अपना मकान खड़ा कर लिया।

बारिशे होंगी, बाढें आवेंगी, आंधियाँ चलेंगी और इस मकान से टकरावेंगी और वह भडभड़ा कर गिर पड़ेगा।*

यह सारा 'उपदेश' असलीयत में एक जगह या एक वक्त दिया हुआ नहीं है। यह हज़रत ईसा के खास खास उपदेशो को मिलाकर बना है। इससे हज़रत ईसा के ऊँचे ख्यालो और उस ज़माने के यहूदी धर्म की हालत पर खासी रोशनी पडती है।

---

* Math, ch V-VII

दूसरे उपदेश

एक दिन हज़रत ईसा रास्ते पर चले जा रहे थे कि एक आदमी दौड़ता हुआ उनके पास आया और घुटनों के बल बैठ कर कहने लगा—

"मेरे अच्छे मालिक ! मैं क्या करूं जिससे मुझे अमर जीवन यानी हमेशा की ज़िन्दगी हासिल हो सके ?"

ईसा ने जवाब दिया—

"तुम मुझे अच्छा क्यों कहते हो ? सिवाय एक ईश्वर के और कोई अच्छा नहीं है। तुम धर्म की आज्ञाएं जानते हो—बदचलनी न करो, हिंसा न करो (किसी को दुख न दो), चोरी न करो, झूठी गवाही मत दो, धोखा न दो, अपने मां बाप की इज़्ज़त करो।"

उसने फिर कहा—

"ऐ मालिक ! इन सब बातों को तो मैं अपने लड़कपन से कर रहा हूं।"

हज़रत ईसा ने उसे प्यार किया और कहा—

"अब तुम में एक बात की कमी है। जाओ, जो कुछ माल तुम्हारे पास है सब बेचकर ग़रीबों में बांट दो और फिर लौटकर

सलीब (क्रॉस यानी दूसरे के लिए मुसीबतें उठाने का निशान) हाथ में लेकर मेरे साथ साथ चलो। तुम्हें स्वर्ग का ख़ज़ाना मिलेगा।"

यह सुनते ही वह सुस्त होगया और वहां से उठकर चल दिया। उसके दिल को दुख हुआ क्यों कि वह बड़ा मालदार था।

हज़रत ईसा ने मुड़कर अपने साथियों से कहा—

"जिन लोगों के पास दौलत है, जिन्हें अपने धन दौलत पर भरोसा है उनके लिये ईश्वर के राज मे घुस सकना बहुत मुशकिल है।

"ऊंट के लिये सुई की आंख में से निकल जाना आसान है पर दौलत वाले आदमी के लिये ईश्वर के राज मे घुसना कठिन है।"*

एक दिन पुराने खयाल के कुछ लोग एक औरत को हज़रत ईसा के पास लेकर आए और कहने लगे—

"ऐ मालिक! यह औरत बदचलनी करती हुई पकड़ी गई है। मूसा ने अपने धर्म शास्त्र में हुकुम दिया है कि इस तरह के आदमी को पत्थर मार मार कर मार डालना चाहिये, आप क्या कहते हैं?"

हज़रत ईसा गरदन झुकाकर नाखून से ज़मीन खोदने लगे। उन लोगों ने फिर पूछा। हज़रत ईसा ने गरदन उठाकर कहा—

"आप लोगों में से जिसने कभी पाप न किया हो वह इस पर सब से पहला पत्थर फेंके।"

यह कहकर हज़रत ईसा ने फिर गरदन झुका ली और फिर उंगली से लकीरें खींचनी शुरू कर दी।

---

* Mark, ch. 10 compare Talmud and also Quran 7. 40.

जिन लोगों ने हज़रत ईसा की बात सुनी वे अपने अपने पापों को याद करके एक एक कर चुपके से वहां से उठकर चल दिये।

हज़रत ईसा ने फिर गरदन उठाई तो देखा कि सिवाय उस औरत के वहाँ और कोई न रह गया था। हज़रत ईसा ने उससे कहा—

"बहन! (हजरत ईसा सब औरतों को इसी नाम से पुकारते थे) तुझ पर इलजाम लगाने वाले कहां गए? क्या किसी ने तुझे सज़ा नहीं दी?"

उसने जवाब दिया—

"मालिक! किसी ने नहीं।"

ईसा ने कहा—

"मै भी तुझे सज़ा नहीं दे सकता, जा फिर कभी पाप न करना।"

तलाक का रिवाज यहूदी मज़हब में जायज़ समझा जाता था। एक बार कुछ लोगों ने इस रिवाज के बारे में हज़रत ईसा की राय पूछी। उन्होंने जवाब दिया –

"दुनिया के शुरू से ही ईश्वर ने औरत और मर्द को बनाया है। ईश्वर ने हुकुम दिया है कि आदमी बड़ा होकर अपने माँ बाप से अलग हो सकता है पर पति और पत्नी यानी ख़ाविन्द और बीवी हमेशा एक शरीर एक जिस्म बनकर रहेंगे। इसलिये वे दो नहीं रहते बल्कि दोनों मिलकर एक बदन हो जाते हैं।* जिन्हें ईश्वर ने

---

* अर्धाङ्गिनी का हिन्दू ख़याल।

मिलाया है उन्हें कोई आदमी एक दूसरे से अलग न करे। जो कोई अपनी बीवी को तलाक़ देकर दूसरी औरत के साथ ब्याह करता है वह बदचलनी करता है, जो कोई किसी तलाक़ दी हुई औरत के साथ ब्याह करता है वह बद्चनी करता है, और जो अपने ख़ाविन्द को तलाक़ देकर दूसरे से ब्याह करती है वह बदचलनी करती है।"*

एक बार किसी ने आकर पूछा—

"धर्म की आज्ञाओं में सब से बढ़कर कौनसी है?"

हज़रत ईसा ने जवाब दिया—

"सब से बढकर आज्ञा यह है—'ऐ इसराईल! सुनो, हमारा सब का ईश्वर एक ही है, और तुम्हें चाहिये कि अपने पूरे दिल से, अपनी पूरी आत्मा से, अपनी पूरी समझ से और अपनी पूरी ताक़त से अपने उस ईश्वर से प्रेम करो।'† उतनी ही बड़ी धर्म की दूसरी आज्ञा यह है—'अपने पड़ौसी के साथ वैसा ही प्रेम करो जैसा अपने साथ करते हो।× इन दोनों से बढ़कर और कोई आज्ञा नहीं है। ये दो आज्ञाएं ही तमाम धर्म शास्त्र और तमाम नबियों के उपदेशों का निचोड़ और उनकी बुनियाद हैं।"

उस आदमी ने कहा—

"ऐ मालिक! आपने सच कहा है। ईश्वर एक है। उसके

---

* Compare Talmud of. Babylon, San hedrim 22 a

† Dent 6 4

× Lev. 19 18

सिवा दूसरा कोई ईश्वर नहीं है; और पूरे दिल से, पूरी समझ से, पूरी आत्मा से और पूरी ताक़त से उस ईश्वर से प्रेम करना और अपने पड़ौसी को अपनी ही तरह समझकर उससे वैसा ही प्रेम करना—ये दोनों बाते आग में जानवरों की बलि चढ़ाने और तमाम यज्ञ और क़ुरबानिया करने से कहीं बढकर हैं।"

ख़ुश होकर हज़रत ईसा ने कहा—

"तुम ईश्वर के राज से बहुत दूर नहीं हो।

"जब अपने अपने कामों के फल भोगने का वक़्त आयगा तब दुनिया का चलाने वाला मालिक कुछ लोगों से कहेगा—

'आओ, तुम बड़े भाग्य वाले हो। दुनिया के शुरू से यह राज तुम्हारे ही लिये बदा है। क्यों कि जब मैं भूखा था तुमने मुझे खाना दिया था, जब मैं प्यासा था तुमने मुझे पानी पिलाया था, जब मैं बे घर का था तुमने मुझे रहने की जगह दी थी, जब मैं नगा था तुमने मुझे कपड़ा पहनाया था, मै बीमार था और तुमने मेरी सेवा की थी, मै जब जेलख़ाने मे क़ैद था तुम मुझसे मिलने आए थे।'

"वे लोग हैरान होकर पूछेंगे—'हे ईश्वर! हमने कब आपको भूखा देखकर खाना दिया था? कब आप प्यासे थे और हमने आपको पानी पिलाया था? कब हमने आपको बेघर का पाकर जगह दी थी और कब आपको नंगा देखकर कपड़ा पहनाया था? कब हमने आप को बीमार देखा और कब हम आपसे जेल में मिलने गए?

"ईश्वर उनसे कहेगा—'मैं तुमसे सच कहता हूँ कि अगर तुमने अपने किसी एक छोटे से छोटे भाई के साथ भी इनमें से कोई सलूक

किया तो मेरे साथ किया।"

"फिर ईश्वर दूसरी तरह के आदमियों से कहेगा—'ऐ बदक़िस्मत लोगो हटो! तुम्हें अपने किये की सजा भोगनी होगी। क्यों कि मैं भूखा था और तुमने मुझे खाना नहीं दिया, मैं प्यासा था और तुमने मुझे पानी नहीं पिलाया, मैं परदेशी था पर तुमने मुझे जगह नहीं दी, मैं नंगा था, तुमने कभी मुझे कपड़ा न दिया, मैं बीमार था और जेल में था पर तुमने कभी मेरी ख़बर न ली।'

"वे लोग पूछेंगे—'ऐ ईश्वर! ऐसा कब हुआ कि हमने आपको भूखा, प्यासा, नंगा, बेघर या बीमार या जेल मे देखा हो और आपकी सेवा न की हो?'

"ईश्वर कहेगा—'मैं तुमसे सच कहता हूँ, अगर तुमने किसी एक आदमी के साथ भी, किसी छोटे से छोटे आदमी के साथ भी इस तरह की बेपरवाही की तो वह मेरे साथ की।'

"इसके बाद दोनो अपने अपने किये का फल पावेंगे।" *

एक बार उन्होने लोगो से कहा—

"जो कोई मेरे पीछे चलना चाहे वह पहले अपने आप को मिटा दे, अपना क्रॉस (मौत की निशानी) अपने हाथ में ले ले और फिर मेरे पीछे पीछे चले, क्यों कि जो कोई अपना जीवन बचाने की कोशिश करेगा वह जीवन खो बैठेगा। और जो कोई मेरे या मेरे धर्म के लिये अपना जीवन क़ुरबान कर देगा वह जीवन हासिल करेगा। अगर आदमी अपनी आत्मा को खो बैठे और सारी दुनिया उसे मिल जावे

* Math. 25

तो उसे क्या फायदा ? आत्मा के मोल की दूसरी चीज़ उसे क्या मिल सकती है ?"*

"तुममें से जो कोई बड़ा बनना चाहे उसके लिये ज़रूरी है कि वह तुम्हारा सेवक बने। और तुममे से जो कोई अव्वल होना चाहे, जरूरी है कि वह सब से आख़ीर और सब का दास बने। क्योंकि आदमी का बेटा, [हज़रत ईसा अपने को बहुत करके 'आदमी का बेटा' (son of man) ही कहा करते थे] सेवा कराने के लिये नहीं आया, सेवा करने के लिये आया है।"

एक बार खाना तय्यार होने पर हज़रत ईसा ने अपना कपड़ा उतारकर, एक तौलिया कमर से बांधकर और एक बरतन मे पानी लेकर अपने साथियों और चेलो के पैर धोने और तौलिये से पोछने शुरू कर दिये।

चेलों ने घबराकर पैर खींच लिये। हज़रत ईसा ने ज़िद की और कहा--

"आप लोग मुझे 'रब्बी' (मालिक या स्वामी) कहकर पुकारते हैं। ठीक है। अगर मैं, जिसे आप अपना 'रब्बी' कहते हैं आपके पैर धोऊंगा तो आप भी एक दूसरे के पैर धोएगे। जैसा मैं आपके साथ करता हूँ वैसा आप सब के साथ करें। अगर आप सचमुच ही ऐसा करेंगे तो आप बड़े ख़ुशक़िस्मत होंगे।"

यहूदी हमेशा नहाकर खाना खाया करते थे और खाने से ठीक पहले उनमें हाथ पैर धोना ज़रूरी था।

---

* Mark 8.

हज़रत ईसा अपने चेलों से कहा करते थे—

"जो कोई अपनी सब धन दौलत नहीं छोड देगा वह मेरा चेला नहीं हो सकता।"※ "जो कुछ तुम्हारे पास है सब बेच डालो और बेचने से जो धन मिले उसे ग़रीबों और ज़रूरत वालों में बाट दो।"† "जब तक गेहूँ का दाना अपने आप को बनाए रखने की सोचता रहता है वह एक दाना ही रहता है, पर जब वह अपने को मिट्टी में मिला कर मिटा देता है तो उससे सैकड़ों नए गेहू पैदा हो जाते हैं।"×

सारी उमर बिना ब्याहे रहना वह हर एक के लिये मुमकिन न समझते थे, पर उन लोगों को जो "अपने अन्दर और बाहर ईश्वर का राज कायम करने के लिये अकेले रहना चाहें और जिनमे बिना ब्याहे रहने की ताकत हो इसका हकदार समझते थे।"+ आदमी के लिए ऊँची से ऊँची ज़िन्दगी या स्वर्ग की ज़िन्दगी मे हज़रत ईसा को ब्याह के लिए कोई गुंजाइश दिखाई नहीं देती थी।

वह ख़ुद बिना ब्याहे रहे, न उन्होने अपने पास कभी कोई पैसा या कोई चीज़ अपनी बनाकर रखी, और न कोई अपना घर बनाया। उनकी जिन्दगी बिल्कुल एक सन्यासी की ज़िन्दगी थी।

※ Luke XIV.

† Ibid XII.

× John XII.

+ Math. XIX,12.

ब्रह्मचर्य पर ईसा बहुत ज़्यादह ज़ोर देते थे। शुरू के दिनो मे यह नियम था कि जो आदमी उनका चेला बनता था, वह फिर ब्याह न करता था। जो लोग पहले से ब्याह कर चुके थे उनसे भी यह उम्मीद की जाती थी कि वे ईसाई होने के बाद से पूरे ब्रह्मचर्य से रहे। पूरे ब्रह्मचर्य ही को असल उसूल माना जाता था। यही रिवाज शुरू के बौद्धो मे था। सौ साल से ज़्यादह के बाद ईसाईयो ने अपने इस नियम को ढीला किया।

एक जगह मालूम होता है हज़रत ईसा ने यहा तक इजाज़त दी है कि सच्चा धार्मिक जीवन बिताने के लिये आदमी, ज़रूरत पड़े तो अपने को खस्सी बनाले।*

मरने के बाद की जि़न्दगी को भी हज़रत ईसा पूरी तरह मानते थे।

लोगो की सेवा करने और सच्चे धर्म को फैलाने के लिये घर बार छोड़ देना वह सब के लिये ठीक और सराहने की चीज़ समझते थे। एक जगह उन्होने कहा है।

"मै तुमसे सच कहता हूँ जो कोई मेरे लिये और धर्म के लिये अपना घर, भाई, बहन, माँ, बाप, बच्चे या जमीन छोड़ कर आता है, उसे इसी दुनिया मे सैकड़ों घर, सैकड़ों भाई, सैकड़ों बहने, सैकड़ों माएँ, सैकड़ा बच्चे और सैकड़ों ज़मीने मिल जाती हैं, इनके साथ साथ इसे तकलीफें उठाने को मिलती हैं, और परलोक यानी दूसरी दुनिया में अमर जीवन मिलता है।"

---

* Math. XIX, 12.

बच्चो से उन्हें ख़ास प्रेम था ही। एक बार कुछ बच्चे उनके पास आने लगे। लोगो ने रोकना चाहा हज़रत ईसा ने कहा—

"बच्चों को मेरे पास आने दो। उन्हें रोको मत। ईश्वर का राज इन्हीं के लिये है। मै तुमसे सच कहता हूं जो कोई बच्चों की तरह अपने ऊपर ईश्वर के राज को न अपना लेगा वह कभी ईश्वर के राज में न घुस सकेगा।"*

लोगो ने पूछा ईश्वर का राज कब और कैसे कायम होगा? जवाब दिया—

"ईश्वर का राज इस तरह क़ायम नहीं होगा कि तुम या कोई उसे देखकर कह सके,—'यह ईश्वर का राज है, या 'वह ईश्वर का राज है' ईश्वर का राज हर वक्त तुम्हारे अन्दर मौजूद है। इस वक़्त भी है।"

'ईश्वर का राज' यहूदियो का एक पुराना ख़याल था जिसके कभी न कभी ज़मीन पर कायम होने की यहूदी किताबो मे बार बार पेशीनगोई की गई थी। हज़रत ईसा ने इस खयाल को बिलकुल दूसरा ही रूप दे दिया। 'ईश्वर का राज' ('स्वर्ग का राज्य, राम राज्य, या अल्लाह की हकूमत) उनका ख़ास फिकरा है। इसके बारे मे उनके कई जगह के उपदेश बड़े मारके के और ऊँचे हैं। उनका "ईश्वर का राज" कोई आदमी से बाहर की चीज़ नहीं थी। वह आत्मा या रूह के अन्दर की चीज़ है, आत्मा ही की एक हालत है।

---

* "फिर से एक छोटा बालक बनकर अपने ऊपर आप हकूमत करनी चाहिये" —लाओत्से।

हज़रत ईसा का 'ईश्वर का राज' क्या चीज़ है यह लगभग उन्हीं के शब्दो मे इस तरह बयान किया जा सकता है—

सब से पहले आदमी को यह जान लेना चाहिये कि आदमी और ईश्वर असल मे एक है। आदमी और दूसरे सब जानदार भी एक है। अपने और दूसरो के बीच या अपने और ईश्वर के बीच जो दुई या अलहदगी दिखाई दे रही है उसकी वजह यह है कि दुनिया और दुनिया की मुहब्बत ने आदमी की समझ पर परदा डाल रखा है। दुनिया चार दिन की है और झूठ या धोखा है। ईश्वर हमेशा को है और सच यानी हक है। इस परदे को हटाने के लिये दुनिया स बेपरवाह होकर 'नई ज़िन्दगी' की तरफ जाना चाहिये। जिसकी ज़िन्दगी मे कोई उसूल नहीं, कोई मकसद या लक्ष्य नहीं, और .खुदी भरी है उसकी ज़िन्दगी ही मौत है। अपने अब तक के पापों के लिये दिल से पछताना और फिर इस "पछतावे की सचाई से मेल खाने वाले" नेक कामो मे यानी बिना अपने पराए का फरक किये सबकी भलाई के कामो मे लग जाना और इस तरह अपने दिल को धीरे धीरे साफ करना "नई ज़िन्दगी" या "दूसरी ज़िन्दगी" मे दाखिल होना है। इसके लिये घरबार छोड़ना ज़रूरी नहीं। दुनिया मे रहते हुए दुनिया की तरफ अपने फर्ज़ो को पूरा करते हुए, मोह और .खुदी को अलग रखकर बेलौस और बेलाग होकर लगातार सब का भला और सब की सेवा करते हुए हार जीत, सुख दुख, मान

* John XVIII, 15 & 16.

अपमान को रूह की तरक्की के सिर्फ साधन या ज़रिये मानते हुए, और यह समझते हुए कि सुख और ऐश आराम की निस्बत दुख और तकलीफें, रूह की सफाई और तरक्की ज्यादह मदद देती है, "दुनिया" मे यानी अपने मन को पूरी तरह काबू मे रखते हुए, धीरे धीरे शुद्ध और बुद्ध, पाक, साफ और समझदार होकर, अपने अन्दर सत्य और असत्य, हक और बातिल को पहचानने वाली समझ 'पैरा क्लीट' (the Holy Spirit) की मदद से ईश्वर के साथ अपनी खोई हुई एकता को फिर से पा लेना और यह पहचान लेना कि "मै सब मे हूँ, सब मुझ मे है, सब ईश्वर मे हैं, ईश्वर सब मे है, हम सब और ईश्वर एक हैं," इस तरह करते करते आखिरकार ईश्वर यानी विश्व की आत्मा मे लीन या फना हो जाना ही "ईश्वर के राज" मे शामिल होना है। यही आदमी का मकसद है, यही स्वर्ग है और यही मुक्ति या निजात है।

हज़रत ईसा के कई जगह के उपदेशो का करीब करीब उन्ही के शब्दो मे यह निचोड़ है। इस तरह हज़रत ईसा का 'ईश्वर के राज' का ख़याल अलग अलग बातो मे वेदान्त के, अद्वैत या वहदतुलवजूद, गीता के निष्काम कर्म और स्थित प्रज्ञ और कुछ बातो मे बौद्ध धर्म के निर्वाण से मिलता हुआ है।

शुरू मे हज़रत ईसा गांव गांव और शहर शहर घूम कर लोगो को उपदेश देते थे। कुछ दिनो बाद उन्होने अपने बारह बड़े बड़े चेलो को दो दो करके अलग अलग तरफ धर्म फैलाने

के लिये भेजा। चलते वक़्त हज़रत ईसा ने उन्हे हिदायत दी—

"सफ़र मे एक लकड़ी भी अपने साथ न रखना, न रोटी का टुकड़ा, न झोला और न टेंट मे पैसा। न जूता या चप्पल पहन कर चलना और न एक कपड़े से ज़्यादह जो तुम्हारे बदन पर हो और कोई दूसरा कपड़ा अपने पास रखना। अपनी आत्मा को पाक करने के लिये जब ज़रूरत पड़े उपवास या रोज़ा रखना और मुसीबत के वक़्त अकेले में ईश्वर से प्रार्थना करना। हर जगह बीमारों और दुखियों की सेवा करना। जिस घर में जाओ पहले वहा के लोगों को 'शलोम लकेम' (Shalom Lakem—ईश्वर आपको शान्ति दे—Peace be on, you) कहना। जहा जो भीख मे मिले खा लेना। हमेशा ख़याल रखना कि जिस तरह फाख़्ता नाम की चिड़िया से कभी किसी को कोई नुक़सान नहीं पहुँच सकता, इसी तरह तुमसे भी कहीं किसी कोई नुक़सान न पहुंच सके। भेड़ियों के बीच मे भी तुम मेमने होकर ही रहना।"

इस पर हज़रत ईसा के सब से बड़े चेले पीटर ने पूछा—"और अगर भेड़िये मेमनों को फाड़ डालें तो क्या?" हज़रत ईसा ने जवाब दिया—

"मेमना जब एक बार मर गया तो फिर उसे भेड़िये से क्या डर! तुम उन लोगों से मत डरो जो शरीर को मार सकते हैं लेकिन आत्मा का कुछ नहीं बिगाड़ सकते, उस एक ईश्वर ही से डरो जिसकी हुकूमत मरने के बाद भी तुम पर बनी रहती है।.........चाहे कौन्सिलों के सामने तुम्हें पेश किया जावे, सिनेगॉगों में खड़ा करके

तुम्हारे कोड़े लगाए जावें, बादशाहों की कचहरियों के सामने तुम्हें खड़ा किया जावे, इसकी कभी कोई परवाह न करना। जब ज़रूरत होगी तुम्हारी आत्मा तुम्हें आप बता देगी कि किस सवाल का क्या जवाब दो। लोग तुम्हारे शान्ति और प्रेम के सन्देश का मुक़ाबला हिंसा और नफ़रत से करेंगे। हो सकता है अपने दुशमनों के सामने तुम्हें एक शहर से दूसरे शहर और दूसरे से तीसरे धक्के खाने पड़ें, फिर भी आख़ीर तक सब्र सहते रहना। डरना मत। वह अल्लाह ईश्वर जो छोटी छोटी चिड़ियों के बच्चों के धरती पर आते ही उनका बचाव करने लगता है,...... वह तुम्हारे साथ है। तुम्हें खेंचातानी की दुनिया में भेजा जा रहा है। हो सकता है तुम्हारे प्यारे से प्यारे और सगे से सगे लोग भी तुम्हारे ख़िलाफ़ दुनिया से मिल जावें पर जो सचमुच मेरे पीछे चलना चाहते हैं उन्हें सच्चाई के लिये सब कुछ त्यागने को तय्यार रहना चाहिये। उन्हें अपना कफ़न सर से बाँधकर चलना चाहिये।"*

हज़रत ईसा के कुछ चेलों ने एक बार उनसे शिकायत की कि किसी शहर के लोग, जब हम उनके यहां प्रचार के लिये जाते हैं तो, हमारा निरादर और बेइज़्ज़ती करते हैं। उन्होंने हज़रत ईसा से प्रार्थना की कि आप उन्हे बददुआ यानी शाप दीजिये, हज़रत ईसा ने जवाब दिया—

"आदमी का बेटा आदमियों की जानें लेने नहीं आया उन्हें

* "Life of Christ" by Farrar.

बचाने के लिए आया है।"*

हज़रत ईसा के आम लोगो को उपदेश देने के दो तरीक़े थे। एक छोटी छोटी कहावतों या छोटी छोटी बातो मे और दूसरे छोटे छोटे क़िस्सों या कहानियो मे। इस तरह के बहुत से किस्से इञ्जील मे मौजूद हैं। महात्मा बुद्ध का ढङ्ग भी यही था। "इस प्यारे तरीके की कोई मिसाल या उसका कोई नमूना हज़रत ईसा को यहूदी धर्म की किसी किताब से न मिला था। लेकिन बौद्ध किताबों मे ठीक वैसे ही और उसी ढंग के किस्से भरे हुए हैं जैसे इञ्जील मे।"†

नमूने के तौर पर हज़रत ईसा के तीन क़िस्से हम नीचे देते हैं। ये तीनो एक ही सचाई को समझाने के लिये कहे गए थे।

कुछ लोगों ने हज़रत ईसा से पूछा—

"आप गिरे हुए लोगों और जाति बाहर किये हुए लोगो से इतना मेल जोल क्यो रखते हैं, उनके साथ क्यो खाते पीते हैं?"

हज़रत ईसा ने जवाब दिया—

"किसी आदमी के पास सौ भेड़ हों और उसकी एक भेड़ कहीं भटक जाय तो वह बाक़ी निन्नानवे भेड़ों को छोड़कर उस एक की खोज में निकल पड़ता है और जब वह मिलती है तो प्रेम से उसे अपने कन्धे पर बैठा लेता है और लौट कर ख़ुशी मनाता है कि मेरी

---

* Luke IX, 52 et seq, Renan ch. XVIII.

† "Life of Jesus", by Renan, p. 136.

खोई हुई भेड़ मुझे मिल गई। ऐसे ही, एक भी गिरे हुए या भटके हुए आदमी के पछताने और ठीक रास्ते पर लौट आने पर परमेश्वर के यहाँ जो ख़ुशी मनाई जायगी वह निन्नानवे भले आदमियों के लिये नहीं मनाई जायगी जिन्हें पछताने की ज़रूरत ही नहीं है।"

"ऐसे ही एक औरत के पास दस रुपए थे। उसका एक रुपया खो गया। वह दिया जलाकर सारे घर में उसे ढूँढती फिरी। जब वह मिल गया तो बहुत ख़ुश होकर अपनी सहेलियों से कहने लगी मेरा खोया हुआ रुपया मिल गया।"

"इसी तरह एक आदमी के दो बेटे थे। छोटा बेटा कुछ आवारा था। उसने बाप से कहा मेरे हिस्से की आधी जायदाद मुझे दे दीजिये। बाप ने जायदाद बाँट दी। वह बेटा थोड़े दिनों के अन्दर अपने हिस्से की जायदाद बेचकर रुपया लेकर परदेश निकल गया। वहा उसने खेल तमाशों में सब धन गवा दिया। फिर पेट भरने के लिये उसे किसी आदमी के यहा सुअर चराने की नौकरी करनी पड़ी। उसे बड़ी तकलीफ़ हुई। उसे जानवरों से भी बुरा खाना मिलता था। आख़ीर में उसे होश आया। उसने सोचा—'मेरे बाप के यहाँ बहुत से मजदूर हैं जो मुझसे अच्छा खाना खाते हैं, और मैं भूखों मर रहा हू। मैं अपने बाप के पास जाकर उनसे कहूँगा—पिता जी, मैंने आप का कहना नहीं माना, मैंने पाप किया, मैं आपका बेटा कहलाने के क़ाबिल नहीं हूं। मुझे अपने यहा मजदूरों में रख लीजिये।' वह गया। बाप ने उसे दूर ही से आता देखकर दौडकर गले लगा लिया। बेटे ने वही बात जो सोची थी अपने बाप से कही। बाप ने तुरत नौकरों

को हुक्म दिया—इसे ले जाओ, नहलाओ, अच्छे अच्छे कपड़े पहनाओ, एक सोने की अंगूठी पहनने को दो। अच्छे अच्छे खाने बनवाओ, लोगों को दावत दो और ख़ुशी मनाओ कि मेरा बेटा मर कर फिर जी गया। मै अपना खोया हुआ बेटा फिर पा गया। बड़े बेटे को जब इस सब का पता चला वह नाराज़ हुआ। उसने बाप से जाकर कहा—मैंने इतने बरसों तक आपकी सेवा की, आपका एक भी कहना नहीं टाला, पर आपने मेरे लिये कभी इतनी ख़ुशी नहीं मनाई। मेरा भाई अपनी सब धन दौलत खेल तमाशों में लुटाकर आज आया तो आप इतना बडा जश्न कर रहे हैं ? बाप ने जवाब दिया—मेरे बेटा ! तुम तो हमेशा मेरे साथ थे ही। जो कुछ मेरा है तुम्हारा है। पर तुम्हारा भाई मरकर जिया है; वह खो गया था और फिर आ गया है। इससे बढकर ख़ुशी की और क्या बात हो सकती है ?"

इस तरह के छोटे छोटे चुटकले इंजील मे भरे हुए हैं। ये सब किस्से आम लोगो की आए दिन की जिन्दगी मे से लिये गए है। जैसे एक राज का किस्सा, सौदागर का किस्सा, दरज़ी का किस्सा, किसान का किस्सा, एक ब्याह, दूल्हा और ब्याह की ज्योनार का किस्सा, एक अमीर और एक ग़रीब का किस्सा, शराबी का किस्सा, कर्ज़दार और साहूकार का किस्सा, चोर और चौकीदार का किस्सा, एक अन्धा और उसे राह दिखाने वाला या और उसका बच्चा, बचो का कुत्तो को रोटी डालना, और इसी तरह के और। यही हज़रत ईसा के उपदेश देने का ख़ास ढङ्ग था।

लोगों ने कई बार उनसे कहा कुछ करामात या मोजज़ा दिखाइये। उन्होंने हमेशा इस तरह की मांगो पर दुखी होकर किसी तरह की भी अलौकिक बात या करामात कर सकने के अपने को नाक़ाबिल बताया।*

इस पर भी इंजील मे हज़रत ईसा की करामातो का ज़िक्र जगह जगह उसी तरह मिलता है जिस तरह महात्मा बुद्ध, हज़रत मूसा, हज़रत मुहम्मद और दूसरे पैग़म्बरो, महापुरुषो, सन्तों और वलियो की करामातो का दूसरी किताबो मे।

---

*Mark VIII—12 etc.

लोगों का उनके ख़िलाफ़ हो जाना

फ़िलिस्तीन और ख़ास कर गैलिली की हालत उन दिनों बहुत बिगड़ी हुई थी। मज़हबी और दूसरे समाजी रीत रिवाजों पर से लोगो का यकीन हटता जा रहा था। रोम वालों के ज़ुल्म बढ़े हुए थे। किसी भी नेता की आवाज़ पर लोग चलने लगते थे और फिर आए दिन कुचले जाते थे। सरकारी लोगों की हत्याएं चोरी छिप्पे से इधर उधर होती रहती थीं। चारो तरफ़ बद्अमनी और अशान्ति थी। दिमाग़ गरम और दिल बेचैन थे। ज़्यादहतर लोग घबराए हुए थे। किसी को ठीक राह न सूझती थी। ऐसी हालत मे आम लोगो के ऊपर हज़रत ईसा के शान्ति और प्रेम भरे उपदेशों का बड़ा अच्छा असर पड़ता था। लोगो को सचमुच बाहर के उस ईश्वरी राज के मुक़ाबले में जिसका सपना यहूदी देख रहे थे, अपनी आत्मा के अन्दर एक ऐसा ईश्वरी राज दिखाई देने लगा जो उन्हे सन्तोष देने वाला था और जिस तक उन्हे अपनी पहुँच मालूम होती थी।

साथ ही उनके उपदेशों और उनके रहन सहन में बहुत सी बातें ऐसी थीं जो पुराने कट्टर ख़याल के लोगों और ख़ास कर

यहूदी मन्दिरो के पुजारियो और पुरोहितो को अच्छी न लग सकती थी। जैसे—

(१) जो लोग गिरे हुए माने जाते थे उनके साथ और जाति वाहर किये हुए लोगो के साथ मेल जोल और खान पान रखना।

(२) वहुत से पुराने रीति रिवाजो, मन्दिरो के पूजा पाठ और जानवरो की बलि को बुरा कहना।

(३) अपने को "ईश्वर का बेटा" कहना और कभी कभी अपने को और ईश्वर को एक बताना।

एक दिन पुराने ख़याल के एक यहूदी ने जो अपने को वड़ा पाक और ऊँचा मानता था हज़रत ईसा को खाने के लिए बुलाया। वह गए। उसी शहर मे एक जवान वाज़ारी औरत रहती थी जिसके दिल मे हज़रत ईसा के उपदेश घर कर चुके थे। ख़बर सुनकर वह अपनी इत्र की शीशियां लेकर उनके पास आई। उसने वे शीशियाँ हज़रत ईसा के पैरो पर उलट दी और फिर अपने आंसुओ से उन पैरो को तर कर दिया। इसके वाद उसने अपने वालो से उन पैरो को पोछना शुरू किया। घर के मालिक को उसका आना बुरा लगा। उसने कहा आपने इस नापाक औरत को अन्दर क्यो आने दिया और अपना वदन क्यो छूने दिया? हज़रत ईसा ने जवाव दिया इसके दिल के प्रेम और पछतावे ने इसके पिछले पापो को धो डाला। फिर प्रेम मे भर कर उस औरत से कहा—"वहन, जा तसल्ली रख, तेरी

श्रद्धा ने तुझे बचा लिया, फिर पाप न करना।*

इस औरत का नाम मेरी था, उसकी एक बहिन का नाम मार्था था और भाई का लाज़रस। हज़रत ईसा को इन तीनों से प्रेम था। लाज़रस की बीमारी के दिनों मे एक बार कई दिन उनके घर रहकर हज़रत ईसा ने उसकी सेवा की और उसे अच्छा कर दिया। वह उनके साथ खाते पीते थे। यह बात यहूदी रिवाज के इतने खिलाफ थी और बहुत से यहूदी इससे इतने नाराज़ हो गए कि हज़रत ईसा को कुछ दिनों तक शहर छोड़कर जङ्गल मे चला जाना पड़ा।

ठीक इसी तरह का सलूक वह उन अमीर सरकारी अफसरों के साथ करते थे जिनसे यहूदी नफरत करते थे और जिनसे यहूदियों ने सब तरह का मेल जोल बन्द कर रखा था। हजरत ईसा को जितना प्रेम ग़रीबों से था उतना ही सरकारी लोगों से। दोनों पर उनका असर पड़ता था। महात्मा यहूना और महात्मा ईसा दोनों का प्रेम सब के साथ एक बराबर था। उसमे भले बुरे का कोई फरक न था। दोनों ही पर उनका असर भी पड़ता था।

एक बार हज़रत ईसा एक शहर मे गए। वहां के सरकारी टैक्स वसूल करने वालों का अफ़सर ज़क्कई बड़ा अमीर था। उसमें हज़रत ईसा के दर्शनों की चाह थी। उसकी इस चाह को देखकर हज़रत ईसा उसी के यहां ठहरे। उसने इस ख़ुशी मे

* Luke VII

हज़रत ईसा के उपदेश सुनकर अपनी आधी दौलत फौरन ग़रीबो मे बांट दी और बाकी आधी इस लिये रख ली कि जिस किसी का धन मैने जुल्म से लिया हो उसे इस बाकी आधे मे से मै चौगुना करके लौटा दूंगा। उसने इसका ऐलान भी कर दिया। हज़रत ईसा ने उसे दुआ दी और मुक्ति यानी निजात का यकीन दिलाया।

यहूदियो को इस बात का घमण्ड था कि हम हज़रत इबराहीम की नसल से है, इसीलिये हमारे करतूत चाहे कैसे भी हो हम मुक्ति के हकदार है, और कोई हमसे पहले मुक्ति नही पा सकता। हज़रत ईसा इस घमण्ड को बुरा और झूठा बताते थे।

एक बार कुछ यहूदी धर्म गुरुओं से उन्होने कहा—"मै तुमसे अब कहता हूँ बाज़ारी औरतें और रोम के सरकारी नौकर दोनों तुमसे पहले ईश्वर के राज मे पहुंचेंगे। यहूना ने तुमसे नेक बनने का रास्ता बतलाया, तुमने नही माना। सरकारी नौकरो और बाज़ारी औरतो ने माना, और तुम अब भी ध्यान नही देते*।

"ईश्वर का राज तुमसे छीनकर दूसरी क़ौम को दिया जावेगा, वही उसका फल खावेगी।"

"जिन लोगों को अपने धार्मिक होने और पाक होने का घमण्ड है उनकी निस्बत उन दूसरों की दुआएँ कहीं जल्दी सुनी जावेंगी

* Math. XVI.

जिन्हें अपने गुनाहों के लिये सच्चा पछतावा है और जो शर्माते हैं।"

यहूदियों मे भी यहूदा इलाके के रहने वाले अपने ही को असली यहूदी मानते थे। समरिया के रहने वाले समरितन कहलाते थे। दोनों एक ही दादा की औलाद और एक ही मज़हब के मानने वाले थे, फिर भी दोनो दो अलग अलग जातियां बन गई थीं। यहूदा वाले समरितन लोगो को छोटा और नापाक समझते थे और उनका छुआ पानी न पीते थे। उन्हें यरुसलम के मन्दिर के अन्दर पूजा करने तक की इजाज़त न थी। इसी लिये इन ऊँचे "यहूदियों" के यरुसलम के मन्दिर के मुकाबले का समरिया वालो ने अपना एक अलग मन्दिर गिरिज़म पहाड़ पर बनवा लिया था। दोनो अपने अलग अलग मन्दिरो मे जाते थे। खानपान और छुआछूत के फ़रक यहूदियो मे आजकल के हिन्दुओ से किसी तरह कम न थे।

समरिया इलाके मे एक खास शहर शेकेम (Shéchem) था। जो सड़क यरुसलम से गैलिली जाती थी वह शेकेम के पास से जाती थी। सड़क से शेकेम शहर आध घण्टे का रास्ता था। छुआछूत इस हद को पहुँच गई थी कि बहुत से 'यहूदी' यरुसलम से गैलिली जाते हुए एक लम्बे रास्ते से चक्कर खाकर जाते थे पर शेकेम के इतने पास से निकलना ठीक न समझते थे। इन यहूदियो मे एक कहावत थी—"समरितनो के हाथ की छुई रोटी और सुअर का गोश्त बराबर हैं।" उनके कुंए से कोई यहूदी पानी न पी सकता था।

हज़रत ईसा के शेकेम मे कई भक्त थे। ईसा उस शहर मे ठहरते भी थे। लोगो के रोकने पर एक बार उन्होने कहा—

"फ़र्ज़ करो (एक शहर) की सडक के ऊपर कोई परदेसी घायल पड़ा हुआ है। एक यहूदी पुरोहित पास से निकला और उसे देखकर भी बिना रुके अपने रास्ते चला गया। इसके बाद कोई दूसरा पुजारी वहा से निकला। वह भी देख कर चल दिया। फिर एक समरितन वहाँ से निकला। उसे परदेसी को देख कर दया आई। उसने रुककर उसके ज़ख्मों की मल्हम पट्टी की। अब, इन तीनों मे सच्चा धर्मात्मा कौन है? जिनके दिलों मे एक दूसरे के लिये दया है उन सब की बिरादरी एक है। इसका मज़हबी एतक़ाद या मानताओं से कोई वास्ता नहीं।"

एक वार यरुसलम से गैलिली जाते हुए हज़रत ईसा शेकेम के पास वाली सड़क से जा रहे थे। शेकेम के पास पहुच कर वह एक कुए के ऊपर ठहर गए। दो पहर का वक्त था। उनके साथी गांव से खाने का सामान लेने के लिये चल दिये। इतने मे शेकेम की एक समरितन औरत कुंए से पानी भरने के लिये आई। हज़रत ईसा ने उससे पीने के लिये पानी मांगा। उसने हैरान होकर पूछा—

"क्या आप 'यहूदी' होकर मेरे हाथ का पानी पी लेगे?" हज़रत ईसा ने उसे समझाया कि यह सब छुआछूत झूठी है। उसने फिर कहा—"यहूदी हमेशा से यरुसलम के मन्दिर में पूजा करते हैं और हम इस सामने वाले गिरिज़म के मन्दिर में।" हज़रत ईसा ने जवाब

दिया—"वह ज़माना आ रहा है जब हम सब अपने बाप ईश्वर की पूजा न यरुसलम मे करेंगे और न इस पहाड़ पर। ईश्वर हर जगह है। वही सब की जान है। सबके अन्दर मौजूद है। सच्ची पूजा करने वाले अपनी आत्मा के अन्दर ही आत्मा के रूप मे और सच यानी हक़ के रूप में उस परमात्मा की पूजा करेंगे। इसी तरह की पूजा करने वाले उस ख़ुदा को प्यारे होंगे जो सब का बाप है।"

साथियों के गाँव से लौटने पर हज़रत ईसा और उनके साथियो ने बड़े प्रेम के साथ उस औरत के हाथ से पानी पिया।

हज़रत ईसा दूसरों के साथ नेकी करने को जितना ज़रूरी बताते थे, एक ईश्वर को पूजने या कई देवताओं को पूजने, निराकार रूप में पूजने या साकार की पूजा करने या पूजा के किसी ख़ास ढंग को उतना ज़रूरी न बताते थे। कट्टर यहूदी सिवाय एक 'याहवे' के और किसी देवी देवता के पूजने वाले को और सब ग़ैर यहूदियो को अधर्मी मानते थे और मुक्ति का हकदार न समझते थे। उनका 'शोमा' (कलमा या मूल मत्र) था—"सुनो! ऐ इसराइल! तुम्हारा ईश्वर एक है।"

इस पर भी हज़रत ईसा नेक काम करने वाले हर आदमी को चाहे वह किसी की भी और किसी भी तरह पूजा करता हो, मुक्ति का हकदार बताते थे।

कइ ग़ैर यहूदी अपने अपने देवताओ को अपने अपने ढंग से पूजते हुए भी हज़रत ईसा के मानने वालों मे थे। हज़रत ईसा

इन सव वातो को कम जरूरी और दिल की सफाई और दूसरो के साथ नेकी करने को असली चीज मानते, और इस तरह के सव लोगों को मुक्ति का यकीन दिलाते थे।

थोडे वहुत लोग कभी कभी दूसरे धर्मों को छोड़कर यहूदी धर्म मे आ जाते थे। जन्म के यहूदी उन्हे अपने से नीचा समझते थे और नफरत की निगाह से देखते थे। हजरत ईसा ने इस तरह से लोगो के साथ बराबरी का बरताव करके उन्हे अपने प्रेम मे बाँध रखा था। वे यहूदियो से कहा करते थे—

"पूरब और पच्छिम, उत्तर और दक्खिन सब तरफ से आकर बहुत से लोग बहिश्त (स्वर्ग) मे (यहूदी पैग़म्बरों) इबराहीम, इसाक और याकूब के बराबर में बैठेंगे, जब कि इन पैग़म्बरों की नसल के बहुत से लोग अंधेरे में ढकेल दिये जावेंगे, जहाँ वे दाँत पीसेंगे और रोवेंगे।*

एक दफे लोगो ने हजरत ईसा से किसी बात पर धर्म की पुरानी किताबों का हवाला (प्रमाण) मांगा। उन्होने जवाब दिया।

"तुम पुरानी किताबों को ढूढते हो और समझते हो कि उनके पन्नो मे तुम्हें अमर जिन्दगी मिल जावेगी, लेकिन मेरी बात नहीं सुनते जिससे तुम्हें सचमुच अमर जिन्दगी मिल सकती है,।"

हजरत ईसा किसी भी किताब की निस्बत अपने अन्दर की आवाज़ को ज्यादह पक्का प्रमाण मानते थे।

---

* Math. VIII

पुराने ख़याल के यहूदी हर सनीचर को 'सब्बथ' मनाते थे। उनके लिये वह दिन बहुत पाक और काम न करने का दिन था। घर मे झाड़ू देना, चूल्हा जलाना, खाना पकाना और कई ऐसे ही काम उस दिन गुनाह समझे जाते थे। अगर दुशमन उस दिन हमला करे तो अपने बचाव के लिए हथियार उठाना भी उस दिन पाप माना जाता था। पर दूसरी तरफ़ यहूदी मन्दिरों के अन्दर आग मे आहुति देने के लिये उस दिन और दिनो से दुगने जानवर काटे जाते थे। ख़तना करना उस दिन जायज़ था पर किसी बीमार का इलाज करना गुनाह था। इन रिवाजो का ज़्यादह हाल एक दूसरी किताब मे दिया जा चुका है। हज़रत ईसा जब उस दिन रोगियो की सेवा करते थे तो कट्टर यहूदी इसे भी बुरा कहते और रोकते थे। हज़रत ईसा इस पुराने रिवाज को तोड़ना चाहते थे।

गैलिली इलाके मे एक दिन सनीचर को वह अपने कुछ चेलो के साथ नाज के एक खेत से जा रहे थे। कुछ चेलो ने जो भूखे थे कुछ नाज की बालें तोड़कर खाली। बिना पूछे बालें तोड़ने पर फ़िलिस्तीन मे उन दिनो कोई न रोकता था पर उस दिन सनीचर था। सनीचर को फसल काटना या उसे पीट कर नाज अलग करना दोनो मना थे, और जो कोई ऐसा करता था उसे पत्थर मार मार कर मार डाला जाता था। हज़रत ईसा के चेलो का बाल तोड़ना फसल काटना समझा गया और दाने निकालना नाज को पीटना। लोगो ने एतराज़ किया। हज़रत

ईसा ने जवाब दिया—

"क्या आप लोगों ने नहीं पढा कि हज़रत दाऊद और उनके आदमियों ने भूख की हालत मे मन्दिर के अन्दर जाकर चढावे की उन रोटियों को खाया था जिनके खाने का सिवाय मन्दिर के पुजारियों के और किसी को हक़ नहीं होता।...सब्बथ आदमी के भले के लिये बनाया गया है, आदमी सब्बथ के लिये नहीं बनाया गया।...सब्बथ के दिन आप लोग मन्दिर के आग के कुण्ड में जानवरों की आहुति देते हैं, क्या इनसे सब्बथ नापाक नहीं होता ?...पुरानी किताबों मे ही लिखा है 'ईश्वर जानवरों की बलि और आहुति से खुश नहीं होते। ईश्वर दया करने से ख़ुश होते हैं।"*

जब कुछ लोगो ने हज़रत ईसा के सनीचर के दिन रोगियों का इलाज करने पर एतराज़ किया तो उन्होने कहा—

"क्या तुम सनीचर के दिन अपने बैल या गधे को खोलकर पानी पिलाने के लिये नहीं ले जाते ? तो फिर क्या ईश्वर के इन बच्चों (बीमारों) को उस दिन दुख से छुडाना गुनाह है ? अगर तुम्हारा बैल या गधा सनीचर के दिन कुए में गिर जावे तो क्या तुम उसे तुरत निकालने की कोशिश नहीं करते ?"

एक दूसरे मौके पर उन्होने कहा—

"तुम सनीचर को बच्चों का ख़तना कर लेते हो ताकि मूसा की आज्ञा न टूटे तो फिर अगर मैं सनीचर को किसी का कोई अग काटने की जगह उसके सारे बदन का अच्छा करने की कोशिश करूॅ तो तुम

---

* Mark and Math.

मुझसे नाराज़ क्यों होते हो ? ऊपरी निगाह से देखकर राय न बनाओ। सोचो और इन्साफ करो।"

हज़रत ईसा का जनता पर बड़ा असर था। इसलिए उन्हे या उनके किसी चेले को इसके लिये सज़ा नहीं दी जा सकी। पर यहूदी धर्म के ठेकेदारों मे उनसे नाराज़ी बढ़ती गई। आगे चलकर हज़रत ईसा को सूली पर चढ़ाने के वक्त जो इलज़ाम उन पर लगाए गए उनमे से एक यह था कि वे सब्बथ के क़ायदों को नहीं मानते।

कट्टर यहूदी खाना खाने से पहले एक ख़ास ढङ्ग से कोहनी तक हाथ और घुटनों तक पैर धोते थे। बरतनों की सफाई मे वे ख़ास तरह की बारीकियों से काम लेते थे। बाज़ार की कोई चीज़ वे बिना धोए काम में न लाते थे। ऐसे ही और बहुत से कायदे थे। 'तालमुद' के बहुत बड़े बड़े हिस्से मे ऐसे ही क़ायदे भरे हुए थे। यहूदी इन्हे 'ताहरोथ' (Tahroth, अरबी-'तहारत') कहते है। कई अध्याय सिर्फ 'यदाईम' (yadaim) यानी हाथ धोने का तरीको पर हैं। छब्बीस प्रार्थनाएं दी हुई है जो इनमे से अलग अलग कामो के साथ अलग अलग पढ़ी जानी चाहियें। हज़रत ईसा और उनके साथी आम तौर पर इन बाहरी बातों को नहीं मानते थे। एक बार हज़रत ईसा ने लोगों के पूछने पर उनसे कहा—

"आप लोग ख़ुदा की आज्ञाओं को तोड़ते हैं और आदमी के चलाए हुए रिवाजों का इतना ख़याल रखते हैं। बरतनों की सफाई

और साग तरकारी धोने में इतनी बारीकी करते हैं, और आदमियों के साथ न्याय करने और ईश्वर से प्रेम करने की परवाह नहीं करते। पहले अपने अन्दर को साफ करो, फिर बाहर की सफाई का ख़याल करना।"

इस तरह के सैकड़ो पुराने रीति रिवाज कट्टर यहूदियों की नज़रो मे धर्म के ज़रूरी हिस्से थे और हज़रत ईसा की निगाह मे सच्ची धार्मिक ज़िन्दगी मे रुकावटें। मन्दिर के लम्बे चौड़े पूजा पाठ और जानवरो की बलि को वह हमेशा बुरा कहते थे।

इन सब बातों से बढ़कर पाप पुराने ख्याल के लोगो की नज़रो मे हज़रत ईसा का अपने को "ईश्वर का बेटा" कहना और इस तरह की बातें कहना "मैं और मेरा बाप दोनों एक ही हैं", यहूदियो की निगाह मे यह नास्तिकता यानी लामज़हबी और गुनाह था। हज़रत ईसा के सारे उपदेशों को पढ़कर उनकी हद दरजे की दीनता, और इनकसारी मे किसी तरह का शक नही रह जाता। उनका ईश्वर मे यक़ीन बहुत पक्का था। उनकी ईश्वर भक्ति भी बहुत गहरी थी। ईश्वर को वह सब का बाप और सब आदमियों को एक दूसरे का भाई मानते थे। अपने ईश्वर के सामने रोकर रात रात भर वह दुआएं करते रहते थे। इजील मे बार बार उन्होंने अपने को "आदमी का बेटा" (the son of man) कहा है, और कुछ इने गिने मौकों पर "ईश्वर का बेटा" कहा है, लेकिन इसमें शक नहीं वह हिन्दु-

स्तान के अद्वैत वेदान्त (वहदतुलवदूद) और यूनानी फलसफे दोनों की जानकारी रखते थे। ये सब ख़याल उनके ज़माने से पहले फिलिस्तीन मे फैल चुके थे। हज़रत ईसा पर इनका काफी असर था। उनका अपने अन्दर का तजरुवा या अनुभव भी उन्हे यही वताता था। हज़रत ईसा के मुँह से अकसर इस तरह की वातें निकलती रहती थी—

"इस दो दिन के और मिट जाने वाले खाने के लिए कोशिश मत करो बल्कि उस हमेशा रहने वाले खाने की कोशिश करो जिससे तुम्हें हमेशा की ज़िन्दगी या अनन्त जीवन मिले। आदमी के वेटे से तुम्हे वह जीवन मिलेगा, क्योंकि वाप ईश्वर ने उसे सच्चा ठहराया है।"

"जो मेरी बात मानता है और उस पर अमल करता है वह मेरे अन्दर रहता है और मै उसके अन्दर रहता हूँ।"*

ज़िन्दगी आत्मा यानी रूह से है। जिस्म से कभी नहीं। जो बातें मैंने तुमसे कही हैं वे आत्मा से वास्ता रखती हैं और ज़िन्दगी से।"

"तुम ईश्वर को नहीं जानते। मै जानता हूँ। क्यों कि मैं उसी के पास से आया हूं। उसने मुझे भेजा है।"

"जो प्यासा हो मेरे पास आवे और पिये। जो मेरी बात मान लेगा उसके अन्दर से ज़िन्दा पानी (अमृत या आवे हयात) के चश्मे बहने लगेगे।"

---

*"ये भजन्ति तुमाम् भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम्"—गीता, अध्याय ९-२९।

"मैं असली और जिन्दा रास्ता हूँ।

"मैं दुनिया की रोशनी (ज्योति) हूं। जो मेरे पीछे चलेगा, वह अँधेरे में न रहेगा। वह ज़िन्दगी की रोशनी का आनन्द लेगा।"

"जो तुम मुझे जान लोगे तो मेरे बाप को भी जान लोगे!"

"तुम खुदा का नाम लेते हो पर तुम उसे नहीं जानते। मैं उसे जानता हूँ और उसकी आज्ञाओं को मानता हूँ। तुम्हारे दादा इबराहीम को मानता हूँ। तुम्हारे दादा इबराहीम मेरा दिन देखना चाहते थे। उन्होंने मेरा दिन देखा और ख़ुश हुए।" लोगों ने पूछा—"आपकी उमर तो पचास साल की भी नहीं है। इबराहीम ने आपको कैसे देखा था?" जवाब दिया—"मैं तुमसे सच कहता हूं इबराहीम के जन्म से भी पहले मैं मौजूद था।"

कहते हैं इस पर लोग पत्थर उठा उठाकर हज़रत ईसा को मारने लगे। तब उन्होंने कहा—

"जिसने मुझे देख लिया उसने मेरे बाप को भी देख लिया।"*

"जो कुछ मैं तुमसे कह रहा हू मैं नहीं कह रहा हूँ। वही मेरा बाप जो मेरे घट में है यह सब कह रहा है।"†

"मैं बाप में हूँ और बाप मुझमें है।"+

---

* "जिसने अपने को जान लिया उसने अल्लाह को जान लिया।"
—मोहम्मद साहब

† "मैंने तीर नहीं फेंका अल्लाह ने फेंका।"
—मोहम्मद साहब

+ "......सयोगी मयि वर्त्तते"—गीता, अध्याय ६-३१।

"मै बाप मे हूँ और तुम मुझमें हो और मैं तुममें हूँ।*

"मैं अपनी भेड़ों का अच्छा रखवाला हूँ। अच्छा रखवाला अपनी भेड़ों के लिये अपनी जान दे देता है।"

मैं और मेरा बाप दोनों एक हैं।" इस फिकरे पर भी यहूदियों ने उन्हे मारने के लिये पत्थर उठाए। हज़रत ईसा ने पूछा—

"मैंने तुम्हारी बहुत सेवाएं की हैं। तुम किस सेवा के लिये मुझे पत्थर मारते हो?"

उन्होने जवाब दिया—

"हम किसी सेवा के लिये नहीं बल्कि इस कुफ्र (Blesphemy) के लिये तुम्हें पत्थर मारते हैं कि आदमी होकर तुम अपने को ईश्वर बताते हो। हज़रत ईसा ने उन्हें एक पुरानी किताब दाऊद के भजनों का हवाला देकर बताया जिसमे लिखा है 'तुम सब ईश्वर हो।'† और फिर यही कहा—'बाप मुझमें है और मैं बाप में हूँ,।"

---

* सर्वभूतस्थमात्मानं, सर्वभूतानि चात्मनि—गीता, ६-२९.
यो माम पश्यति सर्वत्र सर्वम च मयि पश्यति—गीता, ६-३०.
युक्तात्मानः सर्वं मेवाविशन्ति—उपनिषद।

† Psalm 28.

"They who see but one in all the changing many foldness of this universe, unto them belongs eternal truth, unto none else unto none else"—The Vedas.

लोगो ने फिर उन्हे सताना चाहा। वह जंगल मे चले गए।

हज़रत ईसा की दुआओं मे भी दूसरे आदमियों की तरफ इशारा करते हुए इस तरह के शब्द आते थे—

"ऐ बाप! मैं इनमे लीन (फना) हो जाऊँ और तू मुझमें ताकि सब पूरी तरह एक हो जावें।......दुनिया के बनने के पहले से तू मुझसे प्रेम करता था। ऐ न्याय करने वाले बाप! दुनिया ने तुझे नहीं जाना। मैंने तुझे जाना है। मैंने उनसे कहा है कि तूने मुझे भेजा है। यही मैं उनसे कहूगा ताकि जो प्रेम तूने मेरे साथ किया है वही प्रेम उनमें भी जागे, और मैं उनमें रहू।" *

हज़रत ईसा के इस तरह के फ़िकरे और गीता के अन्दर श्री कृष्ण का उपदेश जगह जगह एक दूसरे की गूंज मालूम होते हैं।

लेकिन पुराने खयाल के यहूदियो की निगाह मे इस तरह की बातें कुफ़् या नास्तिकता थी। आत्मा (रूह) और परमात्मा (ख़ुदा) के बारे मे उनके ख़याल बिलकुल दूसरे ही ढङ्ग के थे। हज़रत ईसा को सूली दिये जाने के वक़्त उन पर एक बड़ा इलज़ाम यही लगाया गया था कि वह अपने को 'ईश्वर का बेटा" कहते हैं। हज़रत ईसा ने सूली पर भी ईश्वर को अपना बाप "अब्बा" कहकर पुकारा।

इस एक बात मे हज़रत ईसा की कुरबानी (बलिदान) से

---

* John.

नौ सौ साल बाद मशहूर मुसलिम सूफी हुसैन मनसूर का बलिदान काफी मिलता है।

बहुत से लोग हज़रत ईसा को पागल कहते थे। बहुत से नास्तिक कहते थे। कई बार उन पर पत्थर फेंके गए। कई शहरों से उन्हे धक्के दे दे कर निकाल दिया गया। उन्हें हर तरह की तकलीफें दी गई। आम लोग अकसर उनके पीछे पीछे फिरते और उनकी तारीफ करते थे। लेकिन अपने को उनका पैरो या चेला कहने वालों की तादाद उनके जीवन में कभी मुट्ठी भर से ज्यादह नहीं हुई। इन मुट्ठी भर हिम्मत वाले लोगों का भी जगह जगह बायकाट किया गया।

कम से कम एक बार इस तरह के बुरे बरताव से उकताकर हज़रत ईसा कुछ दिनो के लिये गैलिली छोड़कर समुद्र के किनारे पर उन शहरो मे चले गए जिनमे रोमियो और ग़ैर यहूदियों की बस्तियां थीं। उन लोगो ने बड़े प्रेम से यहूदियों से बढ़कर उनकी आव भगत की और हज़रत ईसा ने उनके ईश्वर को पूजने के ढङ्ग पर हमला किये बिना उन्हे अपनी बुनियादी सच्चाइयों का उपदेश दिया।

यरुसलम जाना

वसन्त के दिन आए। उस मौसम मे 'पासोवर' के सालाना त्योहार पर फिलिस्तीन भर के तरह तरह के ख़याल के लोग और विद्वान यरुसलम मे जमा हुआ करते थे। लाखो की भीड़ होती थी। कई दिन तक शहर मे जगह जगह और खास कर मन्दिर के मैदान मे मज़हबी मामलो पर बहसे और शास्त्रार्थ होते रहते थे। हज़रत ईसा इस मौके को हाथ से खोना न चाहते थे। यहूदियो के सबब से बड़े कौमी मन्दिर की इज़्ज़त भी एक हद तक उनके दिल मे मौजूद थी। यह उस मन्दिर को ईश्वर की सच्ची पूजा का घर बनाना चाहते थे। हज़रत ईसा ने यरुसलम जाने का इरादा किया। यरुसलम जाने से पहले वह एक बार जार्डन नदी के किनारे वहाँ गए जहाँ उनके गुरू यहूना रहा करते थे। वहां कई दिन तक ठहरने से हज़रत ईसा की आत्मा को बड़ी शान्ति मिली। वहां से चलकर वे और उनके साथी यरुसलम पहुँचे।

मन्दिर के धन दौलत, वहां के पाखण्डो, वहां के बेजान रीति रिवाजो, जानवरो की बलियो और पुजारियो के घमण्ड

और उनके बुरे करतूतों, इन सब को देखकर हज़रत ईसा का दिल दुख से भर गया। उन्होने बेधड़क अपने दिल के अन्दर की बात को लोगो के सामने रखना शुरू किया। यरुसलम के पुजारियों की हालत को देखकर उन्होने कहा—

"ये लोग मूसा की गद्दी पर बैठे हैं। इसलिये ये तुम्हें जो कहें सो तुम करो लेकिन जो ये करते हैं वह तुम न करो। ये लोग कहते एक बात हैं और करते दूसरी।...ये जो कुछ करते हैं लोगों से पुजने के लिये करते हैं। ये बड़े बड़े गंडे तावीज़ बांधते हैं और चौड़े चोड़े रेशमी झग्गे लटकाते हैं। दावतों मे सबसे अच्छी जगह और मन्दिरों मे सबसे आगे बैठना पसन्द करते हैं। चाहते हैं कि लोग गली बाज़ारों में इन्हें प्रणाम करें और इनका बडा आदर करे।* ये वेवाओं का माल खा जाते हैं और लम्बी लम्बी बेमतलब पूजाए करते हैं।"†

फिर पुरोहितों से कहा—

"बड़े दुख की बात है। आपने लोगों के लिये ईश्वर के राज का दरवाजा बन्द कर रखा है, न आप उसमें जाते हैं और न दूसरों को, जो उसके अन्दर जाना चाहते हैं, जाने देते हैं।......कौन सी तरकारी खाई जाय और कौन सी न खाई जाय इसकी तो आप छान बीन करते हैं और आदमियों के साथ न्याय, सब जानदारों के ऊपर दया और ईमानदारी की ज़िन्दगी, इन बातों की आप परवाह नहीं करते।......आप ऊँट निगल जाते हैं और भुनगा थूक देते हैं।

* Math, 23—2-8.

† Mark XII.

बाहर से बरतनों को चमका चमका कर साफ करते और दिल के अन्दर काम क्रोध लोभ मोह भरे हैं। आप लोगों की हालत लिपी पुती क़ब्रों की तरह है, ऊपर से साफ और अन्दर हड्डियाँ और सड़न।......"

मन्दिर के अन्दर चढ़ावे के लिए खेजा बेचने वाले सर्राफो की दूकानें और कुरबानी के जानवरो की बिक्री को देखकर हज़रत ईसा ने कहा—

"जो घर ईश्वर की पूजा का घर होना चाहिये था, आप लोगों ने उसे डाकूओं का अड्डा बना रखा है।"

हज़रत ईसा कई दिन वहां ठहरे रहे। रोज़ दिन भर मन्दिर मे या यरुसलम की गलियो मे प्रचार करते और रात को यरुसलम से कोई चार मील दूर बेथानी (Bethany) गाव मे साइमन नाम के एक कोढ़ी के घर मे जाकर रहते। उसी घर मे उनकी प्यारी चेलियाँ मार्था और मेरी और उनका भाई अल अज़ीर (Lazarus) रहा करते थे। प्रचार के वक्त लोग उनसे ख़ूब सवाल करते और वह जवाब देते। यरुसलम के अन्दर लोगो मे खलबली मच गई। बहुतो पर बडा अच्छा असर पड़ा। मन्दिर ही के कुछ नौकरो और छोटे मोटे पुजारियो ने भी अपने दिल के अन्दर उनकी बात की सचाई को मान लिया। बहुत से खुले तौर पर उनकी बात मान लेने से इसलिये डरते थे क्यो कि यहूदियो मे जो भी पुराने रीति रिवाजो को छोड़ देता था उसे जाति से बाहर कर दिया जाता

था, और जो आदमी जाति बाहर कर दिया जाता था उसकी सारी जायदाद ज़ब्त करली जाती थी। बहुत से और कई तरह के डरों और कमज़ोरियों से रुक गए। जो लोग अपने को हज़रत ईसा के चेले कहते थे वे बहुत थोड़े थे। लेकिन उन आम लोगों पर भी जो चारो तरफ से आ आकर जमा हुए थे हज़रत ईसा के उपदेशो का गहरा असर पड़ता था। कुछ लोग उन्हें पहले ही से "मसीहा" कहकर पुकारने लगे थे। "क्राइस्ट" यूनानी बोली का शब्द है जिसका मतलब वही है जो इबरानी ज़बान मे "माशी आह" (मसीहा) का है। यरुसलम में हज़रत ईसा के इन उपदेशो से मन्दिर की आमदनी और पुरोहितो के बड़प्पन मे धक्का लगा। जो लोग अभी तक उन्हे "नाजरथ के बढ़ई का लडका" कहकर उनके उपदेशो का मज़ाक उडाया करते थे उन्हें अब और देर तक मज़ाक से काम चलता दिखाई न दिया।

देश की हुकूमत रोमियो के हाथो मे थी। यरुसलम के बड़े बड़े पुजारियो का बल बढ़ा हुआ था। हुकूमत के कुछ छोटे मोटे हक भी रोमियो ने इन्हे दे रखे थे और न ये लोग इन हकों को काम मे लाने मे पुराने यहूदी रिवाजो पर ही चलते थे। मन्दिर का सबसे बड़ा पुजारी रोमी गवर्नर के मातहत शहर का मैजिस्ट्रेट था। उसे मौत की सज़ा को छोड़कर और सब सज़ाएं देने का अख्तियार था। किसी को मौत की सज़ा दिलाने के लिये भी वह रोमी गवर्नर से सिफारिश कर सकता था। एक

तरह से यरुसलम मे उन दिनो इन पुराने रिवाजों मे फॅसे हुए पुरोहितों की ही हुकूमत थी। शुरू मे ही हज़रत ईसा के उपदेशो की खबर पाकर उन्हो ने अपने ख़ुफिया दूत हज़रत ईसा के उपदेशो को सुनने और उनके कामो की खबर रखने के लिये गैलिली भेज रखे थे। अब इन लोगो ने देख लिया कि अगर इन उपदेशो को रोका न गया तो मन्दिर का मान और उनकी आमदनी ख़त्म हो जायगी। धर्म मे जैसा उन्होने समझ रखा था, यहूदी "धर्म को ख़राब करने वाले" की सज़ा मौत थी। पुजारियो ने सलाह की कि हज़रत ईसा को पकड़ करके मौत की सज़ा दिलाई जाय। उन्हे दिन मे पकड़ा जाता तो डर था कि जनता जोश मे आकर बलवा करदे। रात को कुछ देर के लिये हजरत ईसा पास की एक पहाड़ी पर अकेले ईश्वर से दुआ मांगने जाया करते थे। उनके एक ख़ास चेले को धन देकर उसकी मारफ़त ठीक कर लिया गया कि रात को जब वह उस पहाड़ी पर ईश्वर प्रार्थना करते हो उसी वक्त उन्हे पकड़ लिया जावे।

हज़रत ईसा का पकड़ा जाना

बड़े पुजारी के सिपाही पकड़ने के लिये पहुँचे। हज़रत ईसा पकड़ लिए गए। उनके साथ के एक आदमी ने जिसके पास इत्तफाक से एक तलवार थी एक सिपाही पर हमला किया। सिपाही का दाहिना कान कट गया। हज़रत ईसा ने अपने उस आदमी को रोककर कहा—

"अपनी तलवार मियान मे रख। जो लोग तलवार खींचेंगे वे सब तलवार ही से मिटेंगे।* मुझे वह प्याला पीने दे जो मेरे पिता परमेश्वर ने मेरे लिये भेजा है।"†

'जो लोग तलवार खीचेंगे वे सव तलवार ही से मिटेंगे'— ये शब्द और इससे मिलते जुलते शब्द हज़रत ईसा के उपदेशो मे जगह जगह और बार बार मिलते है। महात्मा बुद्ध और अहिसा के दूसरे पुराने ज़माने के और आज कल के महान पुजारियों के उपदेशो मे भी ठीक इसी तरह के शब्द मिलते हैं। अहिंसा के अन्दर ये हज़रत ईसा के अडिग विश्वास, उनके पूरे यक़ीन को ज़ाहिर करते है। दूसरा फिकरा साबित करता है कि दुनिया के दूसरे पैग़म्बरो की तरह ईश्वर मे, जो कुछ करता है ईश्वर ही करता है और जो कुछ वह करता है हमारी भलाई के लिए ही करता है—इन बातों मे भी हज़रत ईसा को पूरा भरोसा था।

---

* Math. 26, 53.

† John 18.

आखरी उपदेश

हज़रत ईसा को पुजारियो के इरादो का पहले से पता लग गया था। पकड़े जाने से पहले उसी रात अपने साथियो को हज़रत ईसा ने जो आखिरी उपदेश दिया उसके कुछ टुकड़े ये हैं—

"जिस तरह पिता ने मुझसे प्रेम किया, उसी तरह मैने तुमसे प्रेम किया, तुम हमेशा मेरे इसी प्रेम मे रहना। मेरा कहना मानना ही मेरे प्रेम मे रहना है, जिस तरह मैंने अपने पिता की आज्ञा मानी और मैं उनके प्रेम मे रहा।

"मेरा कहना यह है—तुम एक दूसरे के साथ वैसा ही प्रेम करो जैसा मैं तुम्हारे साथ करता हूँ। आदमी इससे बढकर प्रेम नहीं कर सकता कि जिससे प्रेम करे उसके लिये जान दे दे। मेरा बस यही कहना है, एक दूसरे से प्रेम करो।

"दुनिया अगर तुमसे नफरत करे तो याद रखना कि तुमसे पहले उसने मुझसे नफरत की। अगर तुम दुनिया के होकर रहते तो दुनिया तुमसे प्रेम करती। तुम दुनिया के नहीं हो इसलिए दुनिया तुमसे नफरत करती है।

"मैं यह सब इसलिये कह रहा हूँ जिससे तुम्हारा दिल न टूटे। लोग तुम्हारा बायकाट करेंगे। वह वक्त आ रहा है जब जो कोई तुम्हारी जान लेगा वह समझेगा कि उसने ईश्वर की सेवा की।

"जब किसी औरत के बच्चा होने को होता है वह दरदों से दुखी होती है क्योंकि उसका वक्त आ जाता है। पर, जब बच्चा पैदा हो जाता है, वह अपने दुख को भूल जाती है, वह ख़ुश होती है कि दुनिया में उसके ज़रिये एक नया आदमी पैदा हुआ। यही हाल तुम्हारा होगा।

"मै यह नहीं कहता कि मैं पिता (ईश्वर) से तुम्हारे लिये कोई चीज मागूँगा, क्योंकि पिता आप तुमसे प्यार करते हैं।... मै अपने पिता के पास से दुनिया मे आया था और दुनिया छोड़कर पिता ही के पास लौट जाऊँगा।...

"मै अकेला नहीं हू। पिता मेरे साथ हैं। मै यह सब इसलिये कह रहा हूं ताकि मुझमे तुम्हे शान्ति मिल सके। दुनिया मे तो तुम्हें अशान्ति यानी बेचैनी ही मिलेगी। पर हिम्मत न हारना! मैंने दुनिया को जीत लिया है।

"इसी मे "आदमी के बेटे का" बड़प्पन है और यही ईश्वर का बड़प्पन है।...मुझे अब तुम्हारे साथ थोड़ी ही देर और रहना है।...मैं फिर तुम्हें एक ही हुकुम देता हूं—एक दूसरे के साथ प्रेम करो। जिस तरह मै तुमसे प्रेम करता हूँ इस तरह तुम सब एक दूसरे के साथ प्रेम करो। तुम अगर सब से प्रेम करोगे तो इसी से सब तुम्हें पहचान लेंगे कि तुम मेरे कहने पर चलते हो।...

"मै पिता (ईश्वर) से प्रार्थना करूँगा कि मेरे चले जाने पर वह तुम्हें मेरी जगह एक और ऐसा मददगार दे दे जो हमेशा तुम्हारे साथ रहे। वह मददगार है—'दिल की सच्चाई' (इसी को इञ्जील मे

जगह जगह 'दि होली स्पिरिट' या 'दि होली गोस्ट' या 'पवित्र आत्मा' या 'पाक रूह' कहा गया है। दुनिया उसे न देखती है और न पहचानती है। पर तुम उसे जानते हो क्योंकि वही तुम्हारा मददगार और सलाहकार (पैराक्लिट) है। वह हमेशा तुम्हारे साथ रहता है और हमेशा तुम्हारे अन्दर रहेगा।...तब तुम समझोगे कि किस तरह मै अपने पिता के अन्दर हूं, तुम मेरे अन्दर हो और मै तुम्हारे अन्दर हूँ।...अगर तुम मुझसे प्रेम करते हो तो खुशी मनाओ कि मैं पिता के पास जा रहा हूं क्योंकि पिता मुझसे बडा है।... ..."

अद्वैत (वहदतुल वजूद) मे हजरत ईसा का यकीन ऊपर के टुकड़ो से जाहिर है। शायद इस सचाई को हर आदमी की रोज़ की अमली ज़िन्दगी मे ढालने की सब से बड़ी कोशिश हजरत ईसा ने ही की।

'मै अपने पिता के अन्दर हूँ, तुम मेरे अन्दर हो और मैं तुम्हारे अन्दर हूँ'—हजरत ईसा के ये शब्द उपनिषदों और श्री मद्भगवत गीता के इस तरह के फिकरों की गूँज मालूम होते है—

"सच्चा ज्ञान यही है कि आदमी सब प्राणियों को अपने अन्दर, और सब को ईश्वर के अन्दर और सब के अन्दर ईश्वर को देखे" (गीता, ४—२५ से ३५)। "जिस आदमी का दिल योग मे लग गया है वह सब प्राणियों के अन्दर अपने को और अपने अन्दर सब प्राणियों को देखता है......जो सब के अन्दर परमेश्वर को और परमेश्वर के अन्दर सब प्राणियों को देखता है उसका फिर परमेश्वर से नाता नहीं टूटता......जो दुई से ऊपर उठ कर सब प्राणियों के अन्दर परमेश्वर का भजन करता है वह कहीं भी रहे उसका नाता परमेश्वर से जुड़ा हुआ है।" (गीता ६-२९ से ३२)।

सूली

हज़रत ईसा बुध की रात को पकड़े गए उन्हे बाँधकर तुरन्त बड़े पुजारी कय्याफे (caiaphais) के मकान पर पहुँचा दिया गया। कय्याफे के ससुर अन्ना के पूछने पर हज़रत ईसा ने कहा—

"मैंने सब जगह खुले उपदेश दिया है। हमेशा मन्दिरो और चौपालों मे प्रचार किया है। इसी यरुसलम के मन्दिर में मैं उपदेश देता रहा हूं। सब यहूदी वहाँ जमा होते थे। मैंने किसी से कोई बात छिपा कर नहीं कही।"*

पुजारियों और उनके आदमियों ने रात को हज़रत ईसा का खूब अपमान किया। उन्हें कोड़ों से पीटा। उनकी आँखो पर पट्टी बांधकर उनके घूसे और थप्पड़ मारे और फिर पूछा— "बताओ हममे से किसने तुम्हें मारा।" उन्हे तरह तरह से सताया। बृहस्पतिवार (जुमेरात) की सुवह उन्हे बड़े पुजारी और उसकी कौन्सिल के सामने लाया गया। उनसे पूछा गया— "क्या तुम ईश्वर के बेटे हो?" उन्होने जवाव दिया—"सचमुच

---

* John 18.

मैं ईश्वर का बेटा हूँ और आदमी का बेटा भी हूँ।" बड़े पुजारी ने कहा—"अब और गवाहो की क्या ज़रूरत है? इसने अपने मुँह से अपना 'कुफ़्र' (blesphemy) मान लिया।" *

इसके बाद वे हज़रत ईसा को रोमी गवर्नर पॉण्टियस पाइलट के दरवार मे ले गए। पाइलट से लोगो ने कहा—"हमे पता चला है कि यह आदमी हमारी कौम वालो को भड़काता है, लोगो से कहता है सीज़र (रोम के सम्राट) को टैक्स मत दो। अपने को कहता है कि मै ही तुम्हारा बादशाह और मै ही तुम्हारा मसीहा हूँ।' पाइलट ने हज़रत ईसा से पूछा—"तो तुम यहूदियो के बादशाह हो?" हज़रत ईसा ने जवाब दिया—"मेरा इस दुनिया के राज्य से कोई वास्ता नहीं। अगर इस दुनिया के राज्य से मेरा वास्ता होता तो मेरे साथी मेरे पकड़े जाने के वक्त लड़ते। नही, मेरा राज्य किसी दूसरी जगह है।"

यहूदी पुजारियो ने हज़रत ईसा पर तरह तरह के झूठे इलज़ाम लगाए और गवाह पेश किये। पालइट ने उन सब को सुना। फिर ईसा से सवाल करने के वाद यहूदियो से कहा—"तुम इस आदमी को मेरे पास यह कहकर लाए थे कि यह लोगो मे वगावत फैलाता है। मैने तुम्हारे सामने इससे सब बातें पूछी; और तुम्हारे कहने पर भी मुझे इसका कोई कुसूर दिखाई नही देता। इसने कोई ऐसा काम नही किया जिससे इसे मार डाला जावे।" पुजारियो ने ज़िद की। पाइलट ने फिर वार

* John 18.

बार पूछा—"इसने क्या .कुसूर किया है? कोई बात इसके खिलाफ साबित नहीं हुई।" यहूदी पुजारियों के ज़िद करने पर उसने कहा—"आप कहे तो मैं इसे बेंत लगाकर छोड़ दूं।" पुजारियो ने जवाब दिया—"यह आदमी अपने को ईश्वर का बेटा कहता है। हमारे धर्म मे यह कायदा चला आता है कि ऐसे आदमी को मार डालना ज़रूरी है।"

पाइलट ने देखा कि हज़रत ईसा को सज़ा न दी गई तो डर है कि यहूदी बिगड़ जावेगे। लेकिन वह हज़रत ईसा को बेगुनाह समझता था और उन्हें छोड़ देना चाहता था। उसने इस बार हज़रत ईसा से कहा—"जानते हो कि तुम्हे छोड़ देना या मार डालना मेरे हाथ में है?" हजरत ईसा ने जवाब दिया—"जब तक .खुदा का हुकुम न हो आप कुछ नहीं कर सकते। आपका .कुसूर तो उतना भी नहीं जितना उस आदमी का है जिसने धोखा देकर मुझे पकड़वाया है।" इस बात पर पाइलट और भी चाहने लगा कि हज़रत ईसा को छोड़ दे। वह जानता था कि इन सब इलज़ामो की जड़ यह है कि हज़रत ईसा के उपदेशो से पुजारियो की आमदनी मे बट्टा लगता है, इसीलिए पुजारी इसके दुशमन हैं। यहूदी शहरो मे परदे का रिवाज था। पाइलट की बीवी परदे के पीछे से सब देख सुन रही थी। पाइ-लट पर उसने ज़ोर दिया कि हज़रत ईसा को छोड़ दिया जावे। लेकिन यहूदी पुजारी और शहर के उन बड़े बड़े लोगो ने, जिनकी सदियो की रोज़ी ख़तरे मे थी,, राजभक्ति की दोहाई देते हुए

कहा—"अगर आप इस आदमी को मौत की सज़ा न देंगे तो देश मे बहुत बडी बगावत फैल जायेगी और इसकी ज़िम्मेवारी आप पर होगी !". उन दिनों की हालत को देखते हुए पाइलट डर गया। एक बेकुसूर आदमी को सूली पर चढ़ा देना इतना खतरनाक न था जितना रोम के इतने वड़े सूबे के बड़े बड़े लोगो को नाराज़ कर लेना और बग़ावत का डर रहना। पाइलट ने हुक्म दे दिया कि ईसा को सूली पर चढ़ा दिया जावे। उन्हें उसी दिन जल्लादो के हवाले कर दिया गया।

अगले दिन सुवह नौ बजे हज़रत ईसा को, जैसा उन दिनो रिवाज था, पहले कोड़े लगाए गए और फिर शहर के वाहर एक जगह सूली पर लटका दिया गया। सूली के क्रॉस के ऊपर यह लिख दिया गया—"यहूदियो का वादशाह ईसा नसरानी !" नसरानी का मतलब है नाज़रथ का रहने वाला ! मतलब यह था कि हज़रत ईसा को राजद्रोह के जुर्म मे सज़ा दी गई। यह वात शुक्र यानी जुमे के दिन की और अंगरेज़ी हिसाब से ३ अप्रेल की है।

दिन और तारीख का पता यहूदियो के लेखो से चलता है। इन दोनो मे सब की एक राय है। लेकिन सन के बारे मे शक है। कोई कोई सन् २९, कोई सन् ३३ और कोई सन् ३६ ईस्वी को सूली का साल बताते हैं। सन् २८ मे हज़रत ईसा ने प्रचार करना शुरू किया था और उनकी जिन्दगी को देखते हुए सन् २९ ही सब से ठीक सन मालूम होता है। यही इजील के

तीन बड़े लेखकों की राय है। सन् ३६ किसी तरह ठीक नहीं जँचता।

उन दिनों जो लोग सूली पर चढ़ाए जाते थे उन्हें एक ख़ास तरह की तेज़ शराब पहले से पिला दी जाती थी ताकि सूली में बहुत तकलीफ न हो। हज़रत ईसा ने पीने से इन्कार कर दिया।

रोम के हाकिमो ने फिलिस्तीन में बड़े बड़े ज़ुल्म किये थे। पर हज़रत ईसा को सूली पर चढ़ाने की ज़िम्मेवारी रोम के हाकिमो पर नहीं है। इसके लिए उनके अपने देश और अपने धर्म के लोग ही ज़िम्मेवार थे।

अपने पकड़े जाने से कुछ पहले हज़रत ईसा ने यरुसलम के लोगों को निगाह मे रखते हुए कहा था—

"ऐ यरुसलम के रहने वालो! तुमने अपने नबियों को क़त्ल किया और जो तुम्हें धर्म का रास्ता दिखाने आए थे उन्हें तुमने पत्थर मारे!"

लोगों ने जब उनसे यरुसलम के मन्दिर की इमारतें देखने को कहा तो उन्होंने जवाब दिया—

"तुम इन्हें क्या देखते हो? इनका एक पत्थर भी दूसरे से मिला हुआ न रह जायगा।"

जिन लोगों ने हज़रत ईसा को सज़ा दिलाने पर ज़िद की वे या तो विदेशी रोमी हाकिमो के ख़ैरख़ाह थे या कम से कम ख़ैरख़्वाही का दम भरते थे और सब पुराने ख़याल के कट्टर

यहूदी थे। हो सकता है कि वे देशभक्त यहूदी जो अपने मुल्क की आज़ादी के लिये रोमियों से लड़ते रहते थे इस मामले मे हज़रत ईसा के साथ हमदर्दी कर सकते थे। ।लेकिन हज़रत ईसा की कुछ बातें ऐसी थीं जिनकी वजह से उन्हे भी उनसे हमदर्दी न हो सकी।

एक बार हज़रत ईसा से पूछा गया—"रोमी सम्राट सीज़र को टैक्स देना चाहिये या नही ?" इञ्जील मे लिखा है कि उनके दुशमनो ने उन्हे फंसाने के लिये उनसे यह सवाल किया था। जो हो हज़रत ईसा ने सवाल करने वाले से एक सिक्का माग कर पूछा—"इस पर नाम और तस्वीर किसकी है ?" जवाब मिला—"सीज़र की"। हज़रत ईसा ने कहा—"तो फिर सीज़र की चीज़ सीज़र को दो और .खुदा की चीज़ .खुदा को।"

आज़ादी की चर्चा होने पर उन्होने कहा—"जो भी आदमी पाप करता है वह .गुलाम है। सचाई ही आज़ादी है।"

हज़रत ईसा ने अपने ज़माने की राज काज की बातो की तरफ कभी ज्यादह ध्यान नही दिया······वह उस तरह के देश भक्त न थे जिस तरह के 'मक्काबी' थे और न 'धर्मराज' के नाम पर यहूदी पुजारियो पुरोहितो का राज या एक खास मज़हब वालो का वैसा राज कायम करना चाहते थे जैसा यूदा गनलोमिते चाहता था। हज़रत ईसा ने बहादुरी के साथ अपनी कौम वालो की तङ्ग नज़री से ऊपर उठकर यह कहा कि ईश्वर सब का बाप है और उसकी नज़र मे सब आदमी बराबर

हैं।...उन्होंने ऐलान किया कि सच्चा धर्मराज या ईश्वर का राज हर आदमी के दिल के अन्दर है।...अगर ईसा उस तरह की .खुदा की हुकूमत कायम करने की जगह रोम के सम्राट के खिलाफ साज़िशें करने मे अपनी ताकत खर्च करते तो दुनिया का इतिहास दूसरी ही तरफ को मुड़ता ! एक पक्के प्रजातन्त्र वादी यानी पंचायती राज के हामी या जोशीले देशभक्त बनकर वह अपने ज़माने की हालत के ज़बरदस्त बहाव को रोक न सकते। लेकिन यह ऐलान करके कि राज काज एक छोटी चीज़ है उन्होने दुनिया के ऊपर इस सच्चाई को खोल दिया कि आदमी का अपना देश ही सब कुछ नहीं होता और आदमी पहले आदमी है और पीछे किसी एक कौम का और उसका आदमी होना उसकी इस खास कौमीयत तथा राष्ट्रीयता से ज्यादह ऊँची चीज़ है। ..कई बातो मे ईसा अराजकवादी या अनारकिस्ट थे। किसी राज या किसी हुकूमत का होना ही उनके लिये एक बुराई थी। वह दुनिया से धन और हुकूमत दोनो को मिटा देना चाहते थे, इन चीज़ो को .खुद हथियाना नही चाहते थे। उन्होने अपने चेलों से पेशीनगोई की कि तुम्हे तरह तरह से सताया जावेगा, पर कभी एक बार भी हथियार लेकर दुशमन का मुकाबला करने का खयाल उनके मन मे या उनकी ज़बान पर नही आया। अपने त्याग, अपनी कुरबानी और तकलीफो के ज़रिये इस तरह का बन जाना कि कोई हमे जीत ही न सके और अपने दिल की सफाइ से पाशविक यानी हैवानी ताक़त

को जीतना यही असल मे हज़रत ईसा की ख़ास चीज़ थी।"*

हज़रत ईसा का सब से प्रेम और अहिंसा का सन्देश उस ज़माने के देश भक्त यहूदियो की समझ मे न आता था। कुछ लोगो को यहां तक डर था कि अगर ईसा के चेले बढ़े तो रोम के हाकिमो की ताकत और मज़बूत हो जावेगी। यहूदी देशभक्तो की हज़रत ईसा की तरफ से बेपरवाही और पाइलट की उनसे थोड़ी बहुत हमदर्दी का यही खास सबब था।

सच यह है कि हज़रत ईसा यहूदी कौम मे पैदा होने पर भी किसी एक कौम के न थे, न किसी दूसरे देश के, और न किसी एक ज़माने के। दुनिया के और दूसरे महापुरुषों की तरह वह सारी दुनिया के और सारी मानव जाति, सारी इनसानी क़ौम के थे। आदमियो का अलग अलग टुकड़ियो और कौमो मे बॅटा होना उन्हे ऐसा ही अखरता था जैसा एक कुटुम्ब के लोगो का एक दूसरे से दुश्मनी रखना या एक जिस्म के अलग अलग टुकड़े कर दिया जाना, क़ुदरती तौर पर उस ख़ास ज़माने के देश भक्त यहूदियो को, या किसी भी देश और किसी ज़माने के तग ख़याल कौम परस्तो को हज़रत ईसा के उपदेश अच्छे न लग सकते थे। यही वजह है कि आज तक यूरोप के बड़े बड़े नेता हजरत ईसा के उसूलो और उपदेशो को अमल करने की चीज़ नही मानते। जिस मानव एकता, जिस इन्सानी वहदत को हजरत ईसा दुनिया मे कायम करना चाहते थे उससे अभी तक दुनिया कोसो दूर है।

ईंजील

हज़रत ईसा ने कभी कोई चीज़ नहीं लिखी। उनकी ज़िन्दगी और उनके उपदेशो का पता बहुत करके इंजील की पहली चार किताबों या पहले चार अध्यायो से चलता है, जो 'चार गॉस्पलो' के नाम से मशहूर हैं। गॉस्पल शब्द के माइने .खुशखबरी है। ये चारो किताबें जिन लेखको के नाम से मशहूर है वे चारो हज़रत ईसा के समय मे मौजूद थे। पर ये किताबें ईसा के सौ सवा सौ साल बाद पहले के कुछ फुटकर लेखो और हिदायतो के सहारे घटा बढ़ाकर लिखी गई, और उसके बाद भी ईसा की दूसरी सदी के आखीर तक इनमें हेर फेर होता रहा। इनमे से हर किताब मे ईसा के जन्म से लेकर आखीर तक का हाल लिखा है। चारो मे बहुत सा हिस्सा हज़रत ईसा के ऐसे ऐसे चमत्कारों या मौजज़ों का है जैसे पानी के घड़ों को छूकर शराब बना देना, सात रोटियो को हाथ लगा कर इतनी कर देना जिसमें पाँच हज़ार आदमी पेट भर खालें और फिर बारह टोकरे बच रहें, जन्म के अंधे की आँखों को थूक या मिट्टी लगाकर उसे सभाका कर देना, चार दिन के गड़े

हुए मुर्दे को निकालकर फिर से ज़िंदा कर देना या पानी पर खड़े होकर चलना। ये हज़रत ईसा के 'चमत्कार' बताए जाते है। और इंजील ही मे यह भी लिखा है कि हज़रत ईसा ने किसी तरह के भी चमत्कार कर सकने से साफ़ इनकार किया था* और इस तरह के चमत्कार दिखाने वालों को बुरा कहा था।† इनमे से बहुत से चमत्कार बीमारो को छूकर या देखकर अच्छा कर देने के है। अगर इनमे कोई सचाई है तो हो सकता है हज़रत ईसा के छू देने से या उनकी निगाह से ही बहुत सो को शान्ति मिलती हो, और लोगो की श्रद्धा बहुत से रोगो को भी अच्छा कर देती हो।

इन चार किताबो की इस तरह की बहुत सी बातें दुनिया के दूसरे धर्मों की किताबो और दूसरे महात्माओ की जीवनियो से इतनी मिलती जुलती है कि उन्ही से ली गई मालूम होती है। हज़रत ईसा से पहले की और उनके आस पास की सदियो मे इस तरह की बहुत सी हिन्दुस्तानी और चीनी कहानिया ख़ास कर श्री कृष्ण और महात्मा बुद्ध के जीवन की इस तरह की कहानियां तरह तरह की शक्लो मे, धार्मिक कथाओ, फ़र्ज़ी लोगो की जीवनियो या नाविलो की शक्लो मे, ईरान, इराक़ और पच्छिम एशिया की बहुत सी ज़बानो मे लिखी जा रही थी और ख़ूब फैल रही थी। इनमे से कुछ किताबे हाल मे ईरानी

* Mark VIII, 12 etc
† Math VIII, 22-23

और इबरानी जैसी ज़बानो से जर्मन मे और जर्मन से अगरेज़ी मे तरजुमा हुई है। ज़ाहिर है इजील के तय्यार करने वालो को इन कहानियो से बड़ी मदद मिली। इसकी एक मिसाल हज़रत ईसा के जन्म की कहानी है। वह यह है—मरियम की शादी हो चुकी थी। फिर भी बिना पति के ही उन्हे गर्भ रह गया। उनका पति इस शक पर उन्हे तलाक देने को तय्यार हो गया। एक फरिश्ते ने उसे आकर बताया कि तेरी औरत सच्ची है, उसे गर्भ ईश्वर से है। पति की तसल्ली हो गई। जब बालक पैदा हुआ तो आसमान और ज़मीन दोनो पर कई अनहोनी बाते हुई। उस देश का रोमी हाकिम हैरॉड बड़ा ज़ालिम था। पूरब से ज्योतिषियो और महात्माओ ने आकर उसे बताया कि इस देश मे एक ऐसा बालक पैदा हो गया है जो यहूदियो का मसीहा और बादशाह होगा और जो तुम्हारे राज को खत्म करेगा। इस पर हैरॉड ने दो साल के और दो साल से कम के सब बालको को पकड़ पकड़कर मरवा देना शुरू किया। फरिश्ते ने मरियम और उसके पति को आकर ख़बर दी और कहा कि तुम अपने बालक को लेकर मिस्र चले जाओ। वे दोनो चले गए। इस बीच हैरॉड ने लाखो बच्चे मरवा डाले। थोड़े दिनो मे हैरॉड भी मर गया। फरिश्ते ने फिर मरियम को आकर ख़बर दी कि हैरॉड मर गया अब तुम अपने देश लौट आओ। वे लौटे और इस बार उत्तर की तरफ एक दूसरे इलाके मे आकर ठहरे। इस कहानी को पढ़कर किसी भी हिन्दुस्तानी को कृष्ण और कस

का किस्सा याद आ जावेगा। कहा जाता है—हनुमान जी और कर्ण भी कुमारियो के ही पेट से पैदा हुए थे। ईश्वर से कुमारियो को गर्भ रह जाने की बात पुराने मिस्रवाले भी मानते थे।* इन किस्सो की वजह से ही यूरोप के वहुत से विद्वानो को इस बात का भी शक है कि ईसा नाम का कोई आदमी हुआ भी है या नही। लेकिन इस तरह के किस्से लगभग हर मज़हब के महापुरुषो के नाम के साथ उनके मरने के बाद जोडे जाते रहे हैं। यह भी ज़ाहिर है कि इन चारो किताबो के लिखने वालो या तयार करने वालो मे से शायद कोई भी अपने ज़माने की राजकाजी दलबन्दी और हठधर्मी से ऊपर नहीं उठ सका। इन किताबो मे जहां हज़रत ईसा के ऊँचे से ऊँचे ख़याल इधर उधर मोतियो की तरह विखरे हुए है, वहां वहुत सी वातें ऐसी भी है जो इसलिये नही लिखी गईं कि महात्मा ईसा ने वैसा किया हो या कहा हो, वल्कि इस लिये कि लिखने वाले का छोटा दिल यह सुनना चाहता था या मानना चाहता था कि जैसा वह लिख रहा है वैसा ही हुआ होगा। कहीं कही तो प्रेम और अहिंसा की मूर्ति हज़रत ईसा मे नफ़रत और हिंसा तक के भाव दिखा दिये गए हैं। कुदरती तौर पर एक दूसरे के ख़िलाफ़ वातें इन किताबो मे मौजूद है। कम या ज़्यादा यह वात दुनिया की वहुत सी पुरानी मज़हवी किताबो मे पाई जाती है। लेकिन इन सव वातो के होते हुए भी ये चारो किताबें

---

* Herodotus III, 28 etc.

दुनिया की ऊँची से ऊँची कितावो में से है। थोड़े से ध्यान और समझ के साथ देखने पर हज़रत ईसा के कामो और खयालो का इनसे खासा पता चल सकता है। वीच वीच मे आदमी के दिल की बड़ी से बड़ी गहराइयो से निकले हुए वह अनमोल जवाहरात मौजूद है जिनसे दुनिया की करोडो आत्माओं को शान्ति और रोशनी मिली है और जिनकी दमक हज़ारो साल वीत जाने पर भी फीकी नहीं पड़ी और न पड़ सकती है जब तक कि आदमी इस ज़मीन पर अपने असली और आखिरी मकसद को पूरा न कर ले। इञ्जील कहती है—

"जिस जिसको जो तालीम मिली है वह उसी पर क़ायम रहे। हरेक का दिल जो मानता है वह उसी पर जमा रहे। जिन्होंने तुम्हें धर्म का रास्ता बताया है उन्हे याद रखो···जितनी (बड़ी बड़ी) धार्मिक या मज़हबी किताबें दुनिया में हैं सब ईश्वर अल्लाह से हैं। सब मे आदमी फायदा उठा सकता है। तालीम ले सकता है, बुराई से बच सकता है, अपने को सुधार सकता है, अपने इखलाक़ सदाचार को ऊँचा ले जा सकता है। इनमें से किसी भी किताब से आदमी ईश्वर अल्लाह का बन सकता है और सब तरह के नेक काम करने के योग्य क़ाबिल बन सकता है।*

---

* इञ्जील, Timothy, 3 16-17.

सूली के बाद

हज़रत ईसा के जन्म से लेकर सूली पर चढ़ाए जाने तक का हाल इन चारो किताबो से थोड़ा सा मिलता है। पर उसके बाद क्या हुआ यह इनसे बिल्कुल पता नही चलता। इन किताबो मे यही लिखा है कि हजरत ईसा उसी दिन तीसरे पहर सूली पर मर गए। यही आम ईसाई मानते हैं। उनका कहना है कि ख़ुदा ने अपने इकलौते बेटे को इसीलिये भेजा था कि वह सब आदमियो के पापो का बोझ अपने सर पर लेकर सूली पर जान दे।

दूसरी तरफ इंजील ही को ध्यान से पढ़ने और आस पास की और हालत पर गौर करने से यह भी मालूम होता है कि शायद हज़रत ईसा सूली पर नही मरे। इतिहास के कई आज़ाद ख़याल विद्वानो की भी यही राय है। नीचे लिखी बातें इस राय को मज़बूत करती है।

शुक्र यानी जुमे के दिन सुबह नौ बजे के बाद हज़रत ईसा को सूली पर लटकाया गया। जिस ढङ्ग से लोगो को उन दिनो सूली दी जाती थी और हज़रत ईसा को दी गई वह यह था—

"फिर उन्हें नंगा करके सूली पर ठोक दिया गया।"

"सूली (क्रॉस) दो लकड़ियों की बनी होती थी, जो अंगरेज़ी हरफ 'T' (टी) की शक्ल में एक सीधी और एक आड़ी कसी होती थीं। सूली ज़्यादा ऊँची न होती थी। मुजरिम के पैर क़रीब क़रीब ज़मीन से लगे रहते थे। पहले सूली की दोनों लकड़ियों को ठीक तरह कस दिया जाता था। फिर मुजरिम के दोनों हाथों मे दो कीलें ठोंक कर उन्हे सूली पर कस दिया जाता था। कभी कभी पैरों में भी एक कील ठोंक दी जाती थी। कभी कभी पैर सिर्फ़ रस्सी से बांध दिये जाते थे। सूली की सीधी लकड़ी के क़रीब क़रीब बीच में मुजरिम की दोनों टांगों के बीच एक छोटी सी लकड़ी और लगा दी जाती थी जिससे मुजरिम का बदन उस पर टिक जावे। ऐसा न किया जाता तो बदन नीचे लटक पड़ता और दोनो हाथ चिर जाते। कभी कभी एक छोटी सी आड़ी लकड़ी पैरो के नीचे लगा दी जाती थी जिस पर पैर सम्हले रहें।"

"सूली की सब से बड़ी बेदरदी यह थी कि आदमी इस तकलीफ़ की हालत मे उन सितमभरी लकड़ियों पर तीन तीन, चार चार दिन बिना मरे लटका रहता था। हाथों से ख़ून का बहना बहुत जल्दी बन्द हो जाता था और जितना ख़ून बहता था उससे आदमी मरता न था। मौत बदन के इस बुरी तरह देर तक लटके और कसे रहने से होती थी, जिससे पहले तो बदन के अन्दर ख़ून के बहने में सख़्त रुकावट पड़ती थी, फिर सर में और दिल में ज़ोर का दर्द होने लगता था और आख़ीर में जाकर हाथ पैर ठण्डे और कड़े पड़ जाते थे। जिनको

बदन मजबूत होता था वे इस सब को भी सह जाते थे और दाना पानी न मिलने की वजह से और भी देर मे मरते थे।"

"सूली देने का यह ढङ्ग रोम वालों का ढङ्ग था। यहूदियों में दूसरी तरह का रिवाज था। वह था—इस तरह के मुजरिम को पत्थर मार मार कर मार डालना। हज़रत ईसा को सज़ा देना अगर यहूदियों ही के हाथ में होता तो उन्हें इसी तरह मारा जाता। यहूदियों की एक किताब 'तालमूद आफ जेरुसलम' में एक जगह यह भी लिखा है कि हज़रत ईसा को पत्थर मार मार कर मार डाला गया था। रोम वालों मे सूली देने का रिवाज सिर्फ ग़ुलामों या बहुत ही घटिया और ऐसे छोटे लोगों के लिये था जिन्हें वे तलवार से मारे जाने की इज्जत देना नहीं चाहते थे।"

"इस ज़ुल्म की ग़रज सिर्फ मार डालना नहीं थी बल्कि यह थी कि अपने जिन हाथों से मुजरिम ने कोई बुरा काम किया है उन पर कीलें ठोंक कर मुजरिम को लकडी के तख़्तों पर सड़ने दिया जाये।"*

हज़रत ईसा को इसी तरह मूली दी गई थी। शुरू सदियों की जितनी तसवीरें 'क्रास पर ईसा' की मिलती हैं सब इसी ढङ्ग की है। बाद की कुछ तसवीरों मे एक कील छाती पर भी ठुकी हुई दिखाई जाती है। यह बाद की सूझ है और ठीक नहीं। इंजील ही मे लिखा है कि सूली दिये जाने के कम से कम छै घण्टे बाद तक ईसा बातें करते रहे। छाती मे कील ठोंके जाने

* "Life of Jesus" by Renan, pp. 284 87, 290-291.

की सूरत मे यह नामुमकिन था। यह भी लिखा है कि छै घण्टे बाद वे क्रॉस से उतार लिये गए थे।

दो और आदमी, दोनों मामूली डाकू, ठीक उसी वक्त हज़रत ईसा के साथ साथ सूली पर चढ़ाए गए थे। एक दाहिने हाथ, दूसरा बांए हाथ। इन दोनों को भी इसी तरह सूली दी गई थी।

सूली पर ठुकते ही हज़रत ईसा ने अपने सताने वालो की तरफ इशारा करते हुए ख़ुदा से दुआ मांगी—

"ऐ पिता! इन्हें माफ कर दे। ये जो कुछ कर रहे हैं नासमझी से कर रहे हैं।"*

'पिता' के लिये हज़रत ईसा इबरानी मे "अब्बा!" कहते थे।

इसके बाद हज़रत ईसा ने आँख उठाकर देखा। उनकी माँ मरियम, जो खबर सुनकर आ गई थीं, सामने खड़ी थीं। उसी के पास ईसा का एक प्यारा चेला खड़ा था। ईसा ने माँ की तरफ देखा, फिर चेले की तरफ इशारा करके कहा—"माँ! अब यह तेरा बेटा है!" फिर चेले की तरफ देखकर कहा—"यह अब तेरी माँ है!" इसके बाद वह चेला मरियम को अपने साथ ले गया और माँ की तरह उसने उसकी सेवा की।

तीन घण्टे तक यानी बारह बजे दोपहर तक हज़रत ईसा बीच बीच मे अपने दोनो डाकू साथियो से बाते करते रहे।

* Luke 23-34.

कहते है उस दिन वारह वजे से तीन वजे तक सूरज ग्रहण था। अगले दिन सनीचर था। यहूदी रिवाज यह था कि जुमे को सूरज डूबने के वाद वदन सूली पर टंगे हुए न रह सकते थे। जुमे ही को यहूदियो ने पाइलट से कहा कि ईसा को सूली से उतार लिया जावे। ऐसे मौको पर सूली से उतारने से पहले मुजरिम की दोनो टांगें तोड़ दी जाती थी जिससे मुजरिम वच न जावे। यहूदियो के कहने पर तीनों मुजरिमो की टागें तोड़ने के लिये सिपाही भेजे गए। इंजील मे साफ लिखा है कि सिपाहियो ने मुजरिमो की टॉगें तोड़ दी पर हज़रत ईसा की नही तोड़ी।* यह भी लिखा है कि वे दोनो मुजरिम टाँगें तोड़ःदिये जाने पर भी सूली से उतारे जाने के वक्त ज़िन्दा थे। जगह जगह यह भी लिखा है कि पहरे के सिपाही और उनका कप्तान हज़रत ईसा के साथ अन्दर ही अन्दर हमदर्दी रखते थे। यहूदियो को उन सिपाहियों पर भरोसा न था और पाइलट और उसके सिपाही सव चाहते थे कि हो सके तो किसी तरह ईसा की जान वचा ली जावे।

उधर वड़े पुजारी कय्याफा की जिस कौन्सिल ने सव से पहले हजरत ईसा को मुजरिम ठहराया था उस कौन्सिल का एक मेम्वर यूसुफ रोमा गॉव का रहने वाला और वड़ा अमीर था। यूसुफ अन्दर ही अन्दर हज़रत ईसा का भक्त था और

---

* John XX, 34

उन्हें बेगुनाह मानता था*। वह उन्हें सज़ा दिये जाने के खिलाफ था। पर उस अकेले की राय से क्या हो सकता था। पाइलट उसका बड़ा दोस्त था। यूसुफ बराबर धुन मे लगा हुआ था। यूसुफ ने शुक्रवार को तीसरे पहर ही पाइलट से जाकर कहा कि ईसा मर चुके है, उनकी लाश मुझे दे दी जावे। पाइलट को भरोसा न हुआ कि ईसा इतनी जल्दी मर गए।† उसने पहरे के सिपाहियो को बुलाकर पूछा और उनके यह बयान दे देने पर कि ईसा मर चुके पाइलट ने ख़ुशी से हुकुम दे दिया कि ईसा की लाश फौरन् यूसुफ को दे दी जावे। यूसुफ ईसा के एक दूसरे भक्त निकोदेमस को लेकर मौके पर पहुँचा। सिपाही हम-दर्द थे ही। उन्होने उसी दिन शाम से पहले ईसा को यूसफ के हवाले कर दिया। यूसुफ और उसके साथी ने मरहम पट्टी करके ईसा को पास की पहाड़ी मे एक अच्छी जगह रात भर रखा। वहाँ दरवाज़े को एक भारी पत्थर से बन्द कर दिया। यह सब बड़ी जल्दी जल्दी किया गया।

जिस जगह ईसा को रखा गया उसे कुछ लोगो ने देख लिया। इनमे ईसा के भक्त और दुशमन दोनो थे। पहरेदारो के अफसर ने मशहूर कर दिया था कि ईसा मर गए है और उन्हे इसी जगह दफनाया जायगा। सनीचर को कुछ यहूदी पुजारियो ने पाइलट से जाकर कहा—"कम से कम तीन दिन

* John and Luke.

† Mark 15-44.

तक उस जगह का कडाई के साथ पहरा दिया जावे जहां ईसा को रखा गया है। ऐसा न हो कि ईसा के चेले आकर उसे उठा ले जावें।"* पाइलट ने उनकी तसल्ली के लिये पहरे के सिपाहियो की तादाद और बढ़ा दी।

जगह जगह लिखा है कि यहूदियो को इन सिपाहियो पर भरोसा न था। लेकिन उस दिन सनीचर यानी 'सब्बथ' का दिन था।

कोई पुराने खयाल का यहूदी जुमे के सूरज डूबने से लेकर सनीचर के सूरज डूबने तक न उस जगह के आस पास रह सकता था और न इस तरह की चीज़ की देख भाल कर सकता था। इसी मे यूसुफ़ और उसके साथियो को मौका मिल गया। जुमे ही की रात को या सनीचर को हजरत ईसा घायल लेकिन ज़िन्दा हालत मे किसी तरह चुपके से वहां से हटा लिये गये। दूर किसी छिपी हुई जगह रखकर यूसुफ ने उनकी मरहम पट्टी की, हाथों और पैरो के निशान न जा सके, पर हजरत ईसा अच्छे हो गए और मालूम होता है कुछ दिनो फिलिस्तीन मे छिपे हुए रहने के बाद इधर उधर निकल गए।

"ज़ाहिर है कि लोगों के दिलों में शुरू से इस बात का शक था कि ईसा सचमुच मरे हैं या नहीं। जिन लोगों ने कई बार लोगों को सूली दिये जाते हुए देखा था उन्हें पता था कि कुछ घण्टे सूली पर लटके रहने से मौत हरगिज नहीं हो सकती। वे इस तरह की कई

---

* Math. 27, 64.

मिसालें देते थे जिनमें लोगों को सूली पर चढ़ाकर जल्दी उतार लिया गया और अच्छी अच्छी दवाओं की मदद से उन्हें फिर होश आ गया और वे बच गए।* तीसरी सदी ईसवी में हज़रत ईसा को इस अनोखी मौत का सबब बताने के लिये मशहूर पादरी औरिजेन को यह लिखना पड़ा था कि उनकी इस अचानक मौत का सबब ईश्वर का चमत्कार था।† मार्क की गास्पल में भी इस तरह की अचानक मौत पर हैरानी ज़ाहिर की गई है।+

"बाद में जब ईसाइयों और यहूदियों में इस बात पर बहस चली कि ईसा मरे हैं या नहीं तो ईसाई लेखकों ने बढ़ा बढ़ाकर यह कहना शुरू किया कि यहूदियों ही ने इस बात को पक्का कर लेने के लिये कि ईसा सचमुच मर गए, ख़ुद सब चीज़ें हर तरह से ठीक कर ली थीं। यह बातें ख़ास कर तब उड़ाई गईं जब यहूदी साफ़ साफ़ और दावे के साथ यह कहते थे कि लोग ईसा को चुरा कर ले गए।"×

एक जगह यह भी लिखा है कि पहरे के सिपाहियों ने जाकर पाइलट से रिपोर्ट की कि—"ईसा के कुछ आदमी रात ही को आकर जब हमारी आँख लग गई थी ईसा को चुरा ले गए।"

इतवार को बहुत सबेरे गैलिली की कुछ औरतें सामान लेकर वहाँ पहुँचीं। वे समझती थीं कि ईसा मर चुके और यहीं

---

* Herodotus vii, 194 ; Jos, Vita. 75.

† In Matt Comment Series, 140.

+ Math. 44-45.

× "Life of Jesus" by Renan, pp. 292-293.

उनकी कब्र बना दी जावेगी। वे यह देखकर हैरान रह गईं कि ईसा वहाँ थे ही नहीं। किसी ने जो वहाँ मौजूद था उनसे कहा—"घबराओ मत! तुम ईसा नसरानी को ढूँढ़ रही हो जिसे सूली दी गई थी? वह इसी जगह था। वह अभी ज़िन्दा है। उसे तुम मुर्दों में क्यों ढूँढ़ रही हो। जाकर उसके चेलों और पीटर से कह दो ईसा तुम्हें गैलिली में मिलेगा।"*

जब उन्होंने ईसा के चेलों से जाकर यह बात कही उन्हें भरोसा न हुआ। पीटर ने जल्दी से जाकर देखा। उसे वहाँ सिवाय ज़खमों की पट्टियों के और कुछ न मिला। ईसा के बदन का क्या हुआ इसके बारे में तब ही से फ़िलिस्तीन भर में बड़ी बड़ी अजीब ख़बरें फैलती रहीं। यहूदियों या ईसाइयों के सारे इतिहास में हज़रत ईसा के कहीं पर भी दफ़न किये जाने या उनकी किसी तरह की भी आख़री रस्मों का कोई हाल नहीं मिलता। हज़रत ईसा के साथ के दोनों और मुजरिमों के दफ़न किये जाने का हाल मिलता है।

दूसरी तरफ़ इसके बाद ईसा के अपने ख़ास ख़ास चेलों से मिलने का बयान आता है। सूली के कुछ दिनों बाद सब से पहले वे मेरी नाम की एक औरत से मिले जिसने जाकर ईसा के कुछ चेलों से कहा—"आप लोग रंज न करें। ईसा अभी ज़िन्दा हैं। मैंने ख़ुद उन्हें देखा है।" पर उन लोगों को भरोसा न हुआ।†

---

* Luke 24-5, Mark—16, 6-7

† Mark 16, 10-11.

एक दूसरा बयान है कि हज़रत ईसा ने ख़ुद कहीं पर दो औरतो से कहा—

"डरो मत ! मै अभी तक अपने बाप (ख़ुदा) के पास नहीं गया। जाकर मेरे भाइयों से कह दो कि वे गैलिली जावे। मैं वहीं उनसे मिलूँगा।"*

अपने ग्यारह ख़ास ख़ास चेलों से हज़रत ईसा ने गैलिली मे एक ख़ास पहाड़ी पर मिलने को कहला भेजा था, † और वे लोग वहाँ पहुँचे। ज़ाहिर है यूसुफ और उसके साथी जिन्होंने पाइलट की इजाज़त से ईसा को एक ख़ास जगह ले जाकर रखा था और फिर किसी तरह उन्हे वहाँ से हटा लिया था इन ग्यारह को या कम से कम इन सब को अपना सारा भेद बताना ठीक न समझते थे। हज़रत ईसा वहाँ पहुँचे। उनसे मिले। उनमे से कुछ डर गए। कुछ को शक हुआ कि शायद ईसा मर चुके और यह उनका भूत है। उनका यह डर देखकर हज़रत ईसा ने उनसे कहा—"तुम इतना घबरा क्यो गए? तुम्हारे मन मे शक क्यों हो रहे हैं? मेरे हाथो को और मेरे पैरो को अच्छी तरह देखो। मै ही हूँ! मुझे छूकर देखो। भूत प्रेतों के इस तरह माँस और हड्डियाँ नही होतीं जिस तरह तुम मेरी देख रहे हो।" यह कहकर ईसा ने उन्हे अपने हाथ पैर

---

* Matth. 28, 10, John 20, 17.

† Matth. 28, 16.

दिखलाए। फिर ईसा ने उनके साथ बैठकर खाना खाया।*

इसके बाद कम से कम दो बार और ईसा अपने ख़ास ख़ास चेलो से मिले।

एक बार ईसा ने इसी तरह की एक मुलाकात मे अपने एक प्यारे चेलें यहूना के बेटे साइमन से तीन बार यह पूछ कर कि क्या तुम सचमुच मुझसे प्रेम करते हो कहा कि—

"जो तुम मुझसे प्रेम करते हो तो मेरे साथियों के खाने पीने का उसी तरह ख़याल रखना जिस तरह गड़रिया अपनी भेड़ो का रखता है।"

इस तरह की बातें इतनी ज्यादह और इतनी साफ है कि इनमे कुछ न कुछ ज़रूर सच्ची है। इन सब लोगो से हज़रत ईसा जिस तरह से मिले उससे भी पता चलता है कि वे उनसे छिप छिप कर ही मिले। सूली दिये जाने से लेकर तीन सौ साल बाद तक हज़रत ईसा की किसी कब्र का कहीं जिक्र नही मिलता!

ईसा अगर सूली पर मरे होते तो उनकी कब्र के बनाए जाने मे रोमी हाकिम, यहूदी पुजारी या जनता कोई रुकावट न डालता। कट्टर ईसाई मानते है कि ईसा पहले दिन ही सूली पर मरे, शाम को एक ख़ास जगह उनकी लाश रख दी गई और एक बड़े पत्थर से दरवाज़ा बन्द कर दिया गया, तीसरे दिन बहुत सवेरे वह फिर जी उठे और अपने बदन समेत आसमान

---

* Luke 24, 37, 43.

पर चले गए, इसके बाद जब जब वह और लोगो को दिखाई देते रहे तो आसमान से किसी तरह आकर लोगों को दर्शन देते थे और फिर आसमान लौट जाते थे, और आज तक वे उसी तरह आसमान पर मौजूद हैं।

इस तरह आसमान पर जाने के क़िस्से हर धर्म की किताबो मे है। इसलाम मे हज़रत मोहम्मद के मैराज़ का किस्सा है। हिन्दू धर्म मे राम, युधिष्ठिर जैसो के इस तरह के वहुत से किस्से है। हज़रत ईसा के इस तरह आसमान पर जाने के किस्से को सच न माना जावे तो फिर दूसरी वात यही हो सकती है और यह कहीं ज्यादह समझ मे आती है कि ईसा सूली पर नहीं मरे, उनके घाव अच्छे हो गए, और थोड़े दिनो तक इधर उधर रहने के वाद वे दूसरे देशो को चले गए। यह भी पता चलता है कि सूली दिये जाने के क़रीब छै हफ्ते बाद तक ईसा फिलिस्तीन ही मे रहे।

यरुसलम मे जो जगह आज ईसा की कब्र कहलाती है, जिसे वहाँ के मुसलमान वादशाहो से छीनने के लिये सन् १०९५ ई० से लेकर १२७१ ई० तक १७६ वर्ष के अन्दर यूरोप के कई कई देशो के ईसाई बादशाहों ने करोड़ों जाने गवांई और अरबों रुपया खोया, वह रोम के पहले ईसाई सम्राट कान्सटैण्टाइन आज़म (३२५ इसवी) के दिमाग़ की उपज है। इस मनगढ़न्त और जालसाज़ी का ख़ुलासा वयान हमने एक

दूसरी किताब मे दिया है। दुनिया के इतिहास जानने वालो और छानबीन करने वालो की अब पक्की और मानी हुई राय है कि वह ईसा की कब्र नहीं है और न हज़रत ईसा कभी भी वहां पर दफ़न किये गए।* अठाहरवीं और उन्नीसवी सदी मे उसके आस पास और भी कई जगहे 'ईसा की कब्र' कह कर बताई गई है। लेकिन इतिहासकार उन सब को उतना ही ग़लत मानते है।

दूसरी तरफ हाल की खोज से पता चला है कि बाबुल के साम्राज्य के दिनो मे यहूदियो के फिलिस्तीन से निकाले जाने के वक्त यहूदियो के दस कबीले अफ़ग़ानिस्तान और काशमीर मे आकर बस गए थे। काशमीर मे अभी तक बहुत से गॉव और कसबो के नाम वही है जो फिलिस्तीन के कस्बो और गांवो के। ये दस कबीले यहूदी किताबो मे "इसराईलियो के दस खोए क़बीले" कहलाते है। अफ़ग़ानिस्तान और काशमीर दोनो उन दिनो हिन्दुस्तान मे शामिल थे। दोनो मे बौद्ध धर्म फैला हुआ था। दोनों के रहने वाले मजहब के मामले मे अपनी उदारता या रवादारी के लिये मशहूर थे। अपने देशवासियो की तरफ से इस कड़ुवे सलूक के बाद हज़रत ईसा पूरब की तरफ चले

---

* Encyclopedia Brittanica, Vol XIII, article on Jeruselem, Vol XX p. 337, article on The Holy Sepulchre, the Dictionary of Universal Information, p. 686 and Renan's "Life of Jesus" etc. etc.

आए और उन्होंने अपना बाकी जीवन अफ़ग़ानिस्तान और काश्मीर मे घूम घूमकर यहां के परदेशी यहूदियो के अन्दर अपने उसूलो का प्रचार करने मे बिताया।

ईसा के सूली पर मरने की बात को शुरू से ही बहुत से बड़े बड़े विद्वान ग़लत बताते रहे हैं। तीसरी सदी ईसवी का इराक़ का मशहूर सन्त महात्मा मानी (Mani), जिसके नए धर्म को एशिया के बीच से लेकर यूरोप तक लाखों शायद करोड़ों आदमी एक हज़ार साल तक मानते रहे, ईसा को दुनिया की ऊँची से ऊँची आत्माओ मे गिनते हुए भी उनके सूली पर मरने के क़िस्से को ग़लत बताता है। यही राय ज्यादहतर अरब इतिहास लेखको की है। क़ुरान की भी एक आयत है—"हज़रत ईसा को न क़त्ल किया गया न सूली दी गई, सिर्फ लोगों को इस बारे मे धोखा हुआ।"

नवी सदी ईसवी की एक मशहूर अरबी किताब "इकमालुद्दीन" मे लिखा है कि नबी 'यूस आसफ़' ने पच्छिम की तरफ से चलकर पूरब के कई मुल्कों का सफर किया और वहां प्रचार किया। यूस आसफ के जो उपदेश इस किताब मे दिये हुए है वे एक एक कर ठीक वही है जो इंजील मे हज़रत ईसा के। एक दूसरे विद्वान यूसुफ याकूब (Joseph Jacobs) ने सन् १८९६ मे एक बहुत पुरानी किताब 'बरलाम और योसाफत' (Barlaam and Josaphat) को नए सिरे से ठीक करके छापा है। अपनी इस किताब को शुरू करते हुए कुछ पुराने

लेखो के सहारे उन्होने लिखा है कि 'यूस आसफ' काशमीर पहुँचकर मरा। इस किताव मे भी यूस आसफ के जो उपदेश दिए गए है वे एक एक कर इंजील के हज़रत ईसा के उपदेश हैं, वही वातें, वही मिसालें और वही किस्से। यूस और यासू दोनो ईसू या ईसा के अरबी रूप हैं और यूसुफ या आसफ हज़रत ईसा के वाप का नाम था।

काशमीर की राजधानी श्रीनगर की खानयार गली मे आज तक एक वहुत पुरानी कब्र है जिसे वहां के लोग 'नवी साहव की कब्र' या 'ईसा साहब की कब्र' या 'यूस आसफ नवी की कब्र' कहते है। काशमीर में यह पुरानी कहानी चली आती है कि यह कब्र एक नबी की है जो करीब दो हजार साल हुए पच्छिम से चलकर काशमीर आया था। करीब दो सौ साल की पुरानी एक इतिहास की किताव 'तारीखे आज़मी' मे लिखा है कि यह क़ब्र यूस आसफ नबी की है जो परदेश से आकर काशमीर में बसा था। मुसलमान इतिहास लेखको का यूस आसफ नबी मानना भी बताता है कि हज़रत ईसा और यूस आसफ़ दोनों एक ही थे। कोई सुबूत इसके खिलाफ़ नही मिलता।

ये सब वातें इतिहास के खयाल से विल्कुल पक्की नहीं कही जा सकती। पर इसमे शक नही कि हज़रत ईसा सूली पर नहीं मरे और जहाँ जहाँ भी अव तक हज़रत ईसा की कब्र वताई जाती है उनमे सव से ज्यादह ठीक अगर कोई मालूम

होती है तो वह श्रीनगर मे ईसा साहब की कब्र है।

हज़रत ईसा की ज़िन्दगी का इञ्जील से इतना कम पता चलता है कि इस बारे मे खोज अभी तक जारी है। इन खोजियो मे से एक रूसी विद्वान डा० नोतोविच का नाम खास तौर पर लिया जा सकता है। हज़रत ईसा की ज़िन्दगी की खोज मे उन्होने ४० साल तक यूरोप, मिस्र, तुरकी, अरब, इराक, ईरान, अफ़ग़ानिस्तान, कश्मीर, तिब्बत और हिन्दुस्तान की यात्रा की। उन्होने सैकड़ो पुराने मठो, पुराने मन्दिरो और पुरानी खानकाहो की लाइब्रेरियो मे बैठकर वहाँ की पुरानी किताबें पढ़ीं। अगादी के रेगिस्तान मे एक मठ के अन्दर उन्हे पहिली बार पता लगा कि हज़रत ईसा पहिली यरुसलम यात्रा के बाद यानी करीब १४ साल की उमर मे तिब्बत और हिन्दुस्तान चले आए थे। क़रीब १७ साल यहाँ रह कर वह अपने देश लौट गए थे। तिब्बत और हिन्दुस्तान के बीच मे हेमिस (Himis) नाम की जगह पर डाक्टर नोतोविच को एक पुरानी हाथ की लिखी किताब पाली भाषा की मिली जिसमे हज़रत ईसा के तिब्बत और हिन्दुस्तान आने का हाल तफसील के साथ लिखा हुआ था। यह किताब बाद में अंग्रेज़ी मे 'अननोन लाइफ आफ जीज़स' (Unknown Life of Jesus) के नाम से छपी। इस किताब के एक हिस्से का खुलासा यह है—

"ईसा जब १३ साल के हुए तो लोगों ने उनकी शादी की सलाहें करनी शुरू कीं। इस पर वह घर छोड़ कर चले आए। वह बुद्ध की

तरह धर्म के खोजी थे। कुछ सौदागरों के साथ वह सिन्ध आए और फिर वहाँ से हिन्दुस्तान। बहुत दिनों वह जैनियों के साथ रहे। फिर वह जगन्नाथ धाम भी गए। ६ साल तक वह राजगृह, बनारस और कपिलवस्तु में घूमते रहे। बौद्ध भिक्षुओं से उन्होंने बौद्ध किताबों को पढ़ा। फिर नैपाल और हिमालय होते हुए वह ईरान चले गए और फिर वहाँ से अपने देश में जाकर उन्होंने प्रेम और अहिंसा का प्रचार शुरू किया।"

विन्ध्या पहाड़ी के ऊपर नाथ नामावली नाम की एक और हाथ की लिखी किताब मिली जिसमे यह सब हाल देने के बाद लिखा है कि किस तरह हजरत ईसा को उनके देश मे सूली दी गई, उनके हाथो और पैरो मे कीलें ठोकी गई, किस तरह उनकी जान बची और फिर वह अपने एक गुरु चेतननाथ के साथ हिन्दुस्तान लौटे। यहाँ हिमालय मे उन्होने एक मठ कायम किया और ४६ बरस की उमर मे उसी मठ मे उनका शरीर छूटा।

यह सब बातें कहाँ तक ठीक है और कहाँ तक नही, कहना बहुत कठिन है। अन्दाज़ा यह ज़रूर होता है कि हज़रत ईसा की ज़िन्दगी का कुछ न कुछ हिस्सा हिन्दुस्तान और दूसरे देशो मे भी बीता। यह भी ज़ाहिर है कि उनके उपदेशो का अपने से पहिले के धर्मों ख़ास कर बौद्ध धर्म से गहरा सम्बन्ध था। इसमे भी शक नही कि हजरत ईसा किसी एक देश एक क़ौम के न थे, वह सारी मानव जाति, सारी इन्सानी कौम की एक बराबर मिलकियत थे।

निचोड़

हज़रत ईसा का सारा जीवन एशिया की उनसे पहले की धार्मिक और सांस्कृतिक, मज़हबी और कलचरल लहरों का कुदरती नतीजा था। वह उन महान आत्माओं में से थे जो किसी भी एक मुल्क या एक समाज या एक धर्म वालों के न होकर सारी दुनिया के लिए बरकत और सारी इन्सानी क़ौम की एक अनमोल बपौती हैं। इसके साथ ही यहूदी क़ौम के शुरू से उस वक़्त तक के इतिहास के साथ भी उनका गहरा नाता था। उस इतिहास की वह एक .कुदरती और सुन्दर उपज थे। उस कौमी बाग़ के वह सबसे सुन्दर फूल थे। अबराहाम से लेकर उस ज़माने तक जो बहुत से 'पैग़म्बर' यहूदियों में एक दूसरे के बाद पैदा हुए उनमे वह सब से आख़री और सब से महान थे। यहूदी क़ौम को एक नये पैग़म्बर की ज़रूरत थी। सारी क़ौम की आंखें उधर लगी हुई थीं। हज़रत ईसा उस .कौम की इसी ज़रूरत और इसी आशा के .कुदरती फल थे।

ईसा ने कोई नया धर्म नहीं चलाया। इन्सानी दुनिया और .खास कर यहूदी समाज के पुराने भण्डार से सच्चाई और सब

से काम की सच्चाई के दाने बीन कर उन्होने लोगो के सामने रख दिये। उन्होने हम सब के 'बाप' एक परमेश्वर का ऊँचे से ऊँचा खयाल यहूदियो के सामने पेश किया। अबराहाम की नसल से होने के झूठे घमण्ड को तोडकर उन्होने सब आदमियो को भाई और परमेश्वर की नज़रो मे सबको बराबर बताया। मज़हबी रीतिरिवाज, कर्म काण्ड और पूजा पाठ की जगह, जिनका उन दिनो यहूदियो मे ज़ोर था, उन्होने आदमी-आदमी के बीच प्रेम और ईमानदारी की जिन्दगी को सच्चा धर्म बताया। स्वार्थ यानी ख़ुदग़रज़ी, परिग्रह यानी लालच, द्वेष यानी दुश्मनी और हिंसा यानी किसी को ईज़ा पहुंचाने को आदमी के लिए बुरा और उसकी भलाई और तरक्की मे रुकावट बताकर उन्होंने ख़ुदी से ऊपर उठने (नि स्वार्थता), माल जमा न करने (अपरिग्रह), प्रेम और अहिंसा (अदम तशद्दुद) को ही आदमी और समाज दोनो की भलाई का सिर्फ एक रास्ता बताया। ख़ुद अपने जीवन मे इन्ही उसूलो पर चल कर उन्होने एक 'आदर्श मनुष्य' या उस तरह की ज़िन्दगी की मिसाल दुनिया के सामने रखी जिस पर सब को चलना चाहिये।

इस जगह हज़रत ईसा के अहिंसा के उसूल की थोड़ी सी छान बीन की जा सकती है। अहिंसा का उसूल हज़रत ईसा से हज़ारो साल पहले का है। हिन्दुस्तान और चीन के कई मज़हबो ने बहुत पहले से इस उसूल का प्रचार किया था कि

अहिंसा ही 'परम धर्म' यानी सब से बड़ा धर्म है। लेकिन शायद हज़रत ईसा से पहले किसी ने अहिंसा को इस तरह अमली रूप देने की कोशिश नहीं की थी जिस तरह हज़रत ईसा ने।

इस ज़माने मे महात्मा गान्धी ने भी अहिंसा को एक अमली रूप देने की बड़ी कोशिश की है। लेकिन महात्मा गान्धी की अहिसा और हज़रत ईसा की अहिंसा मे ख़ासा फ़रक है। महात्मा गान्धी की 'अहिंसा' बुराई का मुकाबला न करना नही सिखाती; महात्मा गान्धी बुराई का मुकाबला करना हर आदमी का फर्ज़ बताते हैं। वह सिर्फ़ यह कहते हैं कि बुराई का मुकाबला बुराई या हिंसा से नहीं बल्कि भलाई और अहिसा से किया जावे। इसके खिलाफ हज़रत ईसा का उसूल है कि बुराई का किसी तरह भी मुक़ाबला न करो। उसे खुले अपने रास्ते चलने दो। मिसाल के तौर पर अगर कोई हमे ज़बरदस्ती एक मील ले जाना चाहे तो महात्मा गान्धी का कहना है कि हमे उसकी इस बेजा इच्छा को पूरा नहीं करना चाहिये। हमे उसका मुक़ाबला करना चाहिये प्रेम मे भर कर अहिंसा के ढङ्ग से। हमे धरना देकर ज़मीन पर बैठ जाना चाहिये और बिना उसे चोट पहुंचाए उसे मौका देना चाहिये कि वह चाहे तो हमारे बदन के टुकड़े टुकड़े कर दे, पर हम किसी तरह भी उसकी इस ज़बरदस्ती मे उसकी मदद न करेंगे। इसके ख़िलाफ़ हज़रत ईसा का साफ़ हुकुम है कि अगर कोई हमे एक मील ज़बरदस्ती

ने उम्मेद की किरन को जगाए रखा, करोड़ो ही को मुसीबतों और लोभ लालच के होते हुए सच्चाई और ईमानदारी के रास्ते पर क़ायम रखा।

अपने को हज़रत ईसा के चेले कहने वाले जिन लोगो के हाथो में आज दुनिया के जीवन की बागडोर नज़र आती है उनमे से ज़्यादहतर हजरत ईसा के बताये हुए रास्ते से ठीक उलटे रास्ते पर चलते हुए दिखाई दे रहे हैं और उसी मे अपना भला समझते है। फिर भी कौन कह सकता है कि अपने अब तक के तजरुबो मे उन्हे किसी तरह की भी टिकाऊ कामयाबी मिली है, और आगे चलकर आदमी की भलाई का वही एक सच्चा रास्ता साबित न होगा, जिसे अब तक वे ख़याली या हवाई कहकर मज़ाक उड़ाते रहे है। इन्सानी कौम के जीवन मे दो हज़ार साल कुछ बहुत नहीं होते। यूरोपियन नेताओ के दूसरो के ख़ून में रंगे हुए हाथ, उनके थके हुए पैर और बेचैन दिल अब भी कभी कभी उनमे से कइयो को नाज़रथ के इस बढ़ई और उसके उपदेशो की याद दिलाते रहते हैं। यूरोप के सोचने समझने वाले लोगो को ज़ोरो के साथ ऐसा पता चल रहा है कि उनका अब तक का रास्ता शायद किसी के भी भले का रास्ता नही है। दुनिया के उन लोगो की बढ़ती हुई तादाद जो लड़ाई के ख़िलाफ है और हिन्दुस्तान की अहिंसा या अदम तशद्दुद की तहरीक दोनो कम्पास की सुई की तरह हमे आगे का रास्ता दिखा रही है। दोनो हज़ारो साल के तजरुबो और

महात्मा के बाद इन्सान के दिल की बड़ी से बड़ी गहराइयों से निकली हुई अमर जीवन यानी अबदी ज़िन्दगी की चमकती हुई किरने है। दोनो का निकास उसी जगह से है जिससे हज़रत ईसा और उनके सन्देश का। ये सब एक ही सच्चाई के अलग अलग रूप है, एक ही मतलब को ज़ाहिर करने वाले अलग अलग वाक्य या फ़िक़रे हैं।